श्री सद्गुरु चरितामृत—

श्री युगल सरकार के श्री चरणों में, भक्तवर श्री रामाजी महाराज

चौथारी उत्सवों का आयोजन करते कराते रहे, तत्सम्बन्धी कीर्तन एवं पदों का गान ही उनके आध्यत्मिक जीवन का मूल मन्त्र बना रहा। उनकी आन्तरिक अभिलाषा हुई कि हमारे चरित्रनायक भी इसी उपासना प्रणाली को अपनावें। इसी के प्रचार-प्रसार को अपने आध्यात्मिक जीवन का प्रधान अंग बनावें। उधर श्री अवध के सन्तों की भी चिन्ता का यह विषय बना हुआ था कि कैसे विधिवत् विवाह उत्सव का सुख सदा श्री अवध में मिलता रहे। इस मङ्गल कार्य के लिये कोई सुयोग्यपात्र सन्त मण्डली में दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। सन् १९१५ ई० के बाद भक्तवर श्री रामाजी के स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर गिरावट आने लगी। पूर्व से श्री रामाजी द्वारा विवाहोत्सव का प्रचार-प्रसार होते रहने के कारण विवाहोत्सव की माँग तो सर्वत्र बढ़ रही थी, पर इसकी पूर्ति करने में श्री भक्त जी अपने को असमर्थ पा रहे थे ऐसी परिस्थिति में उन्होंने मन-ही-मन निर्णय किया कि धीरे-धीरे हमारे चरित्रनायक को ही इस कार्य के सम्पादन की ओर आकृष्ट किया जाय। उपयुक्त अवसर की खोज में समय कट रहा था।

उधर हमारे चरित्रनायक को श्री अवधवास के संकल्प ने बाँध रखा था। उन्हें बाहर जाने की इच्छा नहीं होती थी। श्री अवध में बैठे रहने पर भी चारों ओर से रामनाम सुनने को ही मिलते हैं इस नाते कोई साधना नहीं करते हुए भी श्री अवधवास ही श्रेयस्कर है। दूसरी बात यह भी थी कि यहाँ रहने से सदा त्यागी, विरागी, अनुरागी, गुप्त एवं प्रगट दोनों प्रकार के सन्तों के दर्शन एवं सेवा का सुयोग मिलता रहेगा, जो बाहर जाने पर सम्भव नहीं। इनका ध्यान विशेष कर अखण्ड नामजप-अष्टायाम एवं नाम सप्ताह-के आयोजनों की ओर लगा रहता था। सन्त सेवा की अभिरुचि इतनी बढ़ती गयी कि हमारे चरित्रनायक खोज-खोज कर गुप्त प्रगट दोनों प्रकार के सन्तों की सेवा यथा सम्भव करने लग गये। इनका ध्यान विशेष कर उन सन्तों की ओर गया, जो श्री अवध में मधुकरी से गुजारा कर भजन करते थे, न उन्हें रहने के लिये अपना कोई स्थान था और न कोई नियमित आय थी। इन सन्तों के कोई शिष्य भी नहीं थे, पर उन्हें श्री अवध में ही रहकर भजन करने की उत्कट अभिलाषा थी। भक्तवर श्री रामजी महराज श्री अवध के बाहर जितने भी विवाह कलेवा उत्सव कराते थे, उनमें प्राप्त सभी सामानों को हमारे चरित्रनायक के द्वारा ऐसे सन्तों एवं कँगलों के बीच वितरण कराने लगे। जानाकर लोगों का कहना है कि हमारे चरित्रनायक रात्रि में गुप्त सन्तों की खोज में श्री अवध की गलियों में विचरा करते थे और ऐसे सन्तों के दर्शन सत्संग का सुख भी प्राप्त करते थे। गुप्त सन्त दुनियाँ की आँख बचाकर रात्रि में आया-जाया करते और हमारे चरित्रनायक को रहस्य सत्संग का सुख प्रदान करते थे। हमारे चरित्रनायक को पैसे से इतना विराग था कि श्री मन्दिर विहारी के लिये पूजा, भोग, चढ़ावा के अतिरिक्त आगन्तुकों से अपने लिये चरणपूजा तक स्वीकार नहीं करते थे। कुछ ही काल में ठठेरा मन्दिर तो आश्रयविहीन, भोजन एवं वस्त्र विहीन सन्तों एवं कँगलों का अपना घर-सा बन गया। एक ओर हमारे चरित्रनायक का यह दृढ़ संकल्प और ऐसा सुन्दर कार्यक्रम और दूसरी ओर भक्तवर श्री रामाजी का अपना हार्दिक अरमान-किसी प्रकार का सामंजस्य इन दोनों की प्रणाली में दिखायी नहीं पड़ रहा था। इसीलिये भक्तवर श्री रामाजी का गुप्त रूप से प्रयास हमारे चरित्रनायक को अपने मार्ग पर लाने के लिये जारी रहा और आगे चल कर श्री अवध के महान् सन्तों की कृपा सहयोग से इन्हें पूरी सफलता भी मिल गयी वह शुभ अवसर आगे चलकर सन १९२१ ई० में आया, जबकि हमारे चरित्रनायक ने युगल विवाह लीला, कलेवा एवं चौथारी पूजन उत्सव को अपनी उपासना का प्रधान अंग बनाना स्वीकार कर लिया। इसका विवरण सन १९२१ की घटनाओं में ही दिया जायगा।

श्री अवध में कुछ कृपा एवं महत्वसूचक घटनाएँ :—हमारे चरित्रनायक को ठठेरा मंदिर में

पुजारी पद पर कार्य करते लगभग ५–६ वर्ष बीत गए। इस अवधि में श्री अवध निवासी सन्त महात्माओं एवं प्रेमियों को हमारे चरित्रनायक का परिचय पर्ण रूप से प्राप्त हो गया। श्री अवध में होने वाले प्रधान उत्सवों में हमारे चरित्रनायक का बुलावा होने लगा और उनके सरस सुरीले भजन, कीर्तन पदगान से सन्त महात्मा तृप्त होने लगे। इस पाँच-छः साल की अवधि में ही हमारे चरित्रनायक के साथ कुछ कृपा सूचक एवं महत्वकारी घटनायें भी घटित हुईं, जिनमें से नमूने के बतौर तीन चार घटनाओं का उल्लेख निम्नांकित है—

(१) श्री ठठेरा मन्दिर के पास ही के एक मकान की छत पर 'नाम धुनिआँ बाबा' नामक एक साधु सदा नाम रटा करते थे। उनसे हमारे चरित्रनायक बहुत ही प्रभावित थे। उनसे, प्रसाद पाने की प्रार्थना की गई, तब उन्होंने उत्तर दिया कि पाँच अन्नों का मिला हुआ आटा बनाकर उसी का टिक्कर मुझे पवाओ तो मैं पा लूँगा। वैसा ही प्रबन्ध किया गया और हमारे चरित्रनायक द्वारा प्रतिदिन टिक्कर से सन्त सेवा होने लगी। एक दिन सामान की कमी हो गयी तो एक छोटा ही टिक्कर बनाकर, पात्र में ढँपकर संकोच एवं ग्लानि के साथ हमारे चरित्रनायक सन्त कों पवाने गये। पात्र खोलते ही जैसे टिक्कर निकाला गया, वह बहुत बड़ा हो गया, जिसे वहाँ एकत्रित कई संतों ने हर्ष के साथ पाया।

(२) एक साल-झूला के अवसर पर हमारे चरित्रनायक को ठाकुरजी के लिये वस्त्र सिलवाने एवं शृंगार के सामान तैयार करने में रात्रि जागरण करना पड़ा। व्यस्त कार्यक्रम रहने के कारण दिन में सोने का अवसर ही नहीं मिला। झूला के अवसर पर लगभग दो मन की मूर्ति को शृंगार के साथ झुलाना पड़ रहा था। धीरे-धीरे झूलाते-झूलाते हमारे चरित्रनायक को रात्रिजागरण के कारण थोड़े समय के बाद ही निद्रा आ गई और रस्सी हाथ से छूट गयी। संतों की एक टोली अचानक दर्शन के लिए मन्दिर में आ पड़ी तो उन लोगों ने शृंगारयुक्त भगवान् को बिना किसी के झुलाये स्वयं झूलते पाया। ज्योंही सन्तगण आपस में प्रशंसा भरे शब्दों का प्रयोग करने लगे कि 'धन्य हैं पुजारी और उनके ठाकुर।' त्योंही हमारे चरित्रनायक की नींद भंग हो गयी और आपने भी भगवान् को स्वयं झूलते पाया। इस घटना की चर्चा श्री अवध में उस समय फैल गयी और हमारे चरित्रनायक के भक्तिभाव की बड़ाई होने लगी।

(३) एक दिन हमारे चरित्रनायक सन्ध्याकाल में कथा श्रवण कर लौट रहे थे। उस समय अँधेरा हो चुका था। जाड़े का मौसम होने के कारण एक प्रेमी की दी हुई लोई ओढ़े हुए थे। जल्दी स्थान पहुँचने के विचार से एक अन्धियाली गली से चल पड़े। रास्ते में एक उचक्के ने इन्हें धमका कर लोई छीन लिया। बिना कुछ प्रतिवाद किये ये चुपचाप आगे बढ़े। दो चार सौ गज उसी गली में जाने के बाद पीछे से किसी ने आकर उसी लोई को उनके कन्धे पर रख दिया।

(४) एक दूसरे अवसर पर भी हमारे चरित्रनायक कथा श्रवण करने गये हुए थे। वहीं पर एक सन्त ने उनसे कहा कि मैं कल आपके पास 'सीतायण' पुस्तक लेने आऊँगा। हमारे चरित्रनायक ने कहा कि आप पुस्तक लेने तो आयेंगे ही, साथ ही अनुरोध है कि आप प्रसाद भी वहीं पाने की कृपा करें। दूसरे दिन प्रातःकाल हमारे चरित्रनायक ने अपनी धर्मपत्नी से सन्त के पवाने की बात कही तब उन्हें पता चला कि भंडार में भोजन सामग्री की बहुत कमी है। उधर दूकानदार का पहले से ही बकाया पड़ा था, अतएव, उधार सामान मिलना भी संभव प्रतीत नहीं हुआ। इसी उधेड़ बुन में हमारे चरित्रनायक पड़े हुए थे, ठीक उसी समय कुछ अभ्यागत सन्त भी आ पहुँचे और उन्हें भी प्रसाद पवाने की व्यवस्था करना आवश्यक हो गया। हमारे चरित्रनायक ने अपनी धर्मपत्नी से यह कहते हुए कि "कोठार तो श्री किशोरीजी का है, आगत सन्त भी उन्हीं के अतिथि हैं, अब, जैसे सेवा करवाना वे चाहें, सेवा करवायें" श्री

सरयू स्नान करने चले गये। ठीक उनके जाने के बाद ही दो बालकों ने भोजन की प्रचुर सामग्री लाकर श्री पुजारिन जी से रख लेने को कहा। बिना पुजारी जी के आये उन्होंने रखना स्वीकार नहीं किया। तब बालकों ने कहा कि श्री पुजारीजी ही तो अमुक आचारीजी के यहाँ अभी गये थे और उन्हीं के कहने से यह भोजन का सामान आचारी जी ने भेजा है। यह जानकर श्री पुजारिन जी ने सामान रख लिया और भोग सामग्री तैयार करने में लग गयीं। इधर जब हमारे चरित्रनायक लौटकर आये तब उन्होंने भंडार बनते देखा और आगत सन्तों को बैठे पाया। इस प्रकार सभी सन्तों को पवाने के बाद ही सारा वृत्तान्त श्री पुजारिन जी से हमारे चरित्रनायक जान पाये। शंका निवारण के लिये हमारे चरित्रनायक उक्तआचारी जी के यहाँ आये। उन्होंने साफ कहा कि मुझे इन सब बातों की कोई जानकारी नहीं है। साक्षात् श्रीसिया-स्वामिनी जू की ही कृपा से सन्त सेवा हो सकी, यह जानकर हमारे चरित्रनायक करुणा से भर गये और रो पड़े।

सन् १९२१ ई० के दिसम्बर मास में अखिल भारतीय श्री रूपकला हरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन का आयोजन पहले पहल श्री अवध में विक्टोरिया पार्क (अब तुलसी उद्यान) के स्थल पर किया गया। उस समय स्वयं श्री भगवान् प्रसाद जी 'रूपकला' भी वर्त्तमान थे। इस सम्मेलन में अभूतपूर्व समारोह हुआ, जिसमें सन्तों, भक्तों एवं कीर्तन मण्डलियों का मेला-सा लग गया। इस सम्मेलन का श्रीसीताराम विवाह एवं कलेवा उत्सव भी प्रधान अंग बन चुका था। इस सम्मेलन का प्रथम आयोजन प्रेमाभक्ति के अवतार श्रीरूपकला जी महाराज की प्रेरणा एवं श्री अवध के महान सन्तों की कृपा से सन् १९१२ के दिसम्बर में भागल पुर जिले के नौगछिया स्थान में हुआ था और तब से यह वार्षिक सम्मेलन का रूप धारण कर चुका था। श्री रूपकला जी तथा श्री अवध के प्रधान सन्तों की ही सम्मति से श्री सीताराम विवाह एवं कलेवा उत्सव कराने का भार भक्तवर श्री रामाजी महाराज को दिया गया था, जो प्रतिवर्ष सम्मेलन में जाकर युगल विवाहलीला एवं कलेवा का आयोजन करते कराते रहे। श्री अवध के उक्त सम्मेलन का महत्व इस वर्ष और भी विशेषतापूर्ण हुआ, क्योंकि इसी सम्मेलन के बाद ही हमारे चरित्र-नायक को श्री विवाह-कलेवा उत्सव का कार्यक्रम अपनाना पड़ा।

श्री अवध के सम्मेलन में भक्तवर श्री रामाजी महाराज अपने पिता जी के साथ आये और हमारे चरित्रनायक के साथ ही ठठेरा मन्दिर में ठहरे। अपने पिताजी को उन्होंने हमारे चरित्रनायक के जिम्मे कर दिया और अनुरोध किया कि अब वे श्री अवध वास आपही की देख-रेख में करेंगे। हमारे चरित्रनायक ने यह भार स्वीकार किया और तीन साल के बाद ही श्री अवध वास करते हुए भक्तवर श्री रामाजी के पिता का देहान्त सन् १९२४ में हो गया।

सम्मेलन के कार्यक्रमों का सम्पादन होने के बाद भक्तवर श्री रामाजी ने एक श्री रामार्चा पूजा श्री अनन्त पण्डित रामवल्लभशरण जी के कई महीनों बाद स्वास्थ्यलाभ के उपलक्ष में कराई। इस अवसर पर अवध के सभी गण्यमान्य सन्त आमन्त्रित हुए और श्री रामार्चापूजा की व्यवस्था में हमारे चरित्रनायक ने भी पूर्ण योगदान दिया। श्रीभक्तजी के अनुरोध पर स्वयं श्री पंडितजी महाराज ने श्रीरामार्चा कथा आगत सन्त महात्माओं को सुनाया। इस अवसर पर भक्तवर श्रीरामाजी का भी सरस कीर्तन गान, नृत्य एवं प्रवचन हुआ। अपने प्रवचन के क्रम में भक्तवर श्रीरामाजी ने कहा कि सन्त महात्माओं का अवतार तो काँच-कीच में फँसे हुए अधमजीवों के उद्धार के लिये ही होता है। सन्तों के रखे ही धरातल कायम है। यदि सभी सन्त श्री अवधवास का संकल्प लेकर एक स्थानीय बन जाँय तो सुदूर क्षेत्रों में पड़े हुए उन पामर जीवों का क्या होगा, जो जीवन के झमेलों में फँसकर कर्त्तव्याकर्त्तव्य को भूल चुके हैं। सन्त-

मंडली से यह बात छिपी नहीं है कि मेरा निजी स्वास्थ्य गिरता जा रहा है और मैं वांछित सेवा करने में असमर्थ होता जा रहा हूँ। अब तक तो आप श्री अवधवासी महात्माओं को ठठेरा मन्दिर के श्री पुजारी जी का परिचय मिल ही चुका है। इन पर श्री किशोरी जी का वरदहस्त है। साथ ही इन्हें कीर्तन एवं पदगान की क्षमता भी है। मैं बार-बार आप सन्तों से करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि श्री विवाह पंचमी, कलेवा, चोथारी उत्सव श्री अवध तथा सुदूर क्षेत्रों में आयोजित करने का भार श्री पुजारी जी महाराज (हमारे चरित्रनायक) को ही दिया जाय। सचमुच में तो यह नित्य विवाह है और इसका आनन्द बराबर ही लिया जा सकता है परन्तु मेरा अनुरोध है कि श्री पुजारी जी महाराज कम-से-कम प्रत्येक मास की दोनों पंचमी के अवसर पर श्री विवाह कलेवा का सुख सन्त महात्माओं एवं प्रेमी भक्तों को देते रहें। साथ ही इस लीला के रहस्य को घूमघूम कर ग्रामीण अंचलों में भी प्रकाशित करते रहें। यदि आप कृपालु सन्तों का आशीर्वाद हो जाय तो हमारा यह अरमान पूरा होकर ही रहेगा। श्री रामाजी के इस प्रस्ताव को सुनकर सभी सन्त गद्गद हो गये और सबों ने जोरदार शब्दों में आशीर्वादात्मक भाव से कहा 'यह विवाह पंचमी मुबारक हो, मुबारक हो, श्री पुजारी जी महाराज इस कार्यक्रम को अपनी उपासना का अंग अवश्य बनावें।' हमारे चरित्रनायक भी विह्वल हो उठे और उन्होंने भी कर जोर कर श्री भक्तजी सहित सभी सन्तों से इस पुनीत कार्य के योग्य बनने का आशीर्वाद माँगा। सभी उपस्थित सन्तों ने मुक्त कंठ से मुँह माँगा आशीर्वाद जयजयकार की ध्वनि के साथ उन्हें दिया। इस अवसर पर भक्तवर श्री रामाजी महाराज फूले नहीं समाते थे, क्योंकि उनके हार्दिक अरमान को करुणामयी श्री किशोरीजी ने पूरा कर श्री विवाह उपासना परम्परा के संचालन के लिये हमारे चरित्रनायक के रूप में उन्हें एक सुयोग्य उत्तराधिकारी प्रदान किया। इस वर्ष से श्री सीताराम जी के विवाहित रूप का ध्यान तथा उनके मंगलमय विवाह कलेवा चोथारी उत्सव आदि मंगल कार्यों का आयोजन हमारे चरित्रनायक के उपासना-जीवन का प्रधान अंग बन गया।

श्री विवहुती भवन के तत्वावधान में प्रथम विवाह उत्सव—जैसा कि पूर्व में संकेत किया जा चुका है, हमारे चरित्रनायक के श्री अवध आने के पूर्व से ही, भक्तवर श्री रामाजी महाराज द्वारा जितने भी श्री सीताराम विवाह एवं कलेवा उत्सव श्री अवध के बाहर आयोजित होते थे,उनमें प्राप्त वस्त्र-पात्र आदि श्री अवध में वितरण के लिये भेज दिये जाते थे। श्री अवध में श्री अनन्त भगवान प्रसाद जी 'रूपकला' एवं श्री बाबा गोमतीदास जी की सम्मति से श्री हनुमत निवास के पास श्री भगवत् निवास में एक कोठरी ली गयी थी। उसी में वितरण के लिये आये हुए सामान सुरक्षित रखे जाते थे। श्री अवध के ही एक सन्त श्री अयोध्या सरयू शरण जी महाराज (बबुआ जी) को ही सामानों की देख-रेख का भार दिया गया था। पर हमारे चरित्रनायक के आने के पूर्व ही उनके विरुद्ध यह शिकायत होने लगी कि वे सामनों की सुरक्षा समुचित रूप से नहीं कर पाते। अतएव, सर्वसम्मति से उन सामानों की सुरक्षा एवं वितरण का भार भी एक दो साल आगे से ही हमारे चरित्रनायक को दे दिया गया था। एक प्रकार से श्री विवहुती भवन का आरम्भ उसी स्थान से हुआ। अब श्री विवहुती भवन की स्थापना श्री ठठेरा मन्दिर में ही हो गयी और यहीं श्री विवाह मंडप का निर्माण कर लिया गया। श्री अवध के सन्तों के उपरोक्त निर्णय के बाद प्रथम प्रधान विवाह उत्सव का आयोजन श्री ठठेरा मन्दिर में ही १६२२ ई० के अगहण शुक्ल पंचमी को किया गया। इस प्रथम विवाह उत्सव में श्री अवध के सभी गण्यमान्य सन्त, भक्त एवं प्रेमियों ने सम्मिलित होकर हमारे चरित्रनायक का उत्साहवर्द्धन किया।

जन्मभूमि हसनपुरवा में प्रथम विवाह उत्सव—श्री अवध में प्रथम प्रधान विवाह

उत्सव का आयोजन अगहन मास में करने के बाद हमारे चरित्रनायक के श्री अवधवास के संकल्प में परिवर्तन हो गया। अब, उन्होंने निर्णय लिया कि श्री सीताराम विवाह कलेवा, एवं चौथारी उत्सव का आनन्द सर्वप्रथम अपनी जन्मभूमि हसनपुरवा को दिया जाय। तदनुसार, वे साज-समाज के साथ फाल्गुन मास में हसनपुरवा पधारे १९२३ ई० के फाल्गुन शुक्ल द्वितीया से आरम्भ कर एक सप्ताह तक सगुन, तिलक, मण्डपपूजन, बारात द्वारपूजा, शुभ विवाह कलेवा एवं चौथरी का विशाल आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों गाँवों के लोगों ने योगदान दिया। श्री अयोध्या तथा श्री जनकपुर की रचना दो स्थलों पर की गयी और बारात बाजे-गाजे और हाथी घोड़े, पालकी एवं रोशनी से सुसज्जित की गई। द्वारपूजा के समय रंग-बिरंग की आतिशबाजी का भी अभिनय हुआ। सारा कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद साधु भंडारा एवं कँगलों का भी जेवनार कराया गया। इस विवाह उत्सव का इतना प्रचार हुआ कि सीवान शहर से भी वकील मुख्तार, मजिस्ट्रेट, मुन्सिफ तथा साहुकारों की टोली आयी और इस नवीन ढंग के उत्सव से सभी बड़े प्रभावित हुए। बहुत आग्रह कर सीवान के लोगों ने भी हमारे चरित्रनायक से दूसरा श्री विवाहोत्सव सीवान शहर की धर्मसभा के प्रांगण में करवाया। इस विवाहोत्सव में भी हसनपुरवा विवाह उत्सव के अनुरूप ही सारी तैयारियाँ की गयीं और उल्लासमय वातावरण में विवाह एवं कलेवा उत्सव सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात् हमारे चरित्रनायक श्री अवध लौट गये।

सन् १९२३ ई० के ही जून मास के अन्त में हमारे चरित्रनायक पुनः अपनी जन्मभूमि हसनपुरवा आये और झूला उत्सव का भी सुख जन्मभूमि को देने का उन्होंने निर्णय किया। श्री सीताराम के प्रतीक दो रामायण जी का शृंगार किया गया और उन्हें सुसज्जित कर झूले पर स्थापित किया गया। प्रतिदिन सन्ध्या में झूला उत्सव एवं पद कीर्तन का कार्यक्रम कई दिनों तक चलता रहा। उपरोक्त अवसर पर हमारे चरित्रनायक ने उक्त विवाह एवं कलेवा उत्सव के कुछ बचे हुए सामान को अपने चाचा श्री रामसुन्दर पांडेय तथा उनके साथी श्री रामाशीष तिवारी द्वारा श्री अवध भेजवा दिया। उस साल झूले के अवसर पर भक्तवर श्री रामाजी महाराज श्री अवध में ही निवास कर रहे थे ज्यों ही श्री अवध पहुँचने पर हमारे चरित्रनायक के चाचा और श्री रामाशीष तिवारी जी श्री भक्त जी से मिलने गये त्यों ही उनने कहा कि श्री पुजारी जी महाराज को आप लोगों ने हसनपुरवा में क्यों छोड़ दिया? मुझे उनसे आवश्यक कार्य कराना है। उन्हें तार देकर बुलाना होगा। चाचाजी ने कहा कि आप तार लिखकर दें और मैं डाकखाने में छोड़ आऊँगा। इस पर श्री भगत जी ने हँसते हुए कहा कि उस तार में पैसे भी लगेंगे और समय भी, मैं जो तार कह रहा हूँ, वही तार आप कृपया दें।

श्री भगतजी ने बतलाया कि आप श्री बाबा रामजिआवनदास जी की बगल वाली ठाकुरबाड़ी में चले जाँय और कर जोड़कर श्री मन्दिर विहारी के सामने यह प्रार्थना कर दें कि श्री पुजारी जी महाराज को कल बुलावा दिया जाय। उन्होंने वैसा ही किया। इधर तार देने की रात में हमारे चरित्रनायक हसनपुरवा में झूला पर ठाकुर को शयन करा कर रात्रि विश्राम कर रहे थे। जैसा कि हमारे चरित्रनायक ने इस सम्बन्ध में स्वयं कहा था लगभग दो बजे रात्रि में उन्होंने देखा कि भक्तवर श्री रामाजी उनका पैर चाँप रहे हैं। वे अकचकाकर उठ पड़े। उनके उठते ही श्री भगतजी ने अनुरोध किया कि आप श्री अवध तुरन्त चलें और यहाँ झूला विसर्जन कर दें। हमारे चरित्रनायक ने वैसा ही किया और बिना किसी को कुछ कहे श्री भगत जी के साथ चल पड़े। थोड़ी दूर जाने के बाद श्री भक्त जी ने कहा कि आप तो पूज्य हैं आगे आप ही को रहना उचित है। मैं ही पीछे-पीछे चलूँगा। ससंकोच हमारे चरित्रनायक ने वैसा ही किया और उनके पीछे-पीछे श्री भगत जी चलने लगे। एकाध मील जाने के बाद जब हमारे चरित्र-

नायक ने पीछे की ओर देखा तो श्री भगत जी का कहीं पता नहीं था। उन्होंने सोचा कि प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? आये तो वे जरूर, पर कौतुक कर अन्तर्ध्यान हो गये। भगवान् और उनके भक्त के लिये यह सब सम्भव है। अतएव, हमारे चरित्रनायक बढ़ते ही गये और लगभग छः बजे भोर में सीवान स्टेशन आ पहुँचे। जाते ही श्री अवध के लिये ट्रेन मिली, पर झोले में मात्र दस आने ही पैसे थे। उस पैसे से हमारे चरित्रनायक चोरी चौरा स्टेशन ही तक का टिकट लिया। सौभाग्यवश रेल के डिब्बे में कलकत्ता से गोड्डा जाने वाले कुछ यात्री मिल गये, जिनसे कथा वार्ता होने लगी। ज्यों ही हमारे चरित्र-नायक चोरो चौरा स्टेशन पर उतरने लगे, यात्रियों ने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा कि आप को श्री अवध जाना है तो पैदल क्यों जाँयगे, कुछ हम लोगों की सेवा भी स्वीकार करें। ऐसा कहते हुए उन लोगों ने श्री अयोध्या जी श्री ऋणमोचन घाट तक के लिये टिकट की व्यवस्था कर दी। इसे भी सरकार की कृपा मानकर हमारे चरित्रनायक आगे बढ़े। श्री ऋणमोचन घाट उतर कर उन्होंने श्री सरयू स्नान किया और भीगे वस्त्र धारण किये हुए ही अपने स्थान की ओर प्रस्थान कर गये। रास्ते में किसी के पुकारने की आवाज सुनायी पड़ी। जब उन्होंने उधर ताका तो देखा कि भक्तवर श्री रामाजी महाराज ही श्री गौरी शङ्कर के मकान से पुकार रहे हैं। उनके पास जाकर हमारे चरित्रनायक ने हँसते हुए कहा कि आपने तो खूब छकाया। मुझे अँधियाले में बाहर लाकर स्वयं लुप्त हो गये। श्री भगतजी ने कहा कि आप अपने चाचाजी से पूछिये। उन्हीं से आपको तार दिलवाया गया है। लगता है ठाकुर जी ने ही आप से मजाक किया है। खैर, मैं तो आपका दर्शन पाकर निहाल हो गया हूँ। आपसे आवश्यक काम है। अब तो हमारे कार्यों का भार भी आप ही के ऊपर है।

जिस समय हमारे चरित्रनायक का आगमन हुआ और श्री भगत जी से बात-चीत हो रही थी उस समय भगवत कृपा से हमारे चरित्रनायक के चाचा जी भी मौजूद थे। वे तो इन लोगों की बात सुनकर भौंचक्का-सा हो गये। यह पहला अवसर था कि उन्होंने हमारे चरित्रनायक तथा भक्तवर श्री रामा जी के आन्तरिक महत्व और उन दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध को समझा। उस दिन ही उन्होंने श्री अवधवास का निर्णय लिया और उन्हें श्री सीताराम जी का मन्त्र दिलवाकर श्री रामोपासक वैष्णव बना दिया गया। शेष जीवन इनका श्री अवधवास में ही बीता।

श्री अवध अर्चा की तैयारी——दूसरे दिन श्री भगत जी ने हमारे चरित्रनायक को बतलाया कि आपको इसीलिये कष्ट दिया गया कि मैं आपको ही आचार्य बनाकर श्री अवध अर्चा करना चाहता हूँ। इसमें समय तो लगेगा, किन्तु यह पूजन कर लेना हम दोनों के हित में श्रेयस्कर होगा। श्री अवध अर्चा से उनका अभिप्राय केवल यहाँ के सन्तों या मन्दिर बिहारी की ही पूजा करना नहीं था। बल्कि, इस पूजा का सम्बन्ध श्री अवध में निवास करने वाले चर-अचर, थलचर जलचर तथा नभचर सबों के पूजन से था। विधि विधान पूछने पर श्री भगत जी ने कहा कि जैसे षोड़शोपचार पूजा मन्दिर बिहारी की होती है, उसी विधि से यहाँ के निवासी, पशु-पक्षी, गुल्म, लता आदि सबों की होगी। परन्तु आरम्भ कैसे हो इसकी जानकारी हम लोग श्री अनन्त बाबा गोमती दास जी से कर लें। श्री भगत जी की पूर्व से ही श्री बाबा गोमतीदास जी से गुरुवत् भावना थी।

उनसे ही परामर्श कर एक डेढ़ फूट वाली कांसे की थाली में त्रिजग योनि की आकृति बनाई गयी और सर्वप्रथम श्री हनुमत निवास में ही उस थाल में उसकी षोड़शोचार पूजा की गयी। यहीं से पूजा का आरम्भ हुआ और छः मास का समय लगाकर इस पूजन को सम्पन्न किया गया। कहा जाता है कि इस प्रकार की पूजा की बात श्री अवध में पहले न सुनी गयी थी और न देखी गयी थी। यह एक

अभूत पूर्व बात हमारे चरित्रनायक के जीवन में घटित हुई, जिसके प्रस्तावक एवं प्रेरक भक्तवर श्री रामा जी महाराज बने। पूजन सामग्री साथ लेकर केवल दोनों व्यक्तियों ने ही सारे अवध में घूम-घूम कर दूब-घास, गुल्म-लता, पेड़-पौधा, कीट-पतंग, हाथी-घोड़े, शूकर-कूकर, साँप-विच्छू, गोजर-बिरनी, गाय-बैल भैंस, कुत्ता-बिल्ली, गदहा-बन्दर कोयल-कौआ, मोर-पपीहा आदि सभी जीव जन्तुओं का षोड़शोपचार पूजन- आवाहन से विसर्जन तक-विधिवत् किया। इस पूजन की विशेषता बतलाते हुए हमारे चरित्रनायक ने बतलाया कि जिसका भी आवाहन किया जाता था, पूजा के समय एक-न-एक जीव सामने आ ही जाते थे और आरती ग्रहण करने के बाद ही हटते थे। यह पूजा अधिकांश रात्रि में ही एकान्त स्थलों में हुआ करती थी जहाँ मानव समुदाय का जमघट कम हो। पीत वस्त्रों को शरीर पर धारण किये हुये जब बन्दर, गदहे, कुत्ते बिल्ली आदि दिखायी पड़ते थे, तब लोगों के सामने एक अजीब दृश्य उपस्थित हो जाया करता था। अनभिज्ञ लोग तो हँसते-हँसते लोट पड़ते कि यह कैसा पागलपन है ? आज के तर्क विज्ञान के युग के लोगों के दिमाग में तो यह अँटने की बात भी नहीं है। इस घटना को तो अशंका भरी दृष्टी से ही देखी जा सकती है। पर है यह कठोर सत्य। यह स्वाभाविक भी है कि सन्त महात्माओं के आन्तरिक रहस्य को दृष्टि प्राप्त लोग ही समझ पायेगें। "खग जाने खग ही की भाषा।" श्री राम चरितमानस से भी यही बात समर्थित होती है" अवध प्रभाव जान तब प्रानी, जब उर बसहिं राम धनु पानी।" श्री अवध के निवासी श्री रामरूप ही हैं—तहाँ प्रमाण पाद्मेश्लोक एक श्री रामचन्द्र वाक्यं विभीषण सुग्रीवादि प्रति—"अयोध्या च परम ब्रह्म, सरयू सुगनः पुमान्, तन्निवासी जगन्नाथ सत्यमेतद् ब्रवीमिते॥"

अखिल भारतीय श्री रूपकला हरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन का मुजफ्फरपुर में आयोजन

संकीर्तन सम्मेलन के मुजफ्फरपुर अधिवेशन में भाग लेने के लिये हमारे चरित्रनायक भी आमन्त्रित हुए। तद्नुसार, उन्होंने श्री अवध में अगहण शुक्ल पञ्चमी को प्रधान विवाह कलेवा उत्सव सम्पन्न करने के बाद दिसम्बर मास के तीसरे सप्ताह में मुजफ्फरपुर के लिये प्रस्थान किया। भक्तवर श्री रामाजी महाराज भी वहाँ पधारे। सम्मेलन में विवाह एवं कलेवा उत्सव का प्रसंग रसमय ढंग से सम्पादित हुआ। उसके बाद हमारे चरित्रनायक श्री भगतजी से श्री अवध के लिये प्रस्थान करने के अवसर पर आवश्यक बातचीत करने गये। उसी समय श्री भगत जी के प्रिय पात्र छपरे के श्री रामनारायण बाबू भी आ पहुँचे और दण्ड़वत कर बैठ गये। श्री भगत जी द्वारा हमारे चरित्रनायक का परिचय पाकर श्री रामनारायण बाबू उनके प्रति श्रद्धा से भर गये। ज्यों ही हमारे चरित्रनायक प्रस्थान के लिये उठ खड़े हुए, श्रीरामनारायण बाबू ने उन्हें दण्डवत कर चरणों पर दो रुपये रख दिये। उन रुपयों को वहीं छोड़ हमारे चरित्रनायक आगे बढ़ गये। इस दृश्य को देखकर श्री भगत जी कुछ अकचका से गये और उनने हमारे चरित्रनायक को थोड़े समय के लिये वापस आने का इशारा किया। वापस आने पर श्री भगत जी ने हमारे चरित्रनायक से कहा कि आपने श्री रामनारायण बाबू को अपना नहीं समझा। आप तो पूजनीय विप्र होने के नाते भगवान् के शरीर ही हैं और श्री अवध वास करते हुए आप पूजनीय सन्त भी हैं। आपकी नित्य प्रति सारी क्रियायें भगवत-भागवत सेवा एवं सन्त सेवा के लिये ही होती हैं और जो जीव संसार के चकाचौंध में पड़ा हुआ है वह तो काँच-कीच में ही फँसा रहता है। उसे पता नहीं कि उसके निवास की दुनियाँ से सुन्दर सुखद कोई और भी दुनियाँ है। रुपया तो उसके लिये प्राणों से भी प्यारा है। इसी धन के उपार्जन के लिये आये दिन सांसारिक जीव छल कपट, चोरी-डकैती आदि घृणित कार्य कर बैठता है। एकमात्र भगवत कृपा से जब कभी वह जीव संत-भगवन्त के सम्मुख आ पाता है, तब उसके पाप

संस्कार थोड़े समय के लिये शिथिल पड़ जाते हैं और सुन्दर भावों का उदय हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में ही उसके हृदय में सन्त भगवन्त की सेवा का भाव उदय होता है। आज आपके सम्मुख आने से उसी सेवा भाव का उदय श्री रामनारायण बाबू के हृदय में हुआ, उन्होंने अपने प्यारे धन के एक अंश को आपके पावन चरणों पर न्योछावर किया, पर वह भी ठुकरा दिया गया। ऐसा होने से तो श्री रामनारायण बाबू वहीं रह गये जहाँ वे थे। अब यह पैसा वापस जाकर उन्हीं कृत्यों में लगेगा, जिसके चलते जीव भवकूप में पड़ा हुआ है। आपकी कृपा से यदि यह पैसा श्री अवध जाता तो सन्त भगवन्त की सेवा में लगता और दाता को सुन्दर कल्याणकारी फल मिलता, वह धीरे-धीरे सन्त भगवन्त की ओर बढ़ते जाता और अन्त तक उसका उद्धार भी सम्भव हो जाता। यह ठीक है कि निजी सुख के लिये किसी से चरण पूजा स्वीकार न किया जाय, पर जीव के कल्याण हेतु परमार्थ भाव से दान लेना शास्त्र सम्मत है।

यह बातचीत हो ही रही थी कि ठीक इसी अवसर पर एक दूसरे प्रेमी भी आ गये, जिन्हें भक्तवर श्रीरामा जी ने पूर्व में श्री सीताराम मन्त्र लेने का परामर्श दे रखा था और उन्हें यह भी कहा था कि मुजफ्फरपुर सम्मेलन में अनेकानेक सन्त पधारेंगे। इसी परामर्श के अनुसार वे सज्जन सम्मेलन में आये थे। उन्होंने श्री भगत जी से पूछा अब मैं शिक्षा ग्रहण किससे करूँ ? इस पर श्री भगत जी ने संकेत किया कि यदि श्री पुजारी जी महाराज (हमारे चरित्रनायक) कृपा कर दें तो इनसे बढ़िया गुरुदेव आपको इस समय नहीं मिलेंगे।

हमारे चरित्रनायक द्वारा चरण-पूजा लेने तथा शिष्य करने सम्बन्धी भक्तवर श्री रामा जी के प्रस्ताव की स्वीकृति—उधर तो चरण-पूजा लेने के औचित्य पर बातें हो ही रहीं थी कि यह दूसरा प्रश्न शिष्य करने सम्बन्धी भी उठ खड़ा हुआ। इन दोनों प्रश्नों के सम्बन्ध में हमारे चरित्रनायक ने अपने मन में संकल्प ले रखा था कि न वे चरण-पूजा लेंगे और न शिष्य करेंगे। शिष्य करने सम्बन्धी प्रश्न पर हमारे चरित्रनायक ने कुछ संकोच प्रकट किया। उन्होंने कहा कि शिष्य उद्धार का गुरुतर भार लेकर शायद मैं अपने को विमल न रख सकूँगा। इस पर भक्तवर श्री रामाजी ने आग्रहपूर्वक निवेदन किया कि यदि ऐसा होता तो कोई भी विप्र या संत शिष्य करना स्वीकार नहीं करते। सच्ची बात यह है कि अनादि काल से ही माया ग्रस्त जीवों का उद्धार भगवान् ने सन्त एवं भक्तों के माध्यम से ही कराया है। इसी श्रेणी के लोगों ने ही गुरुपद को सुशोभित किया है। ब्रह्माण्डनायक ने सृष्टि संचालन तथा पालन-पोषण के लिये अनेकानेक विभाग खोल रखे हैं, उन्हीं विभागों में एक अहैतुकी दया विभाग भी है, जिसकी प्रधान स्वयं श्री किशोरी जी हैं। इस पद के सम्बन्ध से वे ही सद्गुरु कही जाती हैं। इन्हीं से प्रेरित प्रकाशित सारी उपासनायें चलती हैं। एक ही सद्गुरु द्वारा सबों का संचालन होता है। यहीं से नररूप में स्थूल शरीरधारी गुरु दिये जाते हैं और जिस जीव की जैसी भावना होती है, उसी के अनुकूल गुरु मिल जाते हैं। यथा, शिव उपासकों के लिये संन्यासी गुरु, शक्ति उपासकों के लिये शक्ति उपासक गुरु, आदि-आदि। ये सभी शरीरधारी गुरु सद्गुरु के ही अवतार हैं और उन्हीं से प्रेरित प्रकाशित होते रहते हैं। गुरुदेव का काम तो अहैतुकी कृपा के द्वारा संसार में भटकते हुए जीवों को सद्गुरु को अर्पण कर देना है, जो कोटि जन्म के अघ को नाश कर देते हैं और विमल बनाकर जीव को उपास्यदेव से मिला देते हैं। खतरा वहीं होता है जहाँ व्यवसायिक भाव से चेला किया जाता है और चेलाओं से धनोपार्जन करना ही गुरु का अभीष्ट हो जाता है। जो स्वयं गुरु प्राप्त हैं और जिन्हें गुरुदेव का आदेश मिल चुका है वे ही शिष्य करने के अधिकारी हो सकते हैं।

इस प्रकार भक्तवर श्री रामाजी द्वारा प्रस्तुत तथ्यों से प्रभावित होकर हमारे चरित्रनायक ने चरण-पूजा लेना तथा शिष्य करना स्वीकार किया। श्री रामनारायण बाबू के दो रुपये उन्होंने रख लिये और आगत प्रेमी को श्री सीताराम मन्त्र देकर हमारे चरित्रनायक श्री अवध के लिये प्रस्थान कर गये।

श्री जनकपुर-मिथिला में विवाह कलेवा उत्सव का आयोजन—मुजफ्फरपुर सम्मेलन के अवसर पर ही हमारे चरित्रनायक एवं भक्तवर श्री रामाजी को श्री जनकपुर के प्रधान जानकी मन्दिर के पुजारी का आमन्त्रण फाल्गुन में विवाह कलेवा उत्सव का सुख जनकपुर वासियों को देने के लिये मिला था। उसी के अनुसार हमारे चरित्रनायक भक्तवर श्री रामाजी के साथ पूरा साज समाज लिये फाल्गुन शुक्ल पक्ष में श्री जनकपुर धाम गये। जनकपुर में ही विवाह कलेवा उत्सव फाल्गुन पूर्णिमा एवं चैत्र परिवा को किया गया, जिसमें श्री जनकपुर की परिक्रमा के अवसर पर आये हुए अनेकानेक सन्त भक्त एवं कीर्तन मण्डलियों ने भाग लिया। कीर्तनाचार्य श्री कृष्णो बाबू रामनगर (बनारस) के भक्त कवि, श्री हरिजन जी एवं श्री पुरुषोत्तम जी, श्री मोहलाना जी और सीतामढ़ी के श्री अयोध्या बाबू मोख्तार के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इस विवाह की विशेषता यह रही कि श्री जनकपुर वासियों के सच्चे प्रेम प्रदर्शन के फलस्वरूप अग्निहोत्र के अवसर पर लहर की लपटें ऊपर की ओर उठीं और उन लहरों के बीच में, एकत्रित सन्तों एवं प्रेमियों ने एक लाल मूर्ति का दर्शन किया, जिसके मुख में दाँत तक दिखायी पड़े। विस्मय भरे दर्शकों को यह बतलाया गया कि यह विवाह लीला तो त्रेता युग की लीला है ही। इसी जनकपुर में त्रेता युग में सभी देवताओं ने प्रगट होकर विवाह में पूजा ली थी, यथा, "सुर प्रगट पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुख पावहीं॥ आज भी सच्चा अनुराग होने से अग्निदेव ने प्रगट होकर पूजा स्वीकार की है। धन्य हैं श्री जनकपुर धाम और यहाँ के निवासी सन्त महात्मा जिनके सच्चे अनुराग के फलस्वरूप आज सबों को त्रेता सुख भी सुलभ हुआ। इस विवाह उत्सव में सीतामढ़ी के प्रसिद्ध सन्त श्री जंगली बाबा के आठ लीला स्वरूपों का शृंगार, चार भाई चार बहन के प्रतीक रूप में, हुआ। अतुलनीय सुख की वर्षा हुई। विवाह उत्सव के बाद श्री जनकपुर रसिक अली निवास स्थान में श्री रङ्गपञ्चमी को होली मनाई गयी और उसके बाद सारा साज समाज श्री नवाही मठ होते हुए वहाँ से वापस हो गया।

उक्त मिथिला विवाह में कलेवा उत्सव के अवसर पर भक्तवर श्री रामाजी महाराज जी ने अपना श्रद्धा पूर्ण उद्‌गार हमारे चरित्रनायक के प्रति प्रगट करते हुए कहा है कि "श्री पुजारी जी महाराज मैंने आज ही आपको सच्चे रूप में देखा है। आप तो परम धन्य हैं। अब, मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि नौशे बबुआ (दुलहा सरकार) ने आपको सभी भाँति से अपना बना रखा है। आपसे उपार्जित सभी कुछ नौशे बबुआ का ही है और आप तो एकमात्र नौशे बबुआ ही रहे।" कहा जाता है कि ऐसा उद्‌गार प्रेम प्रगट करने के समय श्री भगत जी बहुत ही भावापन्न अवस्था में हो गये थे। उनके नेत्रों से प्रेमाश्रु का आना बन्द नहीं हो रहा था और रुँधे हुए गले से ही वे उपरोक्त शब्दों का उच्चारण कर सके। हमारे चरित्रनायक भी नेत्रों से प्रेम बिन्दु टपकाते हुए श्री भगत जी के प्रति बोल उठे कि आप जो कुछ कह रहे हैं वह तो आप सरीखे महान सन्तों की ही कृपा का फल है। आप कृपा बनाये रखें।

जन्म भूमि हसनपुरवा में दूसरे विवाह उत्सव का आयोजन—हसनपुरवा में प्रथम विवाह उत्सव के बाद आस पास के ग्रामों में ऐसा वातावरण उत्पन्न हो गया कि विवाह उत्सव के प्रेमियों की संख्या बढ़ चली। हमारे चरित्रनायक के पास उस क्षेत्र से कई प्रेमी भक्त श्री अवध आये और कई

भक्तों ने पत्र द्वारा उनसे अनुरोध किया कि एक दूसरे विवाह कलेवा उत्सव का सुख ग्राम भक्तों को यथा शीघ्र दिया जाय। इस उद्देश्य से कतिपय लोग १९२४ ई० से अगहण मास में प्रधान विवाह उत्सव के अवसर पर श्री अवध भी आये और आगामी फाल्गुन मास में दूसरा विवाह उत्सव हसनपुरवा में करने के लिये हमारे चरित्रनायक को वचन बद्ध कर लिया। इसी के अनुसार हमारे चरित्रनायक पूरे साज समाज के साथ सन् १९२५ ई० के फाल्गुन मास प्रथम सप्ताह में हसनपुरवा आ पधारे।

इस बार यहाँ के विवाह उत्सव की विशेषता यह रही कि विवाह उत्सव के पूर्व अखण्ड नाम नवाह का आयोजन हुआ। फलस्वरूप नाम रटने और नाम सुनने से लोगों का हृदय धुलकर सरस, विमल एवं विवाह कलेवा उत्सव के सुख के उपभोग करने योग्य बन गया। इस बार लीला स्वरूप के रूप में पाँच सात साल की अवस्था वाले विप्र बालकों को श्री सीताराम का प्रतीक बनाया गया था और उन्हें ही दुलहिन-दुलहा के शृंगार से सुसज्जित कर सिंहासन पर स्थापित किया गया और विवाह एवं कलेवा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। बड़े धूम धाम से बारात का नगर भ्रमण हुआ और हजारों लोगों ने श्री सीतारामजी के साक्षात् दर्शन सुख जैसा आनन्द का अनुभव किया। इस बार जब हमारे चरित्रनायक द्वारा सरस ढङ्ग से विवाह कलेवा का प्रसङ्ग चलाया जा रहा था, तो दर्शकों में से बहुत के नेत्रों से श्रीसीतारामजी के दर्शन मात्र से गंगा यमुना की धारा सी बह चली। यों तो तथा कथित विद्वानों की दृष्टि में विप्र बालकों को भगवान् बनाकर विवाह कलेवा की लीला "एक गुड़िया पुतली" के खेल जैसा मालूम पड़ता था, परन्तु दूसरी ओर उपस्थित लोगों में से जिनके नेत्रों से आँसू के बूँद टपक गये वे सब भी कम आश्चर्य चकित नहीं थे कि दुलहिन-दुलहा के शृंगार से युक्त विप्र बालकों के दर्शन में ऐसा कौन-सा जादू पैदा हो गया जिसके प्रभाव से दर्शक अश्रु पूर्ण हो गये। यह तो आज भी प्रश्न विराम बनकर इस युग के विद्वानों और ज्ञानियों के सामने पूर्ववत वर्तमान है। इसका उत्तर उनसे पास कहाँ? त्रेता युग में श्री जनकपुर वासियों के सामने धनुष यज्ञ के अवसर पर ऐसा ही भाव का उदय हुआ था। वहाँ पर श्री रामभद्र जू तो एक ही थे, पर दर्शकों में कोई उन्हें शत्रु रूप में देख रहे थे, किसी ने उन्हें विराट रूप में देखा। और कतिपय लोग उन्हें अपने सगे-सम्बन्धी-सा देखने लगे और कितने तो उनके दर्शन मात्र से आँसू बहाते रहे। प्रश्न है कि एक ही रामभद्र जू विविध भाँति से क्यों दर्शकों को दिखलायी पड़े? उसी स्थल पर उत्तर दिया गया "जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी" इसी चौपाई से आज भी इस प्रकार की शंकाओं का उत्तर मिल जाता है। ऐसे समारोहों में जो जैसा भाव लेकर आता है, लीला स्वरूप के रूप में भगवान् के दर्शन की प्रतिक्रिया भी दर्शकों पर भावानुकूल ही होती है।

भगवान् तो सर्वव्यापक हैं, इसमें दो राय नहीं। पर उस सर्वव्यापक सत्ता को जिस रूप में ध्यान में लाया जाय, सच्चा अनुराग दिया जाय, उसकी छटा उसी रूप में छिटक पड़ती है। इसी भावना के आधार पर ही लीला स्वरूपों में सन्त महात्मा निष्ठा एवं अनुराग युक्त भाव रखकर अपने इष्टदेव के दिव्य दर्शन की झाँकी का सुख प्राप्त करते हैं। इस बार तो हमारे चरित्रनायक ने नव दिनों तक नाम रटन कराकर लोगों के हृदय को कुछ अंश तक विमल बना दिया था। नाम रटन से दिव्य झाँकी के सुख उपभोग के लायक मन एवं हृदय बन जाने से दर्शन एवं ग्रहण शक्ति भी बढ़ गयी और दिव्य दर्शन की भूख का जागरण भी हो गया। इन्हीं कारणों से हमारे चरित्रनायक ने श्री नाम नवाह को विवाह के पूर्व स्थान दिया और आगे जीवन में भी कार्यक्रम ऐसा ही चलता रहा।

हसनपुरवा में भक्तवर श्री रामाजी का शुभ आगमन—उपरोक्त समारोह के ठीक एक दिन बाद भक्तवर श्री रामाजी सरेयाँ से पालकी पर चढ़कर हसनपुरवा ग्राम होते हुए कहीं अन्यत्र जा रहे थे। रास्ते

से पालकी वहन करने वाले कहारों ने श्री भगत जी से हसनपुरवा में हुए नाम नवाह एवं विवाह कलेवा उत्सव का विवरण बतलाया था। अतएव, हमारे चरित्रनायक से मिलने के लिये हसनपुरवा पहुँचते ही ग्राम के बाहर एक वट वृक्ष के नीचे श्री भगत जी ने पालकी रखवायी क्योंकि विप्रों की बस्ती में वे सवारी पर नहीं जाते थे। किसी प्रकार श्री भगत जी के आने की सूचना हमारे चरित्रनायक को मिली और वे शीघ्र ही उनसे मिलने के लिये वहीं आ गये। उन्हें देखते ही भगत जी ने फटकारते हुए कहा—"आपने मुझसे बड़ी बेईमानी की।" इन कटु शब्दों को सुनकर हमारे चरित्रनायक तो अवाक्-सा हो गये, पर साहस कर धीमी आवाज से उन्होंने पूछा—"मुझसे कौन-सा अपराध हो गया है?" श्री भगतजी ने मुसकाते हुए बतलाया कि आपने हसनपुरवा में नाम नवाह और विवाह कलेवा उत्सव का आनन्द बर्षाया मैं भी इन दिनों घर ही पर था। यदि आप कृपा कर बुला लेते तो मैं उस आनन्द से वञ्चित नहीं होता। इस पर हमारे चरित्रनायक ने क्षमा याचना करते हुए खेद प्रगट किया। श्री भगत जी बातचीत के बाद गन्तव्य स्थान जाने को तैयार हो गये, पर चलते समय उन्होंने हमारे चरित्रनायक से अनुरोध किया कि आप कृपा कर खेंड़ाय पधारें, क्योंकि आपसे कुछ घरेलू बातें करनी हैं।

हमारे चरित्रनायक द्वारा खेंड़ाय आगमन—श्री भगतजी का संकेत पाकर दूसरे ही दिन हमारे चरित्रनायक उनकी जन्म भूमि खेंड़ाय पहुँच गये। यहाँ आने के पूर्व से ही हमारे चरित्रनायक को यह पता हो गया था कि श्री भगतजी बराबर अर्थ संकट में रहते हैं। आज भोजन की व्यवस्था हुई तो कल क्या होगा, इसका पता तक नहीं रहता था। दमा रोग ने तो उन्हें जीवित रहने पर भी मृतक-सा बना रखा था। उनके एक ही बेटा श्री जगन्नाथ लाल (बब्बन जी) थे, जो उचित अर्थ करी विद्या प्राप्त नहीं करने के कारण घर गृहस्थी ही सम्भालते थे। वे भी उन दिनों जहाँ तहाँ हरिकीर्तन आयोजन के नाम पर हफ्तों गायब रह रहे थे। परिवार के एक दूसरे सदस्य श्री बृज बाबू पटना में नौकरी करते थे, पर परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में वे भी असमर्थ थे, क्योंकि घर में सब मिलाकर पाँच औरतें और छः सात बच्चे थे, उपरोक्त परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए हमारे चरित्रनायक अपने साथ विवाह कलेवा से बचे हुए सामान चावल, दाल, गुड़, घी, आटा, मसाला आदि लिवा गये थे। आते ही उन्होंने देखा कि बाहर के बरामदे की दीवाल में श्री भगत जी एक चूल्हा बना रहे थे। हमारे चरित्रनायक ने भी उसमें योगदान किया और तत्काल चूल्हा तैयार कर दिया गया। सारे परिवार का भोजन भी बना लिया गया। गत रात्रि परिवार की स्त्रियों ने आपस में झगड़ा कर रखा था जिस कारण से भोजन नहीं बन पाया था। श्री भगतजी सहित सारा परिवार रात्रि से ही उपवास था। हमारे चरित्रनायक ने भोग लगाकर श्री भगत जी सहित सारे परिवार को समझा बुझाकर प्रसाद पवाया और परस्पर विरोध का अन्त करा दिया। विधि का विधान ही गजब है। ऐसे अनुपम सन्त को इस प्रकार के प्रतिकूल परिवार का साथ दिया गया, जैसे खिले हुए गुलाब के फूल में काँटे।

जिस दिन हमारे चरित्रनायक श्री भगतजी के घर पधारे थे, उसके दूसरे ही दिन होली का त्योहार था। किसी कारणवश पूर्व से ही श्री भगत जी के परिवार में होली नहीं मनाई जाती थी। हमारे चरित्र-नायक ने समझा बुझाकर सबों को होली उत्सव मानने के लिये राजी किया। बड़े धूमधाम से होली उत्सव मनाया गया, पदगान हुए और रंग अबीर का छिड़काव भी हुआ। सारे ग्राम के लोगों ने सानन्द भाग लिया। सुबह होते ही हमारे चरित्रनायक विदा होकर अपनी जन्म भूमि हसनपुरवा के लिये प्रस्थान कर गये। वहाँ के पहुँचने के पूर्व वे बेलवाँ ग्राम गये और वहीं पर उन्होंने दो सौ रुपये की व्यवस्था की। अपने एक विश्वासनीय शिष्य श्री मथुरा पांडेय को उन्होंने आदेश दिया कि वे इन रुपयों के साथ सीवान जायँ

और वहाँ से चावल, गेहूँ, दाल, आटा, गुड़, घी, मसाला आदि सामान क्रय कर बैलगाड़ी से श्री भगत जी के घर सीधा पहुँचा दें और बिना गाड़ी भाड़ा माँगे तुरन्त वापस चले आवें। यह सब हमारे चरित्रनायक ने इसलिये किया कि श्री भगतजी को यह जानने का अवसर न मिल पाये कि सामान किसने कहाँ से भेजा है। श्री मथुरा पांडेय ने उनके भाव के अनुसार ही सारा सामान श्री भगतजी के दरवाजे पर उतार कर द्रुतगति से ग्राम के बाहर निकल पड़े। श्री भगत जी जो ग्राम में अन्यत्र घूम रहे थे गाड़ी को देखकर घर की ओर चल पड़े, पर तब तक तो श्री मथुरा पांडेय जी कुछ दूर निकल गये थे। श्री भगतजी ने उन्हें प्रसाद पवाने और पूछ-ताछ करने के लिये पुकार करवायी पर श्री पांडेय जी पुकार को अनसुनी कर वापस नहीं आये। इधर ग्रामवासियों में यह एक चर्चा का विषय बन गया कि श्री भगतजी के घर भोजन सामान पहुँचाने वाले कौन थे? श्री भगतजी से पूछने पर उन्होंने अश्रु भरे नेत्रों से कहा कि आगन्तुक से मेरा पूर्व परिचय नहीं है। मेरा तो सिवा नीशे बबुआ के अपना और कोई नहीं है। वे ही अनेकानेक रूप धारण कर सपरिवार मेरा भरण-पोषण करते आ रहे हैं। इस घटना से हमारे चरित्रनायक ने भक्तवर श्री रामाजी का ही महत्व प्रगट किया। ग्रामवासियों ने यह जानकर अपने को धन्य मनाया कि उनके बीच श्री भगत जी सरीखे महान सन्त निवास करते हुए उन लोगों को भी कृतार्थ कर रहे हैं।

हमारे चरित्रनायक ने चलते समय श्री भगतजी से न इस बात की चर्चा की और न यह सेवा उनके द्वारा हुई है इस बात को प्रगट ही होने दिया। उनके दैनिक जीवन में उनकी यह धारणा निश्चित थी कि करने कराने वाले नीशे बबुआ हैं, चाहे वे जिससे भी जो करावें, उनके जीवन का दूसरा सिद्धान्त यह भी था कि अपने माध्यम से की गई सेवाओं की जिक्र कहीं भी नहीं होनी चाहिये। वे कहा करते थे "नेकी कर दरिया में डाल, अपनी बदी का रखो ख्याल"। भाव यह था कि यदि कोई उपकार या पुण्य भगवत कृपा से अपने द्वारा हो जाय तो उसकी जिक्र कराकर अपने यश भागी न बनना यही। 'नेकी को दरिया में डालना' हुआ और अपने दुर्गुणों की स्मृति बनाये रखना यही अपनी बदी को याद रखना है। अपने दुर्गुणों की स्मृति बनी रहने से ही जीवन में उत्तरोत्तर सुधार की संभावना होती है और अपने द्वारा किये गये सुकर्मों की स्मृति से एक प्रकार का गौरव बना रहता है और अहम् भाव की वृद्धि होती रहती है। फलस्वरूप मान-प्रतिष्ठा की वासना हृदय में घर कर लेती है। वे विनय पत्रिका की इस पंक्ति को बार-बार दुहराया करते थे 'भगति ज्ञान वैराग सकल साधन यहि लागि उपाई। कोउ भल कहउ देउ कछु, कोउ अस वासना न उरते जाई॥' 'मान प्रतिष्ठा सूकरि विष्ठा'। उनकी अटल धारणा थी कि यह वासना 'हमें कोई कुछ दे और हमें भला कहे' बड़े-बड़े साधक सिद्ध को अन्त-अन्त तक जान नहीं छोड़ती है। इसीलिये, अपने द्वारा की गई सेवाओं को बराबर गुप्त रखा और लगता है कि इन सन्त वृत्तियों को अपने जीवन लीला के आरम्भ काल से ही उन्होंने अपने आचरण में चरितार्थ किया। वे श्री भगतजी के घर परिवार की सेवा गुप्त रूप से जीवन पर्यन्त हर प्रकार से करते कराते रहे।

श्री भगत जी द्वारा पूर्व निश्चित कार्यक्रमों का हमारे चरित्रनायक द्वारा अनुपालन—सन् १९२६ ई० से सन् १९२८ ई० के ज्येष्ठ मास तक की अवधि में भक्तवर श्री रामाजी महाराज के लगातार अस्वस्थ्य रहने के कारण उनके द्वारा पूर्व निश्चित कार्यक्रमों का अनुपालन हमारे चरित्रनायक के ही सिर पर आ पड़ा। सन् १९२६ ई० के फाल्गुन मास में एक बार श्री सरयूतट जाते हुए हमारे चरित्रनायक को यमुनाबाई नाम की एक भक्त महिला का दर्शन हुआ। उस माई ने बतलाया कि इधर श्री भगतजी अस्वस्थ्य रह रहे हैं। उनके द्वारा छपरा जिले के ही रोना ग्राम में एक विवाह उत्सव इसी मास में सम्पन्न होने के लिये पूर्व निश्चित है। पर, उनकी अस्वस्थ्यता इस कार्य में बाधक हो रही है। लोग चिन्तित हो रहे हैं।

यह सुनते ही हमारे चरित्रनायक विवाह कार्यक्रम के कुछ दिन पूर्व ही छपरा के लिये प्रस्थान कर गये। स्टेशन से उतर कर वे श्री भगत जी के एक प्रेमी श्री खेलावन लाल के घर पर अनायास चले गये और भगवत कृपा से उन्हीं के घर पर भक्तवर श्री रामाजी का दर्शन भी हो गया। इन्हें देखकर श्री भगत जी बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा कि स्वयं श्री किशोरीजी ने आपको मेरे हितार्थ भेजा है।

हमारे चरित्रनायक का श्री रामाजी के साथ महात्मा गाँधी से मिलन——उक्त अवसर पर पलेजा घाट में महात्मा गाँधी के आगमन के उपलक्ष में एक जन सभा का आयोजन डा० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा किया गया था। श्री राजेन्द्र बाबू के बड़े भाई श्री महेन्द्र प्रसाद ने भक्तवर श्री रामाजी के साथ हमारे चरित्रनायक को भी महात्मा गाँधी से मिलने के लिये पलेजा घाट चलने का आग्रह किया और वे दोनों ही श्री महेन्द्र प्रसाद के साथ पलेजा घाट गये। जन सभा के पूर्व श्री भगतजी और हमारे चरित्रनायक को श्री राजेन्द्र बाबू ने थोड़े समय के लिये परिचय देते हुए महात्मा गाँधी से मिलवाया। श्री भगतजी के व्यवहार आचरण से गाँधीजी बड़े मुग्ध हुए, पर उनके स्वास्थ्य को देखकर उन्होंने चिन्ता प्रगट की। उन्होंने इस सम्बन्ध में हमारे चरित्रनायक और महेन्द्र बाबू की ओर इशारा करते हुए कहा कि इनके स्वास्थ्य लाभ तक आप लोग इनके कार्य क्रमों का अनुपालन इनके परामर्श के अनुसार कर करा दें। हमारे चरित्रनायक ने इस परामर्श को सहर्ष स्वीकार किया। पर, श्री भगत जी ने कहा कि जिन कार्यक्रमों में मैंने स्वयं उपस्थित रहने का वचन दिया है उसमें मुझे भी उपस्थित रहने की अनुमति चाहिये। इसे महात्मा गाँधी ने अपनी सहमति प्रदान की। इस मिलन के बाद महात्मा गाँधी तो जन सभा में चले गये, पर हमारे चरित्रनायक के साथ श्री भगत जी पुनः वापस छपरा चले गये। एक दो दिन छपरा ठहरने के बाद श्री भगत जी के साथ हमारे चरित्रनायक विवाह कलेवा उत्सव कराने के लिये रौना ग्राम आ गये।

रौना ग्राम में श्री विवाह कलेवर उत्सव का आयोजन——हमारे चरित्रनायक द्वारा विधिवत् विवाह मंडप की शृंगार सजावट की गयी और बड़े ही धूमधाम के साथ हजारों ग्रामीणों की उपस्थिति में शुभ विवाह उत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें जब तब भक्तवर श्री रामाजी महाराज ने भी पदगान एवं नृत्य से सबों को विमुग्ध कर दिया। आरती का समय आने पर श्री भगतजी ने हमारे चरित्रनायक से अनुरोध किया कि 'मैं अब बहुत शिथिल हो गया हूँ। अब से आरती भी आप ले लें'। कृपा कर माथे पर रख कर आरती का सुख हम सबों को प्रदान करें। हमारे चरित्रनायक ने वैसा ही किया। उस दिन से ही विवाह एवं कलेवा उत्सव में हमारे चरित्रनायक नुपुर बाँधकर माथे पर आरती रख मनोहर आरती के पद गाते हुए नृत्य करते रहे।

रौना के उक्त विवाह में कलेवा के दिन आरती होने के पश्चात् श्री भगत जी ने हमारे चरित्र-नायक से अनुरोध किया कि आज बड़ा ही शुभ मुहूर्त है कृपा कर अपनी श्री मुख वाणी से हम सबों को कृतार्थ करें। इस पर हमारे चरित्रनायक ने संकोचपूर्वक यह कहा कि मेरा तो कोई अध्ययन नहीं है और न मुझे प्रवचन करने का अभ्यास है। पर आपके अनुरोध को ठुकराना भी अनुचित होगा। इस नाते मैं श्री अनन्त रामचरणदास जी द्वारा रचित 'नामशतक' की कुछ दोहावलियों के आधार पर नाम महिमा पर ही कुछ कहने की अनुमति चाहता हूँ। श्री अवध के सन्त महात्माओं द्वारा मैंने जो अर्थ सीखा समझा है उसी के अनुसार आपके सम्मुख कुछ कहने का प्रयास करूँगा। श्री भगत जी ने सहर्ष उन्हें बोलने के लिये पुनः अनुरोध किया। इस सम्बन्ध में हमारे चरित्रनायक कहा करते थे कि उनके प्रवचन करने का यह

पहला अवसर था। बोलने के समय उन्हें ऐसी अद्भुत प्रेरणा एवं प्रकाश मिला कि श्रोतागण प्रवचन सुन कर मुग्ध हो गये और श्रोताओं के नेत्रों से अश्रुजल भी टपक पड़े। सबों ने मुक्त कंठ से हमारे चरित्र नायक का जय जयकार किया।

हमारे चरित्रनायक का भक्तवर श्री रामाजी महाराज के साथ अन्तिम रहस्य सतसंग—
रौना के उक्त विवाह एवं कलेवा उत्सव के बाद हमारे चरित्रनायक ने एक रात भक्तवर श्री रामाजी के साथ एकान्त वास किया। उसी अवसर पर यह पता चल गया कि भगत जो जल्दी ही स्थूल शरीर का त्याग करेंगे। इसलिये इस अन्तिम सत्संग का महत्व और भी बढ़ गया। भक्तवर श्री रामाजी ने अपने वर्षों के अनुभव को हमारे चरित्रनायक के सम्मुख प्रस्तुत करना आवश्यक समझा, क्योंकि अनुभव सिद्ध सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करने में सुगमता होती है और कम खतरा होता है। अंतिम संत्संग में निर्णीत बातों की चर्चा हमारे चरित्रनायक की ही मुखवाणी से समय-समय पर सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके उपदेशामृत को यथामति ही उल्लेखित किया जा रहा है। भक्त प्रेमी त्रुटियों की ओर ध्यान न देते हुए क्षमा करेंगे।

भक्ति मार्ग में प्रवेश कर भक्ति साधना में अग्रसर होने के लिये कितने अध्ययन की आवश्यकता है? इस दिशा में चलने के लिये सुगम उपाय क्या है? इसके उत्तर में हमारे चरित्रनायक ने कहा था कि हम तो भक्तवर श्री रामाजी की विचार धारा से पूर्ण सहमत रहे हैं। उन्हीं की बात इस सम्बन्ध में कहने से समुचित प्रकाश मिलेगा। अध्ययन के सम्बन्ध में बतलाया गया कि सार बातों को जानने के लिये ही अनेकानेक ग्रन्थों का अवलोकन आवश्यक होता है। पर, भक्ति रहस्य की बातें तो बिना अधिक ग्रन्थावलोकन के भी महान सन्तों के सतसंग से प्राप्त हो सकती है। सत्संग द्वारा सन्तों की अनुभव सिद्ध बातों को श्रवण कर यदि हृदयंगम किया जाय और अपने आचरण में उतारने का प्रयास किया जाय तो शास्त्र पुराण वेदों के अध्ययन में अधिक समय लगाना आवश्क नहीं रह जायेगा। पूर्वकाल के जो उच्च कोटि के भक्तों का इतिहास है, उनके सम्बन्ध में विचार करने से पता चलता है कि महान भक्तों की टोली में पढ़े-लिखे की संख्या बहु ही कम है। सत्संग एवं सन्त कृपा से वे भक्ति मार्ग पर चलकर उच्चकोटि के भक्त जैसा आज भी पूजित होते हैं। यदि शास्त्र पुराण वेदों के अध्ययन में समय लगाया भी जाय तो बिना अनुभव सिद्ध सन्तों एवं भक्तों से अर्थ सत्संग किये कोरे अध्ययन के बल पर कुछ भी निर्णय करना कठिन हो जाता है। इस सम्बन्ध में महाभारत वन पर्व के इस श्लोक की भी चर्चा की गई—

> श्रुतयोर्विभिना स्मृतयो विभिन्ना नेको मुनिर्यस्य वचःप्रमाणम्।
> धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम् महाजनो येन गतः स पन्थाः॥

अतएव अनेकानेक ग्रन्थों को पढ़ने से अधिक सुगम है कि सन्तों एवं भक्तों की जीवनी माला पढ़ी जाय। उनमें से जिनका मार्ग हृदय को जंच जाय उन्हीं के पद चिन्हों का अनुसरण करना जीवन का एकमात्र ध्येय बना लेना चाहिये। इसी की ओर गोस्वामी सन्त तुलसीदास जी ने भी संकेत किया है—

> "मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई। तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई॥
> अति अपार जे सरित वर, जौं नृप सेतु कराहिँ।
> चढ़ि पिपीलकउ परम लघु, बिनु श्रम पारहिँ जाहिँ॥

बिना श्रम के पार जाने का मार्ग जब आचार्यों ने बतलाया है तो किसी नवीन मार्ग के आविष्कार की क्या आवश्यकता है? दैन्यभाव से सन्त तुलसीदास जी ने ऊपर की पंक्तियों में यह व्यक्त किया

है कि जिस सेतु का निर्माण आने वाली पीढ़ियों के लिये भक्तों में राजा श्री वाल्मीकि, श्री व्यास, श्री शुकदेव आदि पूर्वाचार्यों ने कर रखा है उस पर तो उनके जैसा चींटी भी आसानी से पार जा सकती है। नये पुल का निर्माण एक तो सम्भव नहीं, अनेक जीवन इसमें बीत सकते हैं और दूसरा यह है कि ऐसे प्रयास में लगना खतरे से खाली भी नहीं है, अतएव, सन्त गोस्वामी तुलसी दास जी के ही संकेत को स्वीकार कर प्रतिक्षण उन्हीं के पद चिन्हों पर चलना अति सुगम है। यह तो निर्विवाद है कि श्रीराम-चरितमानस अनेकानेक शास्त्र पुराण वेदों का सार है उसमें इसके अलावे और भी कुछ अनुभव सिद्ध बातें हैं। इसलिये श्रीरामचरितमानस को ही उपासना ग्रन्थ बना लेने से अनेकानेक ग्रन्थों के अवलो-कन की आवश्यकता शायद नहीं रह जायगी। इस श्रीरामचरितमानस में क्या सार वस्तु है इसका उत्तर स्वयं सन्त तुलसीदास जी के शब्दों में यह है—"यहि महँ रघुपति नाम उदारा।" इसलिये चारों ओर से सिमिट कर यदि मन बुद्धि श्री सीताराम नाम रटने में लग जाय तो भक्ति मार्ग और भी सुगम हो जायेगा। निष्ठायुक्त नाम जप के फलस्वरूप आवश्यक प्रकाश पुञ्ज प्रगट होगा, मार्ग स्पष्ट दिखलायी पड़ेगा और यहाँ तक कि नामी भी प्रगट होकर प्राप्त हो जायेगा। भक्ति आचरण बनाने में भी नाम महाराज परम सहायक होंगे। युग की हवा देखते हुए हमारे चरित्रनायक एवं भक्तवर श्री रामाजी का एक ही मत था कि भक्ति साधना को यथा सम्भव सहल रूप में लोगों के सामने उपस्थित किया जाय। एक तो ऐसे ही इस युग के लोग भगवान् और उनकी भक्ति की ओर ताकते ही नहीं और यदि कठिन रूप में इसको प्रस्तुत किया जाय तो इस मार्ग पर चलने का साहस लोगों में नहीं उत्पन्न होगा। अतएव, भगवान् के नाम का ही सहारा देकर लोगों को इस मार्ग पर सुगमता से चलाया जा सकता है। इस प्रकार सार भाव यह हुआ कि पूर्वाचार्यों के दिखलाये मार्ग पर नाम जप के सहारे भक्ति साधना में लगा रहना सबसे सुगम है। यह श्री भगतजी और हमारे चरित्रनायक के आन्तरिक सत्संग का प्रथम निर्णय कहा जा सकता है।

अब उन लोगों के आन्तरिक सत्संग के दूसरे निर्णय का सम्बन्ध भक्ताचरण से है, जिसका निर्देश स्वयं श्रीरामचन्द्र जू ने पुरवासियों को उपदेश के अवसर पर किया है। निम्नलिखित चौपाइयों से आदर्श भक्ताचरण का बोध कराया गया है:—

कहहु भगति पथ कवन प्रयासा। जोगन मख जप तप उपवासा॥
सरल सुभाव न मन कुटिलाई। जथा लाभ सन्तोष सदाई॥
मोर दास कहाइ नर आसा। करइ तौ कहहु कहा विस्वासा॥
बहुत कहउँ का कथा बढ़ाई। एहि आचरण वस्य मैं भाई॥

उपरोक्त चौपाइयों में उल्लिखित आचरण सम्बन्धी चार बातों की चर्चा और व्याख्या भी आन्तरिक सत्संग के अवसर पर हुई थी उन चौपाइयों में निहित भाव को ग्रहण कर यदि जीव अपना नित्य का आचरण उसी प्रकार बना ले तो स्वयं श्रीरामभद्र जू उद्घोषित करते हैं कि वे ऐसे आचरण वाले के वशीभूत रहेंगे। इसको हमारे चरित्रनायक "सुप्रीम कोर्ट का अकाट्य रूलिंग" कहा करते थे। उपरोक्त चौपाइयों में वे चार बातें क्या हैं? वे बातें निम्नांकित हैं:—(१) सरल स्वभाव हो जाना (२) मन से कुटिलाई का निकल जाना (३) जो कुछ भी प्राप्त हो उसी से सन्तुष्ट रहना और (४) एकमात्र श्रीराम जी का ही भरोसा बराबर रखना। अब क्रमानुसार इन चार बातों की व्याख्या नीचे दी जाती है।

(१) सरल स्वभाव:—संस्कृत के 'भू' धातु से भाववाचक संज्ञा "भाव" बनता है। "भू" का अर्थ "होना" होता है। जीव में कुछ-न-कुछ होने की प्रवृत्ति का ही नाम "भाव" है। भगवान् भाव

के भूखे इसीलिये होते हैं कि यदि जीव अपने भाव (होने की प्रवृत्ति) उन्हें अर्पण कर दें तो कुछ न होकर, किसी का न होकर केवल भगवान का ही हो जाता है और वे ही जैसा चाहते हैं वैसा उसे बनाते हैं। ऐसी जीव भावार्पण के बाद कर्मबन्धन से मुक्त हो जाते हैं। भाव के इस अर्थ को ध्यान में रखते हुए, "स्व" मानी "अपना" भाव सरल बनाने की बात पर विचार किया जाय। भाव ही जीव की पूँजी है। यदि वह अपने भाव को सीधे रामजी में लगा दे, तो श्रीरामभद्र जू के प्रति उसका स्वभाव सरल हो गया, ऐसा कहा जायगा। यदि श्री रामभद्र जू और उनके भक्त जीव को दो बिन्दुओं पर मान लिया जाय तो एक से दूसरे तक जो सीधी रेखा होगी उस पर चलकर अपने इष्टदेव की ओर जाने के समय जीव को केवल वही दिखलाई पड़ेंगे, क्योंकि सीधा मार्ग चलने में दायें, बाँयें वा पीछे नहीं देखना है। सदा लक्ष्य को याद कर उसी की ओर बढ़ना है। मानव जीवन में प्रत्येक मानव का मनोभाव सीधा नहीं होता है। जीवन की नित्य घटनाओं में अनेक प्रकार के "निमित्तों" का हाथ होता है। उन घटनाओं के चपेटे में पड़कर मन इन्हीं "निमित्तों" में उलझ जाता है और अपने इष्टदेव आँखों से ओझल हो जाते हैं। जीवन की घटनाओं में अपने प्यारे प्रभु का हाथ नहीं देख पाता। अनेकानेक स्थानीय कारणों को प्रधान बनाकर सभी कारणों के परमकारण अपने इष्टदेव श्रीरामजी नहीं दिखलाई पड़ते। ऐसा मनोभाव तो सरल स्वभाव के विपरीत हो जाता है।

प्रति पल नित्य की क्रियाओं में या घटनाओं में, चाहे वे छोटी हों या बड़ी, सबों में अपने प्यारे प्रभु का ही हाथ दिखलायी पड़े ऐसे मनोभाव की तैयारी हो जाना ही "सरल स्वभाव" हो जाना है। मन, वचन, कर्म से उनका होने के लिये ऐसा भाव परम आवश्यक है। सम्मुख बुद्धि रहने से ही सरल स्वभाव बनेगा, यथा गीता—"यो मां सर्वत्र पश्यति, सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रनश्यामि, स च मे न प्रनश्यति ॥" श्रीरामचरितमानस में भी यह दोहा है—

सो अनन्य जाकि असि, मति न टरै हनुमन्त ।
मैं सेवक सचराचर, रूप स्वामि भगवन्त ॥

भगवान् कहते हैं कि जो सबमें उनको देखता है और सबों को उनमें देखता है वह सदा उनके सम्मुख रहता है भगवान् और भक्त के बीच कोई दिवाल नहीं रहती। ऐसे ही सम्मुख बुद्धि वाले जीव के प्रति भगवान् राम ने कहा है "सम्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नाशों तबहीं ॥" सारांश यह है कि प्रारब्धजनित सुख-दुख भोगते हुए, दृश्य जगत् में प्रारब्ध के अनुसार नाना व्यवहार करते हुए, हृदय में यह दृढ़ भावना बैठाये रखे कि तात्कालिक कारण जो जीवन की घटनाओं में नित्य-प्रति प्रगट हैं वे सभी कर्मफल के अनुसार प्रभु प्रेरित हैं। अतएव, सारी प्रतिकूल परिस्थितियों को उनका ही मङ्गलमय विधान समझना और सदा उन्हीं की ओर टकटकी लगाये रखना सर्वथा उचित है।

(२) मन से कुटिलाई का निकल जाना—अनेकानेक जन्मों से संसार में भटकते रहने के कारण जीव का खिँचाव संसार के ही ऐश्वर्य-माधुर्य से हो जाता है। इस विश्व में जीव की कल्पनानुसार जितनी भी मनोहारी चीजें हैं, उन्हीं की प्राप्ति में जीव का सारा समय लगता है। इसमें विफलता होने पर ही उन्हीं वस्तुओं की प्राप्ति करने के लिये वह देवता, देवी या भगवान् की ओर दौड़ता है। तरह-तरह के यज्ञ-अनुष्ठान, पूजा-पाठ, योग जप कर सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति के लिये ही भगवान् को रिझाता है। इस मनोभाव से स्पष्ट है कि जीव की भक्ति भगवान् से नहीं है, बल्कि उनके द्वारा प्राप्त होने वाली नश्वर चीजों से है। ऐसे मनोभाव को धारण किये हुये यदि कोई दावा करे कि वह भगवान् से

प्रीति करता है तो यह मिथ्या दंभ या कपट ही है। सच्ची भक्ति तभी होगी जब भक्त के हृदय में यह निर्णय हो जाय कि अनेकानेक ब्रह्माण्ड के ऐश्वर्य या माधुर्य की समता किसी भी प्रकार से श्रीरामचन्द्र जू से नहीं की जा सकती है, क्योंकि इन सभों का कारण होते हुए भी वे इन सभों से परे हैं। न उनसे अधिक कोई अमोल धन है, न उनसे अधिक कोई सौन्दर्यशाली है, और न उनसे अधिक सुखद कोई वस्तु उनके ब्रह्माण्ड में उपलब्ध है। उनकी प्राप्ति के बाद कोई प्राप्ति बाकी नहीं रह जाती। उनकी प्राप्ति को उनके ब्रह्माण्ड की अन्य विभूतियां की प्राप्ति का जरिया बनाना तो मानो हीरा से खीरा खरीदना है। यह तो अमोल हीरे का महान् अपमान ही है। अतएव, दृश्य जगत की अन्य वस्तुओं की कामना पूर्ति के लिये भगवान् से भक्ति करना यही मन की कुटिलाई है। हृदय से ऐसे दूषित मनोभाव को निकाल देना ही मन की कुटलाई का निकल जाना है। भगवान द्वारा भी जब दृश्य जगत की वस्तुओं की प्राप्ति मन के अनुकूल नहीं होती है तब उनसे प्रीति के बदले क्रोध आदि दुर्गुणों की सृष्टि हो जाती है, जो कपट भावना के ही सहायक हो जाते हैं और भगवत् प्राप्ति से कोसों दूर हटा देते हैं।

(३) जो कुछ भी प्राप्ति हो उसी से सन्तुष्ट रहना——संचित कर्मों के भण्डार के अंश से ही प्रारब्ध बनता है अथवा जीव द्वारा किये गये अनेकानेक कर्मों में से जिन कर्मों के फल का निर्णय हो जाता है वही जीव का प्रारब्ध होता है। उसी के भोग के लिये ही शरीर धारण करना पड़ता है। जीवन में सुख-दुख भोग के पीछे प्रारब्ध की ही प्रधानता होती है। अतएव, हृदय में ऐसा मनोभाव बन जाय कि भगवान् तो परम दयालु हैं, उनका किसी से राग द्वेष नहीं है। अतएव, जिन पाप पुण्य कर्मों के फल भोगने के लिये शरीर दिया है यह भी उनकी महान् कृपा ही है। अतएव, उनके दयामय निर्णय द्वारा जो भी भोग वस्तु उपलब्ध है उसमें ही सन्तुष्ट रहना भगवत् प्रीति में सहायक होता है। भगवत् दत्त वस्तु से सन्तुष्ट न होने से भगवान् को भी भला बुरा कहने की प्रवृत्ति जगती है और प्रारब्ध से प्राप्त वस्तु के अतिरिक्त और भी अधिक वस्तु अपनी तृप्ति के लिये प्राप्त करने की कामना जगती है। इसके फलस्वरूप प्रारब्ध भोग के निमित्त जो कर्म करने पड़ते हैं उसके बाद और भी कर्म करने पड़ जाते हैं, जिससे प्रारब्धजनित उपार्जन में वृद्धि हो। परिणाम यह होता है कि इस प्रकार क्रियमान कर्मों को करने का समय जो भगवान् की प्रीति करने में लगता वह भी अब संसार की प्रीति करने में ही लग जाता है। विधि द्वारा निर्धारित हर प्रकार के कर्मक्षेत्रों में जो निजी विश्रामकाल कहा जाता है उसी में कटौती कर भजन करने का संकेत सर्वत्र है। यह समय साधारणतः प्रातःकाल सूर्य उदय होने के पूर्व रहता है। परन्तु, प्रारब्ध निर्धारित कर्म करने की अवधि के बाद भी अपने विश्राम काल में से ही समय अतिरिक्त उपार्जन के लिये लगाना पड़ेगा। इससे शरीर में शिथिलता बढ़ेगी, निंद्रा-तन्द्रा का प्रभाव रहेगा और प्रातःकाल में भी मन बुद्धि भजन के लिये स्वस्थ्य नहीं रहेगी। इसलिये, भक्ति करने वाले जीव को जो भी अनायास येन-केन-प्रकारेण प्राप्त हो उसी में सन्तुष्ट रहने के अलावे और कोई भी विकल्प भजन करने के लिये नहीं है। सन्तोष रखने से भगवान् पर निर्भरता बढ़ती है और उसके सांसारिक बोझ के वहन करने में भगवत् कृपा डेग-डेग पर दिखलाई पड़ने लगती है। यह अनुभव सिद्ध निर्णय सन्तों एवं भक्तों का है।

(४) एक मात्र श्री रामजी का ही भरोसा बराबर रखना——जीव जगत में तो मानव जीवन की अवस्था दयनीय है। एक व्यक्ति अनेकों का बना हुआ है और उन अनेकों का दावा उस पर हावी रहता है। कोई उसे पिता कहता है, कोई पुत्र कहता है, कोई भाई कहता है, कोई चाचा कहता है, कोई मामा कहता है आदि। इस प्रकार न वह व्यक्ति अपने को श्री रामजी का कहने पाता है और न उसके सगे सम्बन्धी

ही उसे श्री रामजी का बतलाते हैं। तन, धन, भवन के नाते क्षणिक होते हुए भी स्थायी जैसा प्रभाव डालते हैं और उस व्यक्ति विशेष को ऐसा सोचने का अवसर ही नहीं मिलता कि मैं श्री रामजी का हूँ। परिणाम यह होता है कि अपने किसी अभाव की पूर्ति के लिये वह इन्हीं सगे सम्बन्धियों के आगे हाथ पसारता है। अपने हृदय में सदा उन्हीं की सहायता का भरोसा भी रखता है। जब इनसे निराशा होती है तभी उसका ध्यान कभी-कभी भगवान् की ओर जाने लगता है। यह भी भगवान् से प्रीति करने के लिये नहीं, बल्कि उनके द्वारा दृश्य जगत की कुछ वस्तुओं की प्राप्ति के लिये।

सच्चा कल्याण तो जीव का इसी में है कि सारे ब्रह्माण्ड को भगवान् का माने और अपने को भी उन्हीं का जाने। जहाँ, जैसे, जिससे, जो कुछ भी प्राप्त होता है, अथवा दया, कृपा का व्यवहार मिलता है वह सब प्रभु की ही अहैतुकी कृपा से मिलता है, ऐसी समझदारी दृढ़ होने पर ही वह सदा कृपामय भगवान् का भरोसा रख सकेगा। यही हृदयस्थ भावना भक्ताचार्य सन्त तुलसीदास के हृदय में सदा बनी रही, यथा—

एक भरोसा एक बल, एक आश विस्वास।
एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास॥

इसीलिये श्रीरामभद्र जू ने स्पष्ट कहा है कि जो इक्के-दुक्के का भरोसा करता है और अपने को हमारा दास बतलाता है उसको मुझमें विश्वास कहाँ हुआ ? यदि उसे विश्वास होता कि ब्रह्माण्ड में ऐसी कोई चीज नहीं है जिसकी प्राप्ति मेरे दास को मुझसे नहीं होगी, तो कभी भी वह औरों के आगे हाथ नहीं पसारता। मेरी कृपा से ही संसार उस पर कृपा करता है यह तो वह भूल ही जाता है, यथा—

"जापर कृपा राम की होई। तापर कृपा करै सब कोई।"

ऐसी परिस्थिति में, श्री रामजी का होकर दूसरे के आगे हाथ पसारना तो महा विडम्बना है, अरण्य रुदन के समान है।

जिस प्रभु के प्रीति करनी है उन्हीं ने उपरोक्त चौपाइयों में यह बतलाने की कृपा की है कि वे कैसे प्राप्त हो सकते हैं और किन विशिष्ट आचरणों से वे सदा अपने भक्त के बस रहते हैं। जिन आचरणों की चर्चा उन्होंने की है, उन्होंने इस सन्दर्भ में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि ये आचरण योग, जप, तप, मख, व्रत आदि कठिन साधनाओं के करने से ही प्राप्त नहीं होंगे, बल्कि इन आचरणों की प्राप्ति के लिये इन कठिन साधनाओं की आवश्यकता ही नहीं है। इसीलिये, श्रीरामभद्र जू ने कहा है कि 'भक्ति पथ' में कोई प्रयास नहीं करना है, बल्कि अपने मनोभाव को ही ऐसा बना लेना है कि प्रारब्धजनित कर्मों का भोग करते हुए ही बिना अन्य साधनों का सहारे लिये नित्य के रहन-सहन में उपरोक्त चार आचरणों का स्वभावतः समावेश हो जाय। इन आचरणों का उदय होने के लिये तो ऐसा कहीं भी संकेत श्री रामभद्र जू ने नहीं किया, जिसके अनुसार घर, परिवार, व्यवसाय का त्याग करना पड़े या विरक्त संन्यासी बनना पड़े। इसीलिये 'भक्ति पथ' जप, योग, आदि से कहीं ऊँचा, पर सुगम-से-सुगम है। जिससे प्रीति करना है उसके ही बतलाये मार्ग पर न चलकर अनेकानेक मतों के फेरे में पड़कर भक्ति मार्ग का अलग निर्माण करना तो अपने हाथ से अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारना है। अपने द्वारा निर्धारित मार्ग पर चलकर तो अपने को ही प्रसन्न किया जा सकता है, पर मालिक को तो मालिक के ही बतलाये मार्ग पर चलकर प्रसन्न किया जा सकता है।

उपरोक्त आन्तरिक सत्संग के बाद हमारे चरित्रनायक श्री अवध के लिये प्रस्थान कर गये।

भक्तवर श्री रामाजी महाराज की जीवन लीला का अन्तिम काल—सन् १९२८ ई०
के बैशाख महीने में ग्राम हुजहुजीपुर के पाठक जी हमारे चरित्रनायक से मिलने श्री अवध आ पहुँचे।
उन्होंने बतलाया कि श्री भगतजी का पैर फूल गया है। और सरेयाँ में ही एक प्रेमी के घर पड़े हुए हैं।
उनका स्वास्थ्य चिन्ताजनक हो चला है। यह सुनते ही हमारे चरित्रनायक सरेयाँ के लिये प्रस्थान
कर गये और दूसरे दिन ही वहाँ पहुँचकर उन्होंने श्री भगतजी की चिन्तनीय अवस्था को देखा। हमारे चरित्र-
नायक ने भी उचित सेवा सुश्रूषा एवं चिकित्सा कराने में अपना भी योगदान दिया। रात्रि विश्राम के बाद
श्री भगत जी ने हमारे चरित्रनायक से कहा कि उन्होंने रफीपुर ग्राम के श्री रामप्रीत लाल को नाम नवाह
एवं विवाह स्वयं जाकर सम्पन्न करा देने का वचन दे रखा है, जिसके अनुपालन में वे अब असमर्थ हो रहे
हैं। इसीलिये, उन्होंने हमारे चरित्रनायक से अनुरोध किया कि मात्र एकतीस रुपये में आप नवाह-विवाह
का कार्य क्रम सम्पन्न करा दें, अन्यथा श्री रामप्रीत बाबू जगह जमीन की बिक्री कर यह उत्सव कराने का
विचार कर रहे हैं। वे गरीब आदमी हैं, इस प्रकार के भावावेश में वे परिवार की रोजी पर कुठाराघात
कर देंगे। आपही को इनका सम्भाल करना है। हमारे चरित्रनायक ने तो चुपचाप श्री भगतजी के
अनुरोध को स्वीकार कर लिया और प्रातःकाल रफीपुर के लिये वे प्रस्थान कर गये। पर उनके मन में
एक बहुत बड़ा असमंजस खड़ा हो गया। मात्र एकतीस रुपये से नव दिन नाम नवाह, विवाह एवं कलेवा
उत्सव कराना तो उनके लिये एक टेढ़ी खीर-सा बन गया। जैसा कि हमारे चरित्रनायक कहा करते थे,
उनके मन में ऐसा भाव उदय हुआ कि मानो श्री भगतजी ने अन्तिम काल में उनकी कसौटी की है।
अवलम्ब तो श्री किशोरीजी का ही है। इस कार्य को किसी प्रकार पार लगाना ही है। रफीपुर पहुँचते ही
हमारे चरित्रनायक ने श्री रामप्रीत बाबू से सारी बातें बतलायीं और तदनुसार व्यवस्था करने को कहा।
हमारे चरित्रनायक ने कहा कि यदि आप चाहते हों कि श्री भगत जी भी एक आध घण्टे के लिये यहाँ आ
जायँ तो कम ही दिन में सब उत्सव समाप्त करना होगा, क्योंकि उनके जीवन का अब कोई ठिकाना नहीं
है। फल तो जो आपको नाम नवाह से होगा वही अष्टयाम नाम जप से यदि पूर्ण विश्वास रखें तो भी
होगा। सारा कार्य-क्रम आपको एकतीस रुपये में ही करना है और कुछ नहीं बोलना है। तभी श्री भगत-
जी भी प्रसन्न होंगे। इस पर श्री रामप्रीत बाबू सहमत हो गये और श्री भगत जी के सुझाव के अनुसार
ही सारा कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। कलेवा उत्सव के दिन श्री भगतजी को पालकी पर लाया गया
और दो आदमियों ने हाथ पकड़कर उन्हें विवाह मंडप में पहुँचाया। हाथ, पैर, मुख सब सूजे रहने पर भी
भगतजी ने दर्दभरी आवाज में दो एक पद ऐसे गाये कि उपस्थित जनता तो फूटकर रोने लगी। श्री
भगतजी की यही अन्तिम हाजिरी विवाह मंडप में हुई। पदगान के बाद वे तुरन्त सरेयाँ वापस लाये गये।
हमारे चरित्रनायक भी विवाह सामान के साथ सरेयाँ आये और एक दो दिन वहाँ ठहरकर श्री अवध के
लिये प्रस्थान कर गये।

दो चार दिनों के बाद ही श्रीजानकी नवमी का उत्सव बड़े धूमधाम से श्रीरूपकला जी महाराज
के स्थान में मानाया जा रहा था। इसमें बिहार के बहुत से प्रेमी आमन्त्रित होकर आये थे और श्री अवध
के भी प्रधान सन्त इस उत्सव में सम्मिलित थे। बिहार के श्री मोदलताजी ने हमारे चरित्रनायक से रोते
हुए कहा कि बिहार के अखबार में भक्तवर श्री रामाजी के देहावसान की बात छप गई है। यह जानकर
हमारे चरित्रनायक भी श्री रूपकलाजी एवं श्री बाबा गोमतीदासजी से मिले और उन्हीं लोगों के परामर्श
से सच्ची बात का पता लगाने के लिये प्रस्थान कर गये। सूर्योदय के पूर्व ही हमारे चरित्रनायक सरेयाँ
पहुँचे और ज्योंही उन्होंने श्री भगत जी को चारपाई पर पड़े हुए जीवित पाया, हर्षातिरेक से मानो उनके

प्राणवायु ऊपर की ओर ही टँग गये। वे एकटक देखते हुए स्तब्ध खड़े होकर आँसू बहाते रहे। श्री भगतजी के इशारे पर तपन बाबू एवं नगू बाबू ने उनकी पीठ को ऊपर से नीचे की ओर सहलाया तब उनके प्राणवायु जगह पर आ गये और वे बोलने में समर्थ हुए। सारा वृत्तान्त हमारे चरित्रनायक ने श्री भगत जी को बतलाया। इस पर श्री भगतजी ने केवल इतना ही कहा "एकमात्र आप ही हमारे हैं, इसलिये आप आ गये।"

हमारे चरित्रनायक का चरणामृत उतरवा कर श्री भगतजी ने पान कर लिया और कहा कि आप तो सरकार के रूप ही हैं। आपने श्री अवध से आकर मुझे साक्षात् दर्शन का सुख दिया, श्री भगतजी के भाव भरे उद्गार को सुनकर हमारे चरित्रनायक तो करुणा से भर गये। उन्होंने साहस कर श्री भगतजी के प्रति यह कहा कि जीवन पर्यन्त दृढ़-निष्ठावान, मर्यादापोषक एवं ब्राह्मण पूजक होने के नाते आपने बराबर ही पूजा की है। मुझे तो ऐसा लगता है कि ब्राह्मण कुल में जन्म लेना मेरे लिये बहुत ही घातक सिद्ध हुआ है। आप सरीखे महान् सन्त की सेवा पूजा से मर्यादा के नाम पर मुझे वंचित होना पड़ा है। मेरे लिये तो यह कठिन अभिशाप-सा बन गया है। आपकी सेवा से वंचित रहना मुझे बहुत ही खल रहा है। कृपा कर आप मुझसे नाम नवाह कराकर मेरे द्वारा नाम सुनवाने की सेवा स्वीकार करें तो मैं अपने को अहोभाग्य समझूँगा। इस पर श्री भगतजी ने कहा कि अब समय कहाँ ? खैर, आप ऐसा चाहते हैं तो नाम माहात्म्य के नव दोहे ही सुना दें। भक्तवर श्रीरामाजी महाराज के प्रति यही अन्तिम सेवा हमारे चरित्रनायक द्वारा की गई।

भक्तवर श्री रामाजी महाराज के साकेत गमन काल में हमारे चरित्रनायक द्वारा अन्तिम श्रद्धांजलि—सन् १९२८ ई० की ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया का प्रातःकाल शोकमय वातावरण में आरम्भ हुआ। सबों को विश्वास हो गया कि आज श्री भगत जी शरीर त्याग कर ही देंगे। दर्शनार्थियों की भीड़ बढ़ती ही गयी, अनेक नर-नारी नेत्रों में आँसू भरे आते और श्री भगतजी का अन्तिम दर्शन कर लौट जाते, हमारे चरित्रनायक ने ग्राम-ग्राम से कीर्तन मण्डलियों को बुलवाकर नाम धुनि चालू करवायी जो अन्तिम क्षण तक चलती रही। सन्ध्या होते ही श्री भगतजी ने बातचीत करना बन्द कर दिया। एक चारपाई पर उनके दोनों पैर पश्चिम दिशा में फैले हुए थे और अपने दोनों ठेहुनों पर खुला हुआ हाथ रखकर लगभग ७ बजे सन्ध्या को पश्चिम की ओर ताकने लगे। हमारे चरित्रनायक ने देखा कि पश्चिम दीवार के ताखे पर अनन्त कोटि वैष्णवों का श्री चरणामृत रखा हुआ है। शायद श्री भगत जी यही पान करना चाह रहे हैं। जैसे ही हमारे चरित्रनायक ने चरणामृत पान कराया वैसे ही ७ बजकर २५ मिनट पर श्री भगतजी का शरीरान्त हो गया। उनके प्राणपखेरू मुख द्वार से ही उड़ गये।

सभी अधीर होकर जहाँ तहाँ रोने लगे। हमारे चरित्रनायक के नेत्रों से आँसू का चलना घण्टों तक बन्द नहीं हुआ। सिसकी एवं हिचकी लगातार जारी रही। सभी लोग शिथिल होकर सो गये, क्योंकि यह निर्णय हुआ कि प्रातःकाल ही अन्त्येष्टि क्रिया होगी। इसी उन्मादमय विलाप की अवस्था में हमारे चरित्रनायक ने एक दिव्य झाँकी देखी। इस झाँकी का वर्णन हमारे चरित्रनायक से सुने हुए विवरण के आधार पर ही किया जा रहा है। लगभग आधी रात को एक अद्भुत दृश्य प्रगट हुआ। श्री भगत जी का शरीर विसर्जन सरैयाँ आश्रम के निकट ही एक मकान के बरामदे में हुआ था। इस मकान के सामने रबी का खलिहान, जहाँ तहाँ कुछ बोझे और यत्र-तत्र आम के वृक्ष खड़े थे। अचानक हमारे चरित्रनायक के नेत्रों के सामने यह सारा भौतिक दृश्य लुप्त हो गया। इसके स्थान पर चारों ओर से एक दिव्य ज्योतिमय वातावरण नेत्रों को चकाचौंध करते हुए प्रगट हुआ। सड़क से पश्चिम एक अलौकिक हरे पत्ते से युक्त

सुन्दर आम का वृक्ष दिखलायी पड़ा। उसके पत्ते-पत्ते पर राम नाम लिखा हुआ पीत अलफी धारण किये हुए और अनेक प्रकार के वाद्ययन्त्र बजाते हुए दिव्य मूर्तियाँ दीख पड़ीं। सुन्दर आकर्षण सुरीली तान से कीर्तन हो रहा था। उसी जमात में से एक चमकता हुआ तार तिरछे आकर, जहाँ पर श्री रामाजी महाराज का स्थूल शरीर पड़ा था, उस कोठरी के पटदेहर तक तन गया। इसी तार के मार्ग से एक दिव्य सिंहासन खुरखुर आवाज करता हुआ पटदेहर तक आ पहुँचा। उसी समय भक्तवर श्री रामाजी महाराज जो मैले वस्त्रों से ढँपे थे, उठ गये और बोल उठे—"पुजारी जी महाराज इसी दिन के लिये हम रात दिन सरकार का बनकर उनका नाम रटते रहे और यशगान करते रहे।" अब, कोठरी से श्री भगतजी सिंहासन की ओर लपके और हमारे चरित्रनायक भी दौड़कर खम्भे के निकट खड़े हो गये। सिंहासन में तीन डण्डे थे। ऊपर के डण्डे पर ही दो गौरांग मूर्ति बैठे हुए थे। इन दोनों मूर्तियों ने हाथ बढ़ाकर अपने बीच में बैठाने के लिये श्री भगत जी को खींचा, पर श्री भगत जी बोल उठे कि उन्हें नीचे वाले डण्डे पर ही बैठने दिया जाय, क्योंकि ऊपर का आसन तो दुलहा सरकार का है। दोनों पैर सिंहासन पर रखते ही श्री भगत जी का सारा शरीर गौरांग हो गया। हमारे चरित्रनायक ने अपने बैठने के लिये भी आदेश माँगा तो श्री भगत जी ने उत्तर दिया कि अभी आपको यहीं रहकर भजन भाव करना है। तुरन्त सिंहासन ऊपर की ओर उठा, जिसे हमारे चरित्रनायक ने चार पाँच सौ गज ऊँचा तक जाते देखा। इसके बाद सारा दृश्य लुप्त हो गया, वही खलिहान, वही आम के वृक्ष तथा बरामदे में पड़ा हुआ श्री भगत जी का स्थूल शरीर! स्तब्ध रात्रि में क्या दृश्य हुआ इसका पता वहाँ पड़े हुए किसी को न हो सका। उस घटना से यह स्पष्ट पता चल जाता है कि हमारे चरित्रनायक दिव्य दृष्टि लेकर ही आये थे। इसीलिये, उन्होंने सारे दिव्य दृश्य को देखा और स्वयं श्री भगतजी के जीवन चरित्र में ऐसा लिख भी दिया।

प्रातःकाल होते ही भक्तवर श्री रामाजी महाराज का स्थूल शरीर गृहस्थ परम्परा के अनुसार सरेयाँ आश्रम से लगभग एक सौ गज की दूरी पर एक तालाब के किनारे परिवार के सदस्यों, अनेकानेक प्रेमियों, कीर्तन मंडलियों की उपस्थिति में जलाया गया। हमारे चरित्रनायक द्वारा इनके भस्मावशेष तथा हड्डियों को पुण्य सलिला गंगा एवं सरयू में प्रवाहित किया गया। श्राद्ध के उपलक्ष में विप्र भोजन साधु भोजन तथा कंगला भोजन विभिन्न तिथियों पर पाँच मास के भीतर सरेयाँ, श्री भगतजी की जन्म भूमि खेड़ाय, छपरा, एवं श्री अवध में विशाल पमाने पर हमारे चरित्रनायक द्वारा प्रेमियों के सहयोग से कराया गया।

हमारे चरित्रनायक की गुरु दीक्षा—जैसा कि पूर्व पृष्ठों में उल्लेख किया जा चुका है, बाल्यावस्था में हमारे चरित्रनायक ने अपने कुलगुरु से शंकर मन्त्र की ही दीक्षा ली थी। श्री अवध आते ही ठठेरा मन्दिर में उन्होंने संन्यासी महात्मा श्री अनन्त रामानन्द स्वामी से श्री सीताराम मन्त्र की दीक्षा ली। श्री अवध रहते-रहते कुछ वर्षों के बाद हमारे चरित्रनायक का सम्पर्क श्री अवध के तत्कालीन सुप्रसिद्ध महात्मा श्री अनन्त सिया शरण (श्री मधुकर महाराज) से घनिष्ठ होता गया। यही महात्मा उनके रहस्य सत्संग के गुरु बन गये। आगे चलकर हमारे चरित्रनायक ने उन्हीं से सम्बन्ध पत्र एवं अष्टयाम-मानसिक सेवा पूजा की दीक्षा भी ली। अपनी धर्मपत्नी के देहान्त होने के बाद हमारे चरित्र-नायक ने विधिवत् संस्कार युक्त श्री मधुकर महाराज से ही लँगोटी अचला ग्रहण किया, उसी दिन से वे विरक्त साधु बने।

सगुण उपासना प्रणाली में लीला स्वरूप का स्थान—अपनी उपासना प्रणाली में हमारे चरित्रनायक ने भी मिथिला भाव को अपनाया। श्री सीताराम जी के दुलहिन-दुलहा रूप के पुजारी बने

और युगल विवाह लीला, कलेवा एवं चौथारी उत्सव का आयोजन कर बराबर ही उन्होंने आनन्द की वर्षा की। मिथिला भाव क्या है एवं विवाह उपासना को उन्होंने क्यों अपनाया इस पर प्रकाश आगे के पृष्ठों में उपयुक्त अवसर पर दिया जायेगा। इनके द्वारा पूजन विधि का उल्लेख यहाँ कर दिया जा रहा है और साथ ही लीला स्वरूपों द्वारा पूजा उपासना की प्रणाली कब से आरम्भ हुई इस सम्बन्ध में भी हमारे चरित्रनायक द्वारा बतलाये गये तथ्यों के आधार पर उसे भी उल्लेखित किया जा रहा है। आरम्भ में इन्होंने आठ रामायण जी को ही पीत वस्त्रों से श्रृंगार कर चार भाई एवं चार बहन का प्रतीक बनाया और उन्हें ही सिंहासनासीन कर चार दुलहा और चार दुलहिन का भाव ये करते रहे। परन्तु ठठेरा मन्दिर में तीन चार वर्ष निवास करने के बाद ही उन्हें लीला स्वरूपों से आकर्षण हुआ और लीला स्वरूपों को ही दुलहा-दुलहिन का प्रतीक बनाने की उत्कट अभिलाषा हुई। इस सम्बन्ध में उन्होंने श्री अवध के महान सन्तों से परामर्श किया। तब, उन्हें पता चला कि सर्वप्रथम श्री हनुमन्त लाल जू ने ही गन्धमादन पर्वत के केदली वन में पाँच से दस वर्ष की अवस्था वाले दो विप्र बालकों को श्री सीताराम जी का प्रतीक बनाकर उन्हीं की पूजा उपासना कर साक्षात् दर्शन के सुख का उपभोग किया। उसी समय से वैष्णव समाज में पाँच से दस वर्ष वाले संस्कारी एवं निर्दोष विप्र बालकों को भी पूजा विग्रह के लिये मान्यता मिली और लीला स्वरूपों में साक्षात् भाव करने की परम्परा का समावेश हुआ। उपरोक्त प्राचीन इतिहास जानने के बाद हमारे चरित्रनायक भी सर्वप्रथम केवल दो विप्र बालकों को ही श्री सीताराम जी का प्रतीक बनाकर विवाह उत्सव आदि करने कराने लगे। परन्तु आठ रामायण जी का भी श्रृंगार पूजा करना साथ-ही-साथ जारी रहा। हमारे चरित्रनायक कहा करते थे कि श्री रामायण जी तो श्री रामजी के परिवार सहित उनके घर हैं। उनका विश्वास था कि उसी रामायण रूपी घर से प्रगट होकर लीला स्वरूप के रूप में चार भाई चार बहन बैठे हैं। अतएव, श्री रामायण जी की श्रृंगार पूजा के साथ-साथ लीला स्वरूपों की श्रृंगार पूजा की प्रणाली बराबर चलती रही। केवल कलेवा के अवसर पर और दो रामायण जी को श्री हनुमान् जी एवं श्री तुलसी जी का प्रतीक बनाकर, श्री शत्रुघ्न जी युगल जोड़ी के बगल में श्री हनुमन्त लाल जू को तथा सीताराम जी युगल जोड़ी के बगल में श्री तुलसी जी को, स्थापित किया जाता है और इन्हें भी कलेवा भोग का हिस्सा प्रसाद रूप में अर्पित होता है। यही परम्परा आज तक जारी है।

प्रतीक पूजा की प्रथा—उपासना प्रणाली में प्राचीन महर्षियों ने अष्टविग्रह को स्थान दिया है। उन्हीं विग्रहों के द्वारा हिन्दू धर्म में मूर्तिपूजा की प्रणाली चली आ रही है। आज के युग में तो तथाकथित विद्वान् मन्दिर की मूर्तियों के समक्ष झुकने में संकोच का अनुभव करते हैं। यहाँ तक शंका की जाती है कि पाषाण आदि के विग्रह कैसे भगवान् बन सकते हैं? यदि मानव जीवन के हर क्षेत्र में दृष्टि-पात किया जाय तो यह सर्वत्र प्रगट मालूम पड़ता है कि प्रत्येक मानव के हृदय में प्रतीक पूजा के भाव जन्मजात निहित हैं। सामाजिक, राजनैतिक अथवा आध्यात्मिक जीवन में जो भी पूज्य होते हैं उनके सामने नहीं रहने पर उनका छायाचित्र ही उनका प्रतीक बन जाता है। जो सम्मान उनके प्रत्यक्ष रहने पर दिया जाता, वही सम्मान अवसर-अवसर पर उनके प्रतीक छायाचित्र, प्रस्तर मूर्ति, समाधि आदि को दिया जाता है। पिताजी चले गये तो वर्षगाँठ के अवसर पर श्रद्धालु पितृभक्त उनके छायाचित्र को ही माल्यार्पण आदि करते हैं और उन्हें प्रणाम करते हैं। आर्य समाज में जहाँ मूर्तिपूजा विरोध के भाषण होते हैं, वहाँ भी उत्सवों के अवसर पर स्वामी दयानन्द एवं श्रद्धानन्द के चित्रपटों पर पुष्प मालायें उनके सम्मानार्थ पहिनाई जाती हैं और उन्हें नमस्कार किया जाता है। मुसलमान बन्धुओं के यहाँ भी प्रतिवर्ष

सबेबरात के अवसर पर कब्र की सफाई, लिपाई, पोताई होती है, कब्र पर पुष्प मालायें चढ़ाई जाती हैं, धूप दीप भी अर्पित होते हैं और सिरनी भी चढ़ाई जाती है। प्रतिवर्ष मुहर्रम के अवसर पर भी मकबरे में "मलीदा सिरनी" आदि चढ़ाकर इसी प्रकार से पूजा की जाती है। हमारे क्रिश्चियन बन्धु भी प्रतीक पूजा से अलग नहीं हैं। उनके यहाँ भी इस्टर त्योहार के अवसर पर कब्रों की पूजा होती है और दीप जलाये जाते हैं। गिरजा घरों में श्री ईसामसीह की प्रस्तर मूर्ति स्थापित होती है और उचित अवसर पर उन्हें भी माला आदि अर्पण कर सम्मान प्रदर्शित किया जाता है। राजनैतिक क्षेत्र के लोग भी इससे बचे नहीं हैं। उनके यहाँ तो दिवङ्गत नेताओं के सम्मान में स्मारक, समाधि, प्रस्तर मूर्ति उनके प्रतीक के रूप में निर्मित किये जाते हैं और उपयुक्त अवसर पर प्रतीक को ही माल्यार्पण आदि कर दिवङ्गत नेता को सम्मान प्रदर्शित किया जाता है। महात्मा गाँधी के भस्मावशेष से एक चुटकी निकालकर श्री यमुना किनारे जमीन में रखकर एक भव्य समाधि की रचना की गई है। वहाँ सभी देश के राजे-रजवाड़े, राष्ट्रपति आकर माल्यार्पण करते हैं और सिर झुकाते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जो सामने प्रत्यक्ष नहीं है उसे सम्मान प्रदर्शन करने के लिये उसके कोई प्रतीक का निर्माण कर लिया जाता है और उसी माध्यम से उसको सम्मान प्रदर्शित किया जाता है। बिना कोई विचार किये सभी किसी-न-किसी रूप में प्रतीक पूजा करते ही हैं। यह मनोभाव तो जन्मजात है। केवल भगवत् पूजा के सम्बन्ध में प्रतीक के द्वारा पूजा सम्मान करना इस युग के विद्वानों की समझ में नहीं आता है। यह बराबर से आश्चर्यजनक बात रही है और आज भी है।

इसी अनादि भाव के आधार पर ही सर्वव्यापक भगवान् की भी पूजा एक प्रतीक का निर्माण कर की जाती है। धर्म शास्त्रों में आठ प्रकार के प्रतीक (मूर्ति) स्वीकृत हैं, जिनकी स्थापना कर पूजा की जाती है, यथा पाषाणमूर्ति, स्वर्णमूर्ति, काष्ठमूर्ति, मिट्टीमूर्ति, वस्त्रमूर्ति, ग्रन्थमूर्ति आदि। ग्रन्थ पूजा सिक्ख सम्प्रदाय में आज भी प्रचलित है। मूर्ति भगवान् नहीं है पर मूर्ति में भगवान् अवश्य है। सच्चा प्रेम देकर मूर्ति से भी भगवान् को प्रकट किया जा सकता है। ऐसी दृढ़ निष्ठा के फलस्वरूप ही भक्त प्रह्लाद के लिये भगवान् खम्भे से प्रकट हुए और भक्त नामदेव के लिये भगवान् कुत्ते में ही प्रकट हो गये। इस प्रकार के उदाहरण भरे पड़े हैं। आज भी कुतर्क छोड़कर निष्ठायुक्त प्रेम से सर्वव्यापी भगवान् को किसी एक स्थल पर किसी एक प्रतीक के माध्यम से प्रगट किया जा सकता है। इसी निष्ठायुक्त प्रेम के कारण हमारे चरित्रनायक के जीवन में आगे चलकर एक महान् घटना घटित हुई। एक लीला स्वरूप में ही श्री सिया स्वामिनी जू साक्षात् प्रगट हो गयीं और श्री साकेत सुख हमारे चरित्रनायक को उन्होंने इस धरातल पर ही कई वर्षों तक दिया। इसका विवरण आगे के पृष्ठों में उल्लेखित होगा।

श्री रामार्चा पूजा भी उपासना का ही एक अङ्ग—हमारे चरित्रनायक का सम्बन्ध श्री अनन्त पंडित रामवल्लभा शरण जी महाराज से उत्तरोत्तर घनिष्ठ होता गया। उनका भी वरद हस्त इनके ऊपर बराबर रहा। इन्हीं के साथ आन्तरिक सत्संग में हमारे चरित्रनायक को यह कहा गया कि श्री रामार्चा पूजा भी श्री रामोपासना का एक प्रधान अङ्ग है। इस पूजा में अपने सभी अङ्ग देवताओं की पूजा कराकर ही श्री सीताराम जी अपनी पूजा स्वीकार करते हैं। इस प्रकार सभी अङ्ग देवताओं को पूजा से प्रसन्न कर उपासक उनके आशीर्वाद युक्त होकर अपने इष्टदेव को सुगमतापूर्वक प्रसन्न कर पाता है। सबों की पूजाओं के साथ-साथ "सियाराम मय सब जग जानी" वाली भावना भी दृढ़तर होने लगती है और हृदय से राग द्वेष हटकर सारे संसार से समान प्रीति करने के भाव जागृत होने लगते हैं। इसलिये साल में एक पूजा भी इस प्रकार से होती रहे तो संसारी संकटों के विनाश के साथ-साथ उपासना

मार्ग भी सरल सुगम होता जाता है। इन्हीं कारणों से हमारे चरित्रनायक ने विवाह, कलेवा एवं नाम नवाह के अतिरिक्त श्री रामार्चा पूजा को भी अपनी उपासना प्रणाली का एक प्रधान अङ्ग बनाया। इस पूजा के फलस्वरूप उनके अनेकानेक शिष्यों ने यह स्वीकार किया है और बतलाया है कि कई प्रकार की लौकिक कामनायें, यथा पुत्र प्राप्ति, धनप्राप्ति, पदप्राप्ति पदोन्नति आदि तत्काल पूरी हो गयी हैं। हमारे चरित्रनायक की श्री रामार्चा पूजा की विधि-शैली बराबर अपने ढंग की रही। एक पूजा में आठ घण्टे से कम समय शायद कभी नहीं लगा। जिन लोगों ने यह पूजा करवायी है या देखी है उन्हें इस कथन की सत्यता का पूरा ज्ञान है।

हमारे चरित्रनायक का दाम्पत्य जीवन और सन्तान—हमारे चरित्रनायक सन् १९१५ ई० से ही ठठेरा मन्दिर के पुजारी के रूप में सपत्नीक निवास करने लगे। यहाँ आपको तीन सन्तान हुए, जिनमें दो लड़की और एक लड़का थे। साल दो साल की ही होकर लड़कियों का शरीरान्त होता गया। सबके अन्त में एक पुत्र का जन्म सन् १९३५ ई० में हुआ। यह बच्चा इतना संस्कारी था कि नित्य कीर्तन को ध्यानपूर्वक सुनता और हमारे चरित्रनायक के साथ श्री मधुकर महाराज के पास जाकर उनके चरणों में दण्डवत् किया करता था। बच्चे की ढिठाई इतनी बढ़ गई थी कि उसने औरों को कान में मन्त्र देते देखकर अपना कान भी उनके मुख की ओर बढ़ा दिया करता था। ऐसा उस बच्चे ने कई बार किया। तब, तीन चार साल की अवस्था में ही श्री मधुकर महाराज जी ने उसके कानों में युगल मन्त्र दे दिया। इस बच्चे का लालन-पालन माता जी तो करती ही थीं, परन्तु दरभङ्गा जिले के खिरहर ग्राम की एक माई श्रीमती सीतासहचरी, जो वहीं रहकर भजन करती थी, बच्चे की ओर आकर्षित हो गयी। उस माई ने माताजी से यह अनुरोध किया कि आप मन्दिर के कैंकर्य पूजा आदि में पूरा समय दें और बच्चे के खाने-खिलाने और लालन-पालन का भार मुझे दे दें। माताजी इससे सहमत हो गयीं और बच्चा भी उस माई के साथ प्रसन्न ही रहने लगा।

हमारे चरित्रनायक के दाम्पत्य सम्बन्ध भाव में परिवर्तन—पुत्र सन्तान उत्पन्न होने के बाद लगता है कि, हमारे चरित्रनायक को ऐसा आन्तरिक आभास मिल गया कि विवाह सम्बन्ध करने का प्रयोजन विधि विधान के अनुसार पुत्र जन्म के बाद ही समाप्त हो गया, इन्हीं कारणों से दाम्पत्य सम्बन्ध ने अब दूसरा ही रूप ले लिया। पति-पत्नी का व्यावहारिक सम्बन्ध टूट गया, केवल भाव सम्बन्ध माताजी के साथ जीवन पर्यन्त बना रहा। रात्रि का अधिकांश समय जागरण में बीतने लगा और मन्दिर के जगमोहन में ही बैठकर पूजा शयन के बाद, हमारे चरित्रनायक रात-रात भर भजन करते रहते थे। माता जी अलग कमरे में रहा करती थीं। एक साल जाड़े की रात में दम्पत्ति के बीच ओढ़ने के लिये एक ही कम्बल बचा। दोनों को अलग-अलग रहकर सोने में स्वाभाविक कठिनाई खड़ी हुई। अतएव, हमारे चरित्रनायक इस पर सहमत हुए कि माताजी शयन करने के समय उनके जङ्घों पर सिर रखकर जगमोहन में ही सो सकती हैं और आधे कम्बल से जाड़ा काट सकती हैं। माता जी ने भी इसको मान लिया और इस प्रकार जाड़े की अवधि काट ली गयी। कुछ लोगों ने दम्पत्ति को इस प्रकार जगमोहन में पाकर, कहा जाता है कि, कटाक्ष भी किया। पर चरित्रनायक के ऊपर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने साफ़ शब्दों में लोगों को कहा कि जब तक जानकी देवी पत्नी रूप में उनके साथ जीवित हैं, उनके सुख सुविधा का ध्यान रखना भी भजन ही है। माताजी की उपस्थिति से हमारे चरित्रनायक के रात्रि भजन में कोई बाधा नहीं हुई। और न उनके हृदय में कोई विकृति आयी। ऐसी अवस्था में कोरी समालोचना की बातों को क्या महत्व दिया जाता ?

श्री सिद्ध-किशोरीजी

बालक मणिराम के रूप में स्वामिनी श्री सिया जू का आवेशावतार----सन् १९२८ ई० के ज्येष्ठ मास में भक्तवर श्रीरामाजी के श्री साकेत गमन के बाद, हमारे चरित्रनायक को उनके सानिध्य एवं सत्सङ्ग से वञ्चित होना पड़ा। स्वभावतः उनके हृदय में उनकी प्रत्यक्ष अनुपस्थिति खटकने लगी और अभाव से हृदय में उदासी का वातावरण छा गया। करुणामयी श्री सिया स्वामिनी जू ही हमारे चरित्र-नायक की जीवन सर्वस्व थीं और उन्हीं की प्रसन्नता से परम लाड़ले राज राजेश्वर श्री रामभद्र जू प्रसन्न होते हैं एवं प्राप्त होते हैं, इस तथ्य में हमारे चरित्रनायक को अटूट एवं पूर्ण विश्वास था। इधर श्री सिया स्वामिनी जू भी नर रूप धारी अपने ही एक पार्षद को निराश अवस्था में नहीं देख सकती थीं यहाँ तो विशुद्ध निर्मल प्रेम हमारे चरित्रनायक के हृदय में भरा पड़ा था। अतएव, "प्रेम ते प्रकट होहिं मैं जाना" भगवान् शंकर द्वारा उद्घोषित इस विरदावली को सच्चा प्रेम पाकर चरितार्थ करना श्री सिया स्वामिनी जू के लिये आवश्यक हो गया। तदनुसार, उन्होंने छपरा जिले के सीवान अनुमण्डल के ही एक ग्राम माणिक पुर में पंडित श्री सिद्धेश्वर तिवारी के पुत्र के रूप में सन् १९२५ ई० में ही अवतार ग्रहण किया। श्री जानकी नवमी तिथि को ही आपका अवतार हुआ और अनेक विलक्षणताओं से भरा हुआ होने के कारण बालक का नाम श्री "मणिराम" रखा गया। ये सचमुच ही मणि के सदृश चमकने लगे। गौरांग तो ये इतने थे कि इन्हें देखते ही दर्शक बोल उठते कि बालक के अङ्ग-अङ्ग से ज्योति-सी निकल रही है। इनकी विलक्षणता का प्रचार दूर-दूर तक हो गया। इस नाते बालक दर्शन के हेतु पंडित श्री सिद्धेश्वर तिवारी के घर पर मेला-सा लगा रहता था एवं दर्शनार्थियों का तांता-सा लग गया। पंडित श्री सिद्धेश्वर तिवारी सपत्नीक हमारे चरित्रनायक के पूर्व में ही शिष्य हो चुके थे। अतएव, जन्म के बाद ही बालक की अद्भुतता का सुसमाचार हमारे चरित्रनायक को दे दिया गया था। श्री भगत जी के लगातार अस्वस्थ्य रहने के कारण हमारे चरित्रनायक को माणिकपुर आने का अवसर ही न मिल सका था। किसी प्रकार हमारे चरित्रनायक सन् .९२९ ई० में माणिकपुर ग्राम पधारे और बालक मणिराम का दर्शन कर तृप्त हो गये।

दर्शन के बाद जब हमारे चरित्रनायक ने श्री अवध के लिये प्रस्थान किया तब पंडित श्री सिद्धेश्वर तिवारी भी सपत्नीक अपने अनोखे बालक के साथ श्री अवध पधारे और अपने गुरुदेव के साथ ही ठठेरा मन्दिर में ठहरे। एक दिन श्री हनुमान् बाग में श्री विवहुती भवन के ही युगल लीला स्वरूप श्री सीताराम जी की झाँकी हुई, तो वहाँ भी हमारे चरित्रनायक के साथ माता-पिता सहित बालक मणिराम गये और वहाँ एकत्रित सभी सन्तों को दर्शनमात्र से इनकी ओर टकटकी लग गयी। कहा जाता है कि सबों ने हमारे चरित्रनायक से कहा और श्री हनुमन्त लाल जू से प्रार्थना की कि बालक मणिराम श्री सीता जू के रूप में शृङ्गार धारण कर श्री अवध के सन्तों को सुख प्रदान करें। लगता है कि सन्तों की प्रार्थना स्वीकृत हुई और श्री अवध रहते हुए चार सार साल की अवस्था में ही बालक लणिराम का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ और बालक ने आग्रह कर अपने माता-पिता से अनुरोध कराकर हमारे चरित्रनायक से ही श्री सीताराम मन्त्र भी ले लिया। इस प्रकार चार साल की अवस्था में ही उनकी भगवत शरणागति हो गयी। कुछ काल श्री अवध वास का सुख प्राप्त कर श्री सिद्धेश्वर तिवारी सपत्नीक बालक मणिराम के साथ घर लौटने को तैयार हो गये। प्रस्थान करने के समय उन्होंने अपने गुरुदेव से प्रार्थना की कि उनके ग्राम में पधारकर यथाशीघ्र श्री सीताराम विवाह तथा कलेवा उत्सव का सुख वहाँ के प्रेमियों को भी दें। इस प्राथना को हमारे चरित्र नायक ने स्वीकार कर लिया।

सन् १९३१ ई० में श्री रामनवमी के अवसर श्री राम जन्म उत्सव सम्पन्न कर हमारे चरित्रनायक

मिथिला अंचल में भ्रमण करने के लिये प्रस्थान कर गये। विवहुती भवन समाज के साथ वे भिन्न-भिन्न स्थल पर श्रीयुगल विवाह, कलेवा एवं रामार्चा का कार्य-क्रम सम्पादित करते हुए, आषाढ़ मास में श्री माणिकपुर ग्राम आ पहुँचे। यहाँ पहुँचकर पुराने युगल लीला स्वरूप की लीला विसर्जन कर नये लीला स्वरूप को पदासीन करने का निर्णय हुआ। निर्णय के अनुसार ही एक विप्र बालक श्री अवध बिहारी शरण को जो देखने में सुघर साँवले थे, श्री रामजी के पद पर प्रतिष्ठित किया गया और श्री सीता जी के पद पर प्रतिष्ठित करने के लिये गौर वर्ण के एक दूसरे विप्र बालक श्री कमलाशरण को पंच संस्कार कर पीत वस्त्र धारण कराया जाने लगा। उसी समय बालक मणिराम आ गये और उन्होंने हठपूर्वक हमारे चरित्रनायक से कहा कि श्री सीताजी के पद पर मुझे ही प्रतिष्ठित किया जाय। उनका हठ इतना बढ़ गया कि बड़े असमंजस की घड़ी आ गयी, उल्लास के समय विषाद का वातावरण बन गया क्योंकि अपने एकलौते पुत्र को लीला स्वरूप बनने के लिये पाँच सात साल छोड़ देना माता-पिता के लिये असह्य हो गया। हमारे चरित्रनायक को भी यह कहना पड़ा कि बिना माता-पिता की आज्ञा के मैं किसी को भी बाललीला स्वरूप के लिये ग्रहण नहीं करता हूँ। आप अपने माता-पिता के एक ही पुत्र हैं। इस अवसर पर बालक मणिराम को आवेश आ गया और वे बोल उठे कि यदि मैं आज ही भाग जाऊँ या मर जाऊँ तो माता-पिता क्या करेंगे। मुझे यही कार्य पसन्द है। मेरा यहाँ एक क्षण भी मन नहीं लगता है। माता-पिता भी आवाक् होकर सुन रहे थे और लाचार होकर उन लोगों ने अपनी स्वीकृति दे दी। फलस्वरूप, बालक मणिराम को ही श्री सीताजी के पद पर प्रतिष्ठित किया गया।

यही गौर श्याम की मधुर जोड़ी का श्री सीतारामजी के रूप में शृंगार हुआ। विवाह उत्सव के लिए एक नवीन विवाह मंडप का निर्माण किया गया और बड़े पैमाने पर विवाह कलेवा का आयोजन हुआ। इस विवाह की सूचना दूर-दूर तक फैल गयी और उत्सव में भाग लेने के लिये नर-नारियों का अपार समूह टूट पड़ा। विवाह कलेवा के अवसर पर अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति दर्शकों को हुई और ऐसा प्रभाव पड़ा कि मानों उन्हें साक्षात् श्रीसीताराम जी का दर्शन हो रहा हो। इस प्रकार सबों को सुख देते हुए हमारे चरित्रनायक श्रावण मास के प्रथम सप्ताह में श्री अवध के लिये चल पड़े। चलने के समय बालक मणिराम जी भी घर से अपना निजी सामान, वस्त्राभूषण आदि लेकर हमारे चरित्र नायक के साथ हो लिये। उन्होंने माता-पिता को स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मेरा सम्बन्ध आप लोगों से इतना ही था और मैं जीवन पर्यंत इसी रूप में रहकर शरीर त्याग करूँगा। आप लोग श्री अवध आकर ही हमसे मिला करेंगे। इन आश्चर्य चकित करने वाली बातों को अपने बालक के मुखसे सुनकर माता-पिता तो भौचक्का-सा हो गये। उधर हमारे चरित्रनायक ने मन-ही-मन पूर्णरूपेण समझ लिया कि बालक मणिराम सचमुच श्री सिया स्वामिनी जू के ही एक अवतारी रूप में हैं। अतएव, उन्होंने भी माता-पिता को समझाया कि आप इन्हें साधारण बालक न समझें, बल्कि इन्हें श्री सीताजी के ही रूप में जाने और माने, इसी में हम सबों का कल्याण है।

अनादिकाल से जितने भी साधक, उपासक या भक्त हुए हैं, सबों के हृदय में यह अरमान बना रहता है कि हमारी साधना उसी दिन सफल होगी जिस दिन उपास्यदेव की झाँकी एक क्षण के लिये भी उन्हें मिल पाये। सच्चे अनुराग के फलस्वरूप भक्तों को सशरीर भगवत् दर्शन हुआ भी है। यहाँ तो हमारे चरित्रनायक के उपास्य देव श्री सिया स्वामिनी जू एक क्षण के लिये कौन कहे, लगातार सात साल तक प्रकट रहकर बराबर साकेत सुख उन्हें इस धरा धाम पर ही दिया। चाहे वे शृंगार में रहीं या बिना शृंगार के, 'मैं सीता हूँ' यह भावावेश कभी कम नहीं हुआ। उनके भाव आचरण को देखकर सभी महात्मा सन्तों ने एक स्वर से उन्हें 'सिद्ध किशोरीजी' के नाम से विभूषित किया और श्री अवध आते ही 'श्री सिद्ध

किशोरी जी' के नाम से पुकारी जाने लगी। इस वेष में रहकर श्री सिद्ध किशोरी जी ने बिना पूछे अनेकों के हृदय की बात बतलायी, कई आर्त भक्तों के दुःखों का नाश किया और बराबर ही अपने जन के कष्टों का निवारण करती रहीं। अनेकों कुतर्कों एवं शंकाग्रस्त विद्वान् एवं ज्ञानी ध्यानी महात्मा उनकी सिद्धाई के प्रभाव में आकर बोल उठे' वे प्रत्यक्ष श्रीसीताजी के ही अवतार हैं।' परिणाम यह हुआ कि श्री अवध आने वाले भक्तों प्रेमियों के द्वारा श्री सिद्ध किशोरी जी के अवतार की चर्चा भारत वर्ष के हर कोने में फैल गयी। इस प्रकार बाहर से आने वाले दर्शकों, भक्तों एवं प्रेमियों के लिये श्री ठठेरा मन्दिर जहाँ श्री सिद्ध किशोरी जी रहती थीं, श्री कनक भवन एवं श्री हनुमान् गढ़ी के सदृश ही, नित्य दर्शन एवं पूजा का स्थल बन गया। अनेकानेक प्रकार के पकवान, वस्त्र, आभूषण आदि सामान, जो युगल जोड़ी को भेंट किये जाते थे, बराबर वितरण करने पर भी, ढेर के ऐसा लगा ही रहता था। दर्शनार्थियों का ताँता बराबर एक-सा लगा रहा और अलौकिक घटनायें भी सन् १९३१ ई० से लगातार सात वर्षों तक श्री सिद्ध किशोरी जी के जीवनकाल में होती रही। कहा जाता है कि भक्त कवि विद्यापति की पूजा से भी प्रसन्न होकर उनके उपास्यदेव भगवान् शंकर 'उदना' नामक सेवक बन कर अन्तिम कई वर्ष तक उनकी सेवा में रहे, पर उन्हें आवरण बना रहा और सेवक के हटने के बाद ही वे समझ पाये कि उनका नौकर भगवान् शंकर के सिवा दूसरा कोई नहीं था। यहाँ तो हमारे चरित्रनायक साकेत का साक्षात् सुख इस धरातल पर भोगते हुए स्वयं श्री किशोरी जी के परामर्श के अनुसार ही उत्सवों का दैनिक कार्यक्रम बनाते रहे। उन्हें नित्य प्रति यह ज्ञान बना रहा कि सिद्ध किशोरीजी के रूप में स्वयं श्री किशोरीजी ही उनके लाड़-प्यार एवं पथ-प्रदर्शन के लिये कृपा कर प्रकट हुई हैं। भक्ति इतिहास में ऐसे उदाहरण की समता बहुत कम दिखलाई पड़ती है, जैसी कि सच्चे अनुरागमय उपासना के फलस्वरूप हमारे चरित्रनायक के साथ हुआ। उनके साक्षात् होने के प्रमाण में अनेकानेक होने वाली घटनाओं में से कुछ का विवरण आगे के पृष्ठों में उल्लेखित किया जायेगा। अपनी इस अवधि के आन्तरिक सुख के सम्बन्ध में हमारे चरित्रनायक ने भाव भरे शब्दों में कहा था 'सो सुख जानइ मन अरु काना। नहिँ रसना पहँ जाइ बखाना॥'

श्री सिद्ध किशोर जी के जीवन-काल की चमत्कारी घटनाओं के कुछ नमूने—

(१) श्री अवध के प्रधान सन्तों में से श्री धर्म भगवान् भी एक सन्त हो गये हैं, जो श्रीगोलाघाट के श्री सद्गुरु सदन में एकान्त कुटिया में भजन किया करते थे। उन्होंने बतलाया था कि श्री सिद्ध किशोरी जी के सम्पर्क में आते ही उन्हें साक्षात् दर्शन का सुख प्राप्त हुआ। उन्हीं ने प्रथम-प्रथम श्री "सिद्ध किशोरी" नाम दिया और श्री अवध के सभी सन्त इससे सहमत हुए। एक घटना की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि एक दिन श्री सद्गुरु सदन में विवाह उत्सव के अवसर पर जी पुजारी जी महाराज (हमारे चरित्रनायक) ने विनोद में दुलहा श्रीराम से पूछा कि अभी भाँवरी का समय है, आपके पिताजी कहाँ हैं ? माताओं ने तो खीर खाकर आपको जनमाया है, अतएव, पिताजी का पता आप ही बतलावें। उस समय श्री अनन्त जानकी वर शरणजी महाराज के कृपा पात्र स्वामी श्री सत्याशरण जी महाराज एक कोने में बैठकर विवाह सुख ले रहे थे। इधर श्री सिद्ध किशोरी जी के संकेत पर श्री रामजी ने श्री सत्याशरण जी महाराज को ही इशारा करते हुए कहा कि हमारे पिता जी वहाँ बैठे हैं। ऐसा कहकर श्री रामजी ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा "पिताजी" इधर देखिये, मिथिला वासी मेरी खिल्ली उड़ा रहे हैं।" पुकार के शब्दों ने ऐसा जादू किया कि उक्त महात्मा जी को आवेश आ गया और उन्होंने श्री रामजी को "बेटा-बेटा" कह कर पुचकारने लगे और उन्हें अपनी गोद में उठा लिया। इस घटना का परिणाम यह हुआ कि उक्त महात्मा जी को गुरुदेव के दिये हुए भाव सम्बन्ध में परिवर्तन करना पड़ा और श्रीरामजी के द्वारा स्वीकृत

सम्बन्ध को ही उन्होंने मान लिया। उस दिन से वे जीवन पर्यन्त श्री चक्रवर्ती दशरथ जी का बहुमूल्य राजसी श्रृंगार कर श्री विवहुति भवन के अगहन शुक्ल पञ्चमी के प्रधान विवाहोत्सव में कानपुर से आकर भाग लेते रहे और श्री अवध में वे "बाबूजी" के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

(२) गोलाघाट के पास ही मकान बनाकर श्री लव-कुश शरण नाम के एक रिटायर्ड डिपुटी कलक्टर श्री अवध वास करते थे। वे हमारे चरित्रनायक की आज्ञा से श्री सिद्ध किशोरीजी युगल सरकार को पठन-पाठन कराने की सेवा करने लगे। अपने को वे श्री जनक मानते थे, इस नाते श्री सिद्ध किशोरी जी को "बिटिया, बिटिया" कहा करते थे। एक दिन उन्होंने श्री सिद्ध किशोरीजी से प्रार्थना की कि मुझे जल्दी ही साकेत पहुँचा दो। श्री किशोरी जी ने मुसकाते हुए स्वीकार किया। कुछ महीनों के बाद वे बीमार पड़े और उन्हें चङ्गा होने के लिये श्री धर्म भगवान् ने श्री सिद्धकिशोरी जी से प्रार्थना की और दर्शन देने का भी अनुरोध किया। जब कोई परिवर्तन नहीं हुआ तब श्री धर्म भगवान् ने हमारे चरित्रनायक से सारी बातें बतलायीं और कहा कि डिपुटी साहब के प्रति कठोरता का व्यवहार हो रहा है। यह जान कर हमारे चरित्रनायक ने श्री सिद्ध किशोरी जी से कहा, "अपने पिता जी के प्रति ऐसी कठोरता क्यों ?" श्री सिद्ध किशोरीजी ने उत्तर दिया कि उन्होंने तो साकेत गमन की प्रार्थना की है और अब आप सब उन्हें चङ्गा देखना चाहते हैं। उसी के अनुसार वे बीमार पड़े हैं और अपना अन्तिम भोग समाप्त कर आज की रात में ही साकेत वास कर जाँयेंगें। यह सुनते ही हमारे चरित्रनायक मौन हो गये और दूसरे दिन प्रातःकाल, जब वे गोलाघाट की ओर श्री सरयू स्नान को गये, तो उन्हें पता चला कि लव-कुश शरण जी का देहान्त हो गया।

(३) एक साल की बात है कि श्री विवहुती भवन का झूला किसी कारण वस भादो कृष्ण पञ्चमी के अवसर पर न होकर पौष मास में रखा गया। उस झूले में श्री दुर्गादत्त जी रिटायर्ड डिपुटी कलक्टर भी सम्मिलित हुए। वहाँ बैठे-बैठे वे सोचने लगे कि झूला का सुख तो वर्षाकाल में ही विशेष मिलता है, पर महात्माओं को कौन कहे। श्री सिद्ध किशोरी जी ने उनकी ओर देखा और मुसका गयीं। डिपुटी साहब को भी बुझा गया कि सिद्ध किशोरी जी मेरे मन की बात जान गयीं। एक घण्टे के अन्दर ही निर्मल आकाश में काली मेघ मालायें छा गयीं। मुसलाधार वृष्टि होने लगी, पपीहा, मोर कोयलों की आवाज भी सुनायी पड़ी। सभी आश्चर्यचकित होकर देखने लगे कि यह कैसे हो गया और डिपुटी साहब तो मन-ही-मन बहुत संकुचित हो गये।

(४) श्री जानकी घाट अवध निवासी महात्मा श्री सियारामदास जी का कथन है कि मुजफ्फरपुर जिले के भक्त श्री बाबू रामदेनी सिंह की जन्म भूमि वृन्दावन में श्री विवहुति भवन समाज के साथ वे भी गये हुए थे। वहाँ श्री नाम नवाह, श्री रामार्चा, श्री विवाह एवं कलेवा का सुख लगातार कई दिनों तक बरसता रहा। महात्मा जी स्वयंपाकी होने के नाते अपना भोग अलग बना लिया करते थे। एक दिन उन्होंने दोपहर में सत्तू भोग में तुलसीदल छोड़कर आँखें मूँद भगवान् का ध्यान करने लगे। नेत्र खोलते ही उन्होंने पाया कि श्री सिद्ध किशोरी जी उनके द्वारा भोग लगाया हुआ सत्तू स्वयं पा रही हैं। महात्मा जी के हृदय में भेद बुद्धि थी और श्री किशोरी जी में उनकी पक्की निष्ठा नहीं थी। अतएव, उन्होंने जूठे सत्तू को अलग रख दिया और पुनः दूसरी बार भी उसी प्रकार से तुलसी दल छोड़कर भगवान् को भोग लगाया और पुनः ध्यान करने लगे। इस बार भी नेत्र खोलने के बाद पुनः श्री सिद्ध किशोरी जी को सत्तू पाते देखा, तब मन-ही-मन खीझ गये। हमारे चरित्रनायक के पास जाकर उन्होंने उलाहना भी दिया। इस पर श्री सिद्ध किशोरी जी ने कहा कि यदि कोई मुझे बीस बार भी आवाहन कर

भोग लगायेगा तो मुझे जाना ही पड़ेगा। एक ओर तो महात्मा जी श्री राम उपासक बनते हैं और दूसरी ओर जब मैं उनका भोग पाने साक्षात् जाती हूँ तो इस प्रकार तिरस्कार करते हैं। यह जानकर श्री सियाराम दास जी बड़े ही लज्जित हुए और बचे हुए शीथ प्रसाद को प्रेम पूर्वक पा गये। इन्हीं सन्त के साथ श्री गया धाम में खिचड़ी भोग लगाते समय भी ऐसी ही घटना हुई। उसी समय श्री विवहुति भवन समाज का ज्योनार भी हो रहा था और इधर वे खिचड़ी भोग लगा रहे थे। इस बार उन्होंने श्री सिद्ध किशोरी जी युगल सरकार को अपने यहाँ खिचड़ी पाते देखा और जमात के जेवनार में भी बैठकर पाते देखा। इस बार उनकी शङ्का पूर्ण रूपेण समाप्त हो गयी और उन्होंने मान लिया कि श्री सिद्ध किशोरी जी साक्षात् श्री सिया जू के अवतार ही हैं।

(५) जब श्री विवहुति भवन समाज गया शहर में पधारा तब वहाँ कई दिनों तक श्री विवाह, कलेवा, रामचर्चा आदि उत्सव चलते रहे। श्री विभूति नाथ झा, जो मुजफ्फरपुर जिले के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के पद पर प्रोन्नत होने के बाद ही दिवंगत हुए, उस समय गया में ही डिपुटी मजिस्ट्रेट के पद पर पदस्थापित थे। उन्हें भी श्री सिद्ध किशोरी जी के दर्शन से बहुत आनन्द मिला और उनके प्रभाव में आकर वे नित्य आकर उनकी सेवा पूजा करने लगे। जब श्री सिद्ध किशोरी जी गया से प्रस्थान करने लगीं तब श्री झा ने अपनी विभागीय परीक्षा में उत्तीर्ण होने का आशीर्वाद माँगा, क्योंकि बिना परीक्षा पास किये उनकी उन्नति रुकी रह जाती। श्री सिद्ध किशोरी जी ने उन्हें सहर्ष आशीर्वाद दिया। इसके बाद श्री विवहुति भवन समाज भ्रमण करता हुआ उत्तर प्रदेश के देउरिया ग्राम आ पहुँचा। इसी स्थान पर श्री विभूतिनाथ झा का एक पत्र आया कि सफलता की सूची में उनका नाम अखबार में नहीं छपा। यह पत्र जब श्री सिद्ध किशोरी जी को सुनाया गया, तब उन्होंने कहा कि यह सरासर गलत है। वे अवश्य पास कर गये हैं। हुआ भी ऐसा ही। तीन चार दिनों के बाद ही पुनः श्री झा का पत्र आया कि उनका नाम सरकारी गजट में सफलता की सूची में आ गया है। इस प्रकार सभी लोग श्री किशोरी जी के अन्तर्यामीपने से बहुत ही मुग्ध हुए।

(६) एक बार स्वयं हमारे चरित्रनायक को आवश्यक कार्यक्रम से अकेले बरेली जाना था और उन्होंने जाने के लिये श्री सिद्ध किशोरी जी से आज्ञा माँगी। इस पर श्री किशोरी जी ने बतलाया कि आपके चाचा जी, जो कई दिनों से बीमार हैं, आज के पाँचवें दिन साकेत गमन करेंगे। इसका विचार करते हुए ही आप अपने भ्रमण का कार्यक्रम बनावें। हमारे चरित्रनायक को रुक जाना पड़ा और ठीक पाँचवें दिन श्री राम सुन्दर पांडेय जी का शरीर छूट गया।

(७) श्री अवध में रहते हुए एक दिन प्रातःकाल उठने के साथ ही श्री सिद्ध किशोरी जी ने हमारे चरित्रनायक से आधा सेर गाय का दूध मँगवा देने को कहा। पर, अन्य कार्यों में व्यस्त रहने के कारण हमारे चरित्रनायक इस बात को भूल गये। कहा जाता है कि उस दिन सात बजे भोर से ही गाय के दूध का आना आरम्भ हुआ और सात बजे सन्ध्या तक एक मन से भी अधिक गाय का दूध आ गया। जितने भी लोग उस दिन दर्शन को आये, सबों को ऐसी ही प्रेरणा हुई कि आज श्री सिद्ध किशोरी जी को दूध का बना बढ़िया सामान ही भोग लगे। सबों ने हमारे चरित्रनायक से प्रार्थना की कि आज दूध का बढ़िया सामान बनाकर श्री युगल सरकार को भोग लगाने की कृपा करें। इधर हमारे चरित्रनायक अपनी असावधानी के लिये मन-ही-मन पछताते रहे। एक दूसरी घटना इसी प्रकार की मूँग की गरम पकौड़ी के सम्बन्ध में हुई। श्री सिद्ध किशोरी जी ने एक सन्त श्री लक्ष्मण शरण जी से कहा कि ताजी मूँग की पकौड़ी मुझे खिलाओ। सन्ध्या का समय था। श्री सन्त जी ने कहा कि सामान लाते बनाते देर हो जायेगी। अतएव कल

के लिये आज्ञा दी जाय। यही बात-चीत हो रही थी कि श्री हनुमत निवास के श्री ऊर्मिला शरण जी श्री सिद्ध किशोरी जी युगल सरकार के पास मूँग की गर्म पकौड़ी लिये हुए आये और उन्होंने उनसे पाने का अनुरोध किया। जैसे श्री युगल सरकार मूँग की पकौड़ी पाने लगे, उधर श्री दुर्गादत्त जी के यहाँ से भी गर्म-गर्म पकौड़ी आ पहुँची। आठ बजे रात तक, इस प्रकार, मूँग की गर्म पकौड़ियों का आना जारी रहा और सब से अन्त में श्री लव-कुश शरण जी के यहाँ से मूँग की दाल की गर्म पकौड़ी आने के बाद पकौड़ियों का आना बन्द हो गया।

इन घटनाओं से या आगे उल्लेखित होने वाली घटनाओं से स्पष्ट है कि श्री सिद्ध किशोरी जी अन्तर्यामी, वाक्‌सिद्ध एवं जीवन मरण की जानने वाली थीं। उनकी सत्ता सर्वव्यापक थी, इसीलिये उनकी ही इच्छा सबकी इच्छा बन गई, जैसा कि दूध पकौड़ी वाली घटना से प्रगट है।

यदि हमारे चरित्रनायक का प्रेमावतार न हुआ होता तो भक्तों, सन्तों एवं प्रेमी जनों को जो अनिर्वचनीय आनन्द श्री सिद्ध किशोरी जी युगल जोड़ी द्वारा सात वर्षों तक बरसता रहा वह कैसे प्राप्त होता? श्री सिद्ध किशोरी जी तो उन्हीं के अनुपम प्रेम से प्रगट हुई, पर आनन्द तो सभी को मिला। सचमुच में तो श्री सिद्ध किशोरी जी की जीवनी हमारे चरित्रनायक की ही जीवनी है। भक्त भगवान्, प्रेमी एवं प्रेमास्पद में भेद कहाँ? एक ही तत्व के दो रूप हैं। लीला दोनों ही रूप से होती है। एक करता और एक कराता है। धन्य हैं हमारे चरित्रनायक, जिनके अनुपम त्याग, तपस्या एवं प्रेम के फलस्वरूप हम लोगों को ऐसे अकथनीय जीवन-चरित्र से प्रेरणा एवं प्रकाश मिल पा रहा है। इसके बाद श्री सिद्ध किशोरी जी के भ्रमण काल में जो विशेष घटनाएँ हुई हैं उन स्थलों में से भी कुछ चर्चा निम्नांकित पंक्तियों में दे दी जा रही है।

श्री चित्रकूट धाम में दो अद्वितीय श्री सीताराम विवाह उत्सव—अनेकानेक सन्त महात्माओं द्वारा बार-बार अमन्त्रित किये जाने पर हमारे चरित्रनायक श्री युगल सरकार एवं श्री विवहुति भवन साज समाज तथा सन्त महात्माओं की टोली के साथ सन् १९३६ ई० के कार्तिक मास में श्री चित्रकूट जानकी कुण्ड आश्रम पर आ पहुँचे। स्वागतार्थ सन्त महात्मा एवं प्रेमियों का एक विशाल जन समूह एकत्रित हो गया और आरती पूजा के साथ श्री युगल सरकार एवं हमारे चरित्रनायक का भव्य स्वागत हुआ। एक संन्यासी महात्मा, श्री मस्त राम जी ने जो तीन चार साल आगे से ही श्री सिद्ध किशोरी जी की सेवा में रहते थे, आते ही अपने पूर्व परिचित प्रमी श्री कर्वी स्थान के अधिकारी श्री राम गोपाल दास जी को श्री सिद्ध किशोरी जी युगल सरकार के आने की सूचना दे दी। सूचना पाते ही वे भी अपने गुरु देव से आज्ञा लेकर, थाल में भोग सामान सजाये हुए श्री युगल सरकार के पास श्री जानकी कुण्ड पहुँचे। श्री अधिकारी जी भोग सामान लिये हुए श्री राम जी की ओर लपके जा रहे थे तो रास्ते में ही उन्हें यह आवाज सुनायी पड़ी "भैया जी दण्डवत्।" श्री अधिकारी जी ने घूम कर देखा तो पता चला कि एक गौरांग बालक ऐसा बोल रहा है। वे भी जै सीता राम कहकर आगे बढ़ते ही गये। पर, वहाँ केवल श्री राम जी को ही पाया। श्री मस्त राम जी ने श्री अधिकारी जी का परिचय श्री राम जी से कराया, जिन्होंने सहर्ष उनके द्वारा प्रस्तुत भोग को ग्रहण किया और शीथ प्रसाद उन्हें दिया। एक थाल श्री अधिकारी जी श्री सिद्ध किशोरी जी के लिये रखे हुए थे। श्री मस्त राम जी के कहने पर कि श्री सिद्ध किशोरी जी तो उधर ही खेल रही हैं, श्री अधिकारी जी उस थाल को लिये हुए उनके पास पहुँचे और पूर्व में न पहचानने के लिये क्षमा प्रार्थना की। श्री किशोरी जी विहंसती हुई एवं उनके मस्तक को अपने हस्त कमल से स्पर्श करती हुई पुनः बोल उठी "भाई अपनी बहन को भले ही भूल जाय, पर बहन भाई को कैसे भूल सकती है।"

उन्होंने भी भोग ग्रहण कर शीथ प्रसाद श्री अधिकारी जी को दिया। श्री किशोरी जी के शब्द श्री अधिकारी जी के हृदय में जादू के जैसा चुभ गये। उन्होंने सोचा कि ये अनायास मुझे भाई के रूप में स्वीकार कर रहीं हैं और श्री राम जी बहनोई बन रहे हैं, तब सोचने का अवसर ही कहाँ? "तेरी रजाई में मेरी रजा है।" लौटकर सारा वृतान्त श्री अधिकारी जी ने अपने गुरुदेव से कहा। उन्होंने अपने द्वारा दिये गये भाव-सम्बन्ध में परिवर्तन करने की आज्ञा दे दी। श्री अधिकारी जी श्री गुरु आज्ञा पाकर पुनः श्री सिद्ध किशोरी जी के पास वापस आ गये। इस बार तो श्री युगल सरकार को एक ऊँचे आसन पर बैठा कर सन्तों की टोली चारों ओर से घेर हुए चकोरवत् छवि पान कर रही थी। जैसे श्री अधिकारी जी सामने आये श्री सिद्ध किशोरी जी ने "भैया, भैया" कहते उन्हें बुला कर अपने साथ बैठा लिया और श्री राम भद्र जू से बतलाया कि यही हमारे भाई श्री लक्ष्मीनिधि हैं। अब क्या था, श्री सिद्ध किशोरी जी की यह कृपा देख कर सारा सन्त समाज विलख पड़ा और भैया जी तो बेसुध आँसू बहाते रहे। अब से श्री राम गोपाल दास जी "अधिकारी" ने तो भीतर में साधु वेष लँगोटी अँचला धारण किये हुए ऊपर में राजसी पोशाक भैया श्री लक्ष्मीनिधि के भावानुसार धारण कर लिया। आजीवन वे श्री बिवहुति भवन के सभी प्रधान विवाह उत्सवों में इसी भाव-वेष से सम्मिलित होते रहे और उन्होंने भैया लक्ष्मीनिधि के रूप से सभी को अपार सुख दिया।

श्री चित्रकूट धाम में श्री युगल विवाह एवं कलेवा का आयोजन यहाँ की सन्त-मण्डली द्वारा बड़े उल्लासमय वातावरण में विशाल पैमाने पर किया गया। सन्त महात्माओं के अतिरिक्त आस-पास के ग्राम्य क्षेत्रों से भी अनेकानेक लोग शुभ विवाह देखने के लिये आ पधारे। विहार से भी पटना, मुजफ्फरपुर एवं गया जिले से बहुत से प्रेमी श्री चित्रकूट धाम के इस प्रथम विवाह उत्सव में आये। यहाँ पर तीन चार दिनों तक एक मेले का रूप बना रहा। रात्रि में ही विवाह कलेवा उत्सव सम्पन्न हुए। जिस समय दुलहिन-दुलहा वेष में, बारात नगर भ्रमण के बाद, श्री युगल सरकार विवाह मण्डप में पधारे सबों को साक्षात् सुख का ही आनन्द प्राप्त होने लगा और विभोरावस्था में ही दर्शक मण्डली ने विवाह कलेवा आनन्द का उपभोग किया। सारे वातावरण में दिव्य दर्शन एवं दिव्य भावना का उदय हुआ और किसी को यह भान नहीं रहा कि यहाँ कोई लीला हो रही है। ऐसा अनुभव महात्माओं ने किया कि यहाँ के गुप्त प्रगट सन्त महात्मा एवं देवी देवताओं ने पधार कर श्री सीताराम जी दुलहिन-दुलहा रूप की झाँकी प्रदर्शन किया और निहाल हो गये।

इसी अवसर पर पटने से प्रेमियों के जमात ने पटने में विवाह उत्सव कराने के लिये तिलक चढ़ाया। इस जमात में श्री जगत नारायण सिंह भी थे, जो मुजफ्फरपुर के हमारे चरित्रनायक के कृपा पात्र श्री रामदेनी बाबू के साथ यहीं पधारे थे। इनकी अन्तरस्थ भावना के अनुसार श्री सीताराम जी उनके माता-पिता थे। जैसे ही श्री जगत बाबू को श्री सिद्ध किशोरी जी ने देखा, उन्हें 'बबुआ, बबुआ' कहकर पुकारने लगीं और माता-पिता के सम्बन्ध भाव पर एक प्रकार से स्वयं श्री किशोरी जी ने मुहर लगा दिया। तब से श्री जगत बाबू श्री विवहुती भवन समाज में "बबुआजी" के नाम से विख्यात हो गये। आगे चलकर श्री सिद्ध किशोरीजी ने ही इन्हें हमारे चरित्रनायक द्वारा श्री सीताराम मन्त्र दिलवा दिया।

श्री चित्रकूट से जब पटना जाने की तैयारी होने लगी तो इलाहाबाद मुट्ठीगंज के एडवोकेट बाबू रामनामा प्रसाद जी की बहन ने, जो कई दिनों से वहाँ विवाह कलेवा का आनन्द ले रही थीं, हमारे चरित्रनायक से अनुरोध किया कि पटना जाते समय एक रात्रि इलाहाबाद में रुककर श्री युगल झाँकी का सुख उनके भाई के घर पर दें। यह प्रार्थना स्वीकार हो गयी। इधर श्री भैया जी समाज से अलग रहना

नहीं चाहते थे। भगवत प्रेरणावश एक केस की पैरवी में उन्हें भी इलाहाबाद श्री रामनामा बाबू के यहाँ ही जाने का आदेश मिला। श्री भैयाजी श्री किशोरी जी से यह कहकर आगे बढ़े कि मैं कल आपके स्वागत में इलाहाबाद स्टेशन पर सवारी लेकर रहूँगा। श्री राम नामा बाबू के घर पहुँचने पर श्री भैया जी को बुखार आ गया और श्री रामनामा बाबू ही सवारी लेकर श्री युगल सरकार के स्वागत के लिये स्टेशन पर गये। जैसे समाज श्री रामनामा बाबू के घर पर पहुँचा, श्री सिद्ध किशोरी जी तुरन्त श्री भैया जी के कमरे में चली गयीं और बोल उठीं कि आप स्टेशन नहीं आये। आपको तो बुखार नहीं मालूम पड़ता है। एक डाक्टर साहब ने जो वहीं बैठे थे, थर्मामीटर लगाकर दिखला दिया कि इन्हें एक सौ चार डिग्री बुखार है। इस पर श्री किशोरी जी ने कहा कि यह कैसे हो सकता है ? पुनः थर्मामीटर लगाया गया तो मात्र छियानवे डिग्री तापमान पाया गया। इस पर डाक्टर समेत सभी दङ्ग हो गये और श्री भैयाजी पूर्ण स्वस्थ होकर उठ बैठे। यहाँ भी हजारों लोगों की उपस्थिति में एक रङ्गीली झाँकी हुई, जिसमें अपूर्व आनन्द की वर्षा हुई। सभी गद्गद होकर प्रसाद ले अपने-अपने घर लौट गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल इलाहाबाद से प्रस्थान कर हमारे चरित्रनायक पटना पहुँचे और गर्दनी बाग श्री रामदेनी बाबू के निवास स्थान पर सारे समाज को ठहराया गया। श्री शुभ विवाह से आरम्भ कर चौथारी उत्सव तक का आयोजन श्री गर्दनी बाग ठाकुरबाड़ी के प्रांगण में बड़े ही धूम धाम से हुआ। बारात नगर भ्रमण के समय हाथी, घोड़े, नालकी, पालकी, मोटर, फिटन आदि सभी सवारियों को सुसज्जित कर श्री दुलहा सरकार एवं सन्त महात्मा की सवारी के लिये उपस्थित किया गया। जब जैसी रुचि होती थी मार्ग में दुलहा सरकार उन्हीं सवारियों पर चढ़ते थे। दुलहा परिछन के समय श्री मिथिला जी के प्रेमी सन्त श्री मोदलता जी एवं श्री स्नेहलता जी ने अपने साज समाज के साथ ऐसे ढङ्ग से परिछन का पद गाते हुए नृत्य किया कि दर्शकों को तो वही सुख मिला जो त्रेतायुग में श्री जनकपुर वासियों को मिला था। इस विवाह में योग दान देने वाले तथा भाग लेने वालों में श्री ब्रजेन्द्र प्रसाद "सदराला साहब" श्री बलदेव बाबू, मन्त्री, हरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन, श्री जटाधारी प्रसाद, रिटायर्ड पुलिस अफसर तथा श्री जगत नारायण सिंह "श्री बबुआ जी" के नाम उल्लेखनीय हैं।

कलेवा उत्सव के दिन जब हमारे चरित्रनायक मङ्गल हल्दी संयुक्त दधि का छिड़काव, पद गाते हुए दर्शकों पर कर रहे थे तो उन्होंने भावावेश में दधि हलदी भरे मिट्टी के पात्र को ऐसा फेंका कि वह "श्री बबुआ जी" के मत्थे पर आकर फूट गया, परन्तु उसके स्पर्श मात्र से ही जगत बाबू को भाव समाधि हो गयी। कई दिनों तक वे भावावेशित अवस्था में डूबे रहे और आगे चलकर हमारे चरित्रनायक की कृपा से पूर्ववत् हो गये। यह भी एक अनोखी घटना पटने के शुभ विवाह के अवसर पर हुई, जो हमारे चरित्र-नायक के ही आन्तरिक महत्व का सूचक है।

पटने से प्रस्थान कर हमारे चरित्रनायक अपने समाज के साथ अगहण मास के द्वितीय सप्ताह में श्री अवध वापस आ गये। आते ही अगहण शुक्ल पञ्चमी के अवसर पर होने वाले प्रधान ववाह उत्सव की तैयारी में लग गये। श्री ठठेरा मन्दिर के ही विवाह मण्डप में विवाह उत्सव का आयोजन हुआ। इस बार तो भारतवर्ष के सुदूर क्षेत्रों से भी नेमी-प्रेमी, साधु-महात्मा, राजे-महाराजे, पूरे साज-समाज के साथ पधारे हुए थे। सबों के संयुक्त प्रयास से बारात जुलूस की अभूत पूर्व तैयारी हुई, जिसमें सवारी के लिये हाथी, घोड़े, पालकी, नालकी, हैदल, पैदल का सुन्दर प्रबन्ध किया गया। जिस समय बारात श्री अयोध्या जी से निकलकर नगर भ्रमण में चली तो मार्ग की दोनों ओर की छतों पर नर-नारी, सन्त महात्मा का समाज बैठकर ऊपर से पुष्प वर्षा कर रहा था, प्रत्येक मन्दिर एवं

घरों के पास रुककर दुलहा सरकार की आरती पूजा की गयी, मालायें अर्पित की गयीं एवं सुगन्धमय जल के फुहारे वर्षाये गये। लगता है कि इस वर्ष समस्त मिथिला के प्रेमी टूट पड़े थे, कीर्तन मंडलियों ने लगातार युगल सरकार की झाँकी एवं विवाह के पद गाकर विवाह रस से परिपूर्ण कर दिया। दुलहा सरकार कभी घोड़े पर चढ़ते तो कभी हाथी पर, कभी पालकी पर चढ़ते तो कभी फिटन पर आ जाते और मार्ग में मधुर मुसकान युक्त छवि माधुरी का पान दर्शकों को कराकर उन्हें प्रेम विभोर कर देते थे। समाज की ऊँची-सी-ऊँची प्रतिष्ठा वाले सज्जन भी बारात के जुलूस में सम्मिलित थे। इस प्रकार बेसुध एवं प्रेम विभोर सन्त, भक्त, प्रेमी एवं कीर्तन मंडलियाँ गाते बजाते श्री जनक द्वार (श्री ठठेरा मन्दिर) आठ बजे रात्रि में पहुँची। श्री जनक द्वार पर पहले हाथी पर परिछन हुआ, नाद सुसज्जित रथ पर। हमारे चरित्रनायक के साथ और अलग-अलग भी युवतियों एवं प्रेमियों का जत्था, जो जहाँ थे वहीं से दुलहा सरकार के परिछन का पद गा कर नृत्य करने लगे। रंग बिरंगी आतिशबाजियाँ छूटने लगीं और पड़ाके के धड़ाके से एक चहल-पहल-सा मच गया। सारा अवध मानों मिथिला बन गया। इस प्रकार इस वर्ष श्री सिद्धकिशोरी जी की कृपा से श्री सीताराम विवाह कलेवा एवं चौथारी उत्सव में और वर्षों से कहीं अधिक सुख दर्शकों एवं नेमी-प्रेमी को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर श्री कर्वा स्थान के अधिकारी श्री राम गोपालदास जी ने "श्री भैया लक्ष्मी निधि" के रूप में और कानपुर से आकर श्री स्वामी सत्याशरण जी महाराज ने राजसी पोशाक धारण किये हुए श्री चक्रवर्त्ती महाराज दशरथ जी के रूप में दर्शकों एवं प्रेमियों को अपार सुख दिया—

"यह शोभा सुसमाज सुख, बरनिन बनें खगेश।"

श्री चौथारी उत्सव के बाद श्री सिद्ध किशोरी जी की प्रेरणा से इस विशाल पैमाने पर साधु एवं कँगला भँडारा का आयोजन किया गया। श्री अवध के सभी महन्तों के अतिरिक्त जितने भी सन्त महात्मा श्री अवध वास करते थे, उन सबों के बीच में यह सूचना दे दी गई कि इस भण्डारे में किसी के लिये रोक नहीं लगी है। इस वर्ष से ही विवहुति भवन का भण्डारा "श्री किशोरी जी के भण्डारा" के नाम से पुकारा जाने लगा। इस भण्डारे की विशेषता 'यह रही कि प्रचुर मात्रा में सबों को पवाने के बाद भी भोग सामान अवशेष रह गये। इस वर्ष से श्री किशोरी जी का भण्डारा इसी पैमाने पर हमारे चरित्र-नायक के जीवन में बराबर होता रहा क्योंकि श्री सिद्ध किशोरी जी की ऐसी ही कामना थी और उनकी कृपा भी बराबर इसी प्रकार बनी रही।

श्री अवध में भण्डारा उत्सव सम्पन्न करने के बाद हमारे चरित्रनायक बाहर भ्रमण में जाने के लिये यात्रा मुहूर्त की खोज कर रहे थे। उसी समय श्री सिद्ध किशोरी जी ने उनसे कहा कि श्री हजारा बाबा, जिसकी सेवा आप कई वर्षों से करते आ रहे हैं, आज के तीसरे दिन परधाम सिधारेंगे। श्री सिद्ध किशोरी जी की भविष्य वाणी तो आगे से ही सिद्ध प्रमाणित हो चुकी थी, इसलिये हमारे चरित्र-नायक ने बाहर जाने का कार्यक्रम थोड़े काल के लिये बन्द रखा। श्री हजारा बाबा निर्धारित समय पर परधाम चले गये और उनकी अन्तिम क्रिया भण्डारा आदि समाप्त कर ही श्री किशोरी जी की आज्ञा से बाहर जाने का कार्यक्रम तै हुआ।

अपने समाज के साथ हमारे चरित्रनायक, जिसमें भैया श्री लक्ष्मीनिधि भी थे, कानपुर पहुँचे, जहाँ श्री चक्रवर्त्ती दशरथ जी महाराज के रूप में स्वामी श्री सत्या शरण जी महाराज निवास करते थे। श्री अवध से श्री धर्म भगवान् आदि कई सन्त यहाँ के उत्सव में भाग लेने के लिये आगे ही आ चुके थे। कानपुर स्टेशन पर जब श्री सिद्ध किशोरी जी युगल सरकार पहुँचे तब यहाँ के नागरिकों एवं सन्त-

महात्माओं के द्वारा बाजे–गाजे के साथ उनका स्वागत किया गया। हजारों की संख्या में लोग जय-जय-कार करते हुए विभिन्न सवारियों के साथ बादशाही नाका में सेठ श्री तुलसी राम-राम दयालजी के मन्दिर पर पहुँचे। आठ दस दिनों तक वहाँ श्री विवाह कलेवा उत्सव एवं श्री युगल झाँकी का समारोह होता रहा। वहीं पर एक दूसरे प्रेमी श्री लक्ष्मीनारायण पाण्डेय जी के यहाँ भी श्री विवाह कलेवा उत्सव बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। कानपुर वासी नेमी-प्रेमी, भक्त सन्त तो हर प्रकार से कृतार्थ हो गये। नाना प्रकार के वस्त्राभूषण से युक्त कराकर श्री सीताराम जी युगल सरकार की विदाई नेत्रों से प्रेमाश्रु बहाते हुए ठीक उसी प्रकार से हुई जिस प्रकार विवाह के बाद अपने बेटी दामाद को लोग विदा करते हैं।

फतेहपुर शहर के अन्तर्गत श्री सीताराम मन्दिर गुरधौली के महान्त श्री सियाराम शरण जी के निमन्त्रण पर हमारे चरित्रनायक फतेहपुर आ पहुँचे। वहाँ भी हाथी, घोड़े, बाजे-गाजे के साथ बारात का जुलूस निकाला गया और श्री विवाह एवं कलेवा उत्सव पूरे विधान के साथ सम्पन्न हुआ।

फतेहपुर में श्री सिद्ध किशोरी जी द्वारा एक पंडित की आन्तरिक शङ्का का निवारण— फतेहपुर के पण्डित श्री बाबू राम जी के मन में यह शङ्का हो गयी कि लड़के का दूसरे लड़के के साथ विवाह करना तो अनर्थ है। पर, उन्हें खुले तरीके से यह प्रश्न पूछने की हिम्मत नहीं हुई। जैसे वे श्री विवहुती भवन समाज के पास आये, अनजान होते हुए भी संकेत कर उन्हें श्री सिद्धकिशोरी जी ने बुलाया एक बीड़ा पान देते हुए उनसे हँस कर बोल उठी कि "आपको पण्डित होने पर भी यह शङ्का होती है कि श्री सीता राम विवाह उत्सव में एक लड़के का विवाह दूसरे लड़के से होता है।" इस संदर्भ में श्री सिद्ध किशोरी जी ने उन्हें जो समझाया इसका सारांश यह है कि सचमुच विवाह होना और उस सच्चे विवाह की लीला करना दोनों दो बातें हैं। राजा हरिश्चन्द्र तो एक ही हुए और उनकी रानी शैव्या भी एक ही थी और उनका विवाह भी एक ही बार हुआ था। पर उनके सारे जीवन की लीला आज भी भिन्न-भिन्न पात्रों द्वारा अभिनीत होती है। इसी प्रकार यहाँ भी श्री सीताराम विवाह की लीला होती है, जिसमें एक लड़का पुरुष का पार्ट करता है और दूसरा स्त्री का। जो पुरुष बनता है उसकी भाव-मुद्रायें पुरुषवत् होती हैं और जो स्त्री बनता है उसकी भाव-भंगियाँ स्त्रीवत्। नाटक में तो आपने देखा ही होगा कि आवश्यकतानुसार पुरुष भी स्त्री का अभिनय करते हैं और स्त्री भी कभी-कभी पुरुष का अभियय करती हैं। ऐसा करने से उनका अपना रूप गुण नहीं बदल जाता। प्रेमियों पर लीलाओं का प्रभाव भावानुकूल ही होता है। यदि आप लीला स्वरूपों को बच्चा रूप में देखें तो आप पर कोई दिव्य प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके विपरीत यदि आप यह भाव करें कि सर्वव्यापक भगवान् की सत्ता ही इन बच्चों के रूप में श्री सीता राम बन कर आयी है और आप श्री सीताराम के प्रति अपनी श्रद्धा भावना को अर्पण करें तो इन बालकों के माध्यम से भी आपको इष्टदेव की दिव्य झाँकी मिल जायगी। सत्य हरिश्चन्द्र नाटक देख-कर कुछ लोग रो पड़ते हैं और कुछ लोग हँसते ही रहते हैं। इसका मूल कारण उनकी आन्तरिक भावना ही है, क्योंकि कहावत भी है "मानिये तो देव और नहीं तो पत्थर" "भाववस्य भागवान्" आदि।

श्री पण्डित जी तो बिना पूछे ही उत्तर पाकर हक्का बक्का हो गये और उन्होंने बार-बार क्षमा याचना की।

इसके बाद गुरधौली से चलकर सारा समाज हमारे चरित्रनायक के अनन्य प्रेमी श्री पण्डित शीतल दीन जी के यहाँ फरुखाबाद पहुँचा। यहाँ के उत्सवों की विशेषता यह रही कि हिन्दू वर्ग के साथ-साथ मुसलमान वर्ग भी श्रद्धा पूर्वक काफी संख्या में आये और श्री सीताराम जी युगल सरकार को मालायें अर्पित कीं।

भक्तवर श्री रामाजी के सरेयाँ आश्रम पर श्री सिद्ध किशोरी जी सहित हमारे चरित्र-नायक का शुभ आगमन---यह उल्लेखनीय है कि सन् १९०८ ई० में भक्तवर श्री रामा जी के साकेत
गमन के बाद सरेयाँ में दो तीन वर्षों तक कोई विशेष उत्सव या आयोजन नहीं हो पाया। इसका कारण
यह था कि इस ग्रम के प्रधान श्री राजा बाबू और श्री नगीना बाबू हमारे चरित्रनायक को हसनपुरवा
ग्राम के एक पण्डित जी के रूप में ही जानते और मानते थे। उनकी मनोभावना थी कि जैसे श्री भगतजी के
प्रेमी सरेयाँ के लोग थे उसी प्रकार हसनपुरवा से उनके प्रेमी हमारे चरित्रनायक थे। सन् १९३१ ई० में
दरभंगा के प्रेमियों से आमन्त्रित होकर हमारे चरित्रनायक श्री सिद्ध किशोरी जी युगल सरकार के साथ
दरभङ्गा पधारे। वहाँ पर श्री विवाह कलेवा उत्सव का बड़े पैमाने पर आयोजन हुआ और दूर-दूर से
लोग उत्सव में सम्मिलित होने के लिये हजारों की संख्या में आये। उस अवसर पर अनायास सरेयाँ
के कुछ प्रेमी, जिसमें श्री राजा बाबू भी थे, दरभङ्गा के विवाह उत्सव में सम्मिलित हुए। श्री सिद्ध किशोरी
जी की छटा दर्शकों पर छा गयी और श्री विवाह कलेवा उत्सव के कार्यक्रमों को हमारे चरित्रनायक ने
ऐसे सरस ढङ्ग से सम्पन्न किया कि सभी मुग्ध हो गये। सरेयाँ के लोगों को तो मालूम पड़ा कि मानो
भक्तवर श्री रामा जी ही ने हमारे चरित्रनायक के रूप में मूर्तिमान होकर श्री विवाह कलेवा के पद गाये
और माथे पर आरती लेकर नृत्य किया।

इस अवसर से लाभ उठाकर सरेयाँ के प्रेमियों ने हमारे चरित्रनायक से आग्रह किया कि आप
सरेयाँ को न भूलें। वहाँ भी प्रति वर्ष कम-से-कम एक विवाह उत्सव का आयोजन कर श्री भगत जी के
पुराने प्रेमियों को भी श्री विवाह कलेवा का सुख प्रदान करते रहें। इस अनुरोध को हमारे चरित्रनायक
ने सहर्ष स्वीकार किया। इस प्रकार सन् १९३१ ई० से ही श्री सिद्ध किशोरी जी के साथ-साथ यहाँ प्रति
वर्ष विवाह कलेवा उत्सव का आयोजन होता रहा। श्री भगत जी की जन्म जयन्ती एवं साकेत गमन तिथि
पर विशेष आयोजन हमारे चरित्रनायक द्वारा किया जाता रहा।

श्री अवध से प्रस्थान करने के पूर्व ही हमारे चरित्रनायक को श्री राजा बाबू का एक पत्र सरेयाँ
से मिल चुका था, जिसमें उन्होंने अनुरोध किया था कि इस वर्ष सरेयाँ के लोगों को वासन्ती विवाह उत्सव
का सुख प्रदान किया जाय। तदनुसार, हमारे चरित्रनायक फर्रुखाबाद से प्रस्थान कर पटना होते हुए
सरेयाँ आ पहुँचे। शुभ विवाह की तैयारी आरम्भ हो गयी। यहाँ के शुभ विवाह में आस-पास लगभग पचास
गावों के लोग उपस्थित हुए। रात्रि में श्री विवाह कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद हमारे चरित्रनायक ने दर्शकों
को सूचना दी कि कलेवा उत्सव का कार्य-क्रम अगले दिन आठ बजे भोर से होगा। दूसरे दिन किसी
कारणवश कलेवा आरम्भ करने का समय एक बजे दिन से कर से कर दिया गया। यहाँ नौ बजते ही पूर्व
सूचना के अनुसार आगन्तुकों की संख्या हजार से ऊपर हो गयी। लोगों का पहले से ख्याल था कि कलेवा
एक दो बजे तक समाप्त हो जायेगा। इसलिये, बिना भोजन किये ही बहुत लोग आ गये थे। सरेयाँ के
आस-पास कोई दूकान भी नहीं थी। आजोजक श्री राजा बाबू ने इसकी गम्भीरता को नहीं समझा, पर
करुणामयी श्री सिद्ध किशोरी जी के लिये यह असह्य हो गया। हमारे चरित्रनायक ने दुलहा
सरकार श्री रामजी को सिंहासनासीन कर कलेवा कर्यक्रम एक बजे से आरम्भ कर दिया। अब कलेवा के
विविध भोग सामान श्री राजा बाबू अन्य प्रेमियों की सहायता से मंडप में लाने लगे। उस समय श्री सिद्ध
किशोरी जी सरेयाँ आश्रम के सीतामढ़ी मंडप में थीं। उन्होंने संकेत कर कलेवा का सारा सामान अपने
पास मँगवा लिया। भूखे प्रेमियों को बुला-बुलाकर भोग सामान बाँटने लगीं। श्री राजा बाबू के चेहरे पर
तो हवाई उड़ने लगी। वे दौड़े हुए हमारे चरित्रनायक के पास गये, जिन्होंने एक क्षण के लिये श्री सिद्ध

किशोरी के समक्ष अकार इस दृश्य को देखा। हमारे चरित्रनायक को देखते ही श्री सिद्धकिशोरी जी ने कहा 'भक्त भूखा रहे और भगवान् कलेवा करें, यह कैसे होगा ?' यह सुनते ही हमारे चरित्रनायक प्रेमाश्रु टपकाते कलेवा मंडप में पधार कर अपने कार्यक्रम में लग गये। भूखे भक्तों को अपने हाथों पवाने में श्री सिद्ध किशोरी जी को बहुत ही आनन्द मिल रहा था। दर्शकों ने भी आज ही पहचाना कि यह तो साक्षात् श्री सीता महारानी ही हैं, अन्यथा इनकी उम्र के एक बच्चे को ऐसी सूझ कहाँ और ऐसा भाव कैसे हो सकता है। उमंग भरे लोगों ने 'श्री सिद्धकिशोरी जी की जै' के नारों से आकाश को भी गुँजायमान कर दिया। कलेवा मंडप फीका-सा पड़ गया। इस परिस्थिति से घबड़ाकर श्री राजा बाबू ने पहले तो श्री सिद्ध किशोरी जी से अपने लिये प्रसाद माँगा, पर उत्तर सुनकर वे अवाक् रह गये। श्री किशोरी जी ने कहा कि आप तो घर पर दाल भात पा ही चुके हैं, तो आपको प्रसाद क्यों मिलेगा ? तब उन्होंने प्रार्थना की कि अपराध क्षमा कर कलेवा का सम्भाल किया जाय। इस पर श्रीसिद्ध किशोरी जी ने विहँसते हुए कहा 'आप अपना काम करें, कोई चिन्ता की बात नहीं।' इस समय तक सभी प्रेमियों को कुछ-न-कुछ प्रसाद मिल चुका था। अतएव, श्री सिया स्वामिनी जू ने संकेत किया 'आप लोग कलेवा मंडप में जाँय। मैं भी वहाँ आती हूँ।' इसके बाद ही कलेवा मंडप दर्शक समूह से भर गया और कलेवा प्रकरण बड़े उल्लासमय वातावरण में चलने लगा। रात्रि में आठ बजे तक पूजा आरती समाप्त हुई और सभी प्रेमी प्रसाद लेकर सानन्द अपने-अपने घर गये। श्री राजाबाबू की यह आशंका की सामान घट जायेगा झूठी साबित हुई। एकत्रित सभी प्रेमियों का भर पेट प्रसाद पाने एवं वितरण करने के बाद भी पर्याप्त मात्रा में सामान अवशेष रह गया।

यहाँ से प्रस्थान कर हमारे चरित्रनायक दरभंगा में उत्सव करते करते हुए चंपारण के लिये प्रस्थान कर गये। चंपारण जिले में भावल विवाह मंडप में श्री विवाह कलेवा उत्सव हुआ। बाद में भैरो गंज, नड्डा एवं कपड़धीका में भी उत्सव के आयोजन किये गये। सिद्ध किशोरी जी के आशीर्वाद स्वरूप भावल में एक सुन्दर विवाह मंडप की रचना हो गयी और कपड़धीका में भी एक छोटे मन्दिर का निर्माण हुआ। यहाँ का कार्यक्रम सम्पन्न करने के बाद हमारे चरित्रनायक सन् १९३७ ई० के अप्रैल मास के प्रारम्भिक काल में मुजफ्फरपुर पधारे। प्रेमियों के साथ श्री रघुवंश शुक्ल ने फूलमाला के साथ श्री युगल सरकार का स्वागत किया। श्री रामदेनी बाबू के भाई श्री कन्हाई बाबू के निवास स्थान पर सारे समाज ने आकर विश्राम किया। यहाँ भी कुछ दिनों तक श्री रामार्चा पूजन तथा श्री युगल झाँकी के दर्शन सुख से लोगों को तृप्त किया गया।

बिहार विधान सभा के स्पीकर श्री बाबू रामदयालु सिंह जी से हमारे चरित्रनायक का प्रथम मिलन एवं सत्संग—हमारे चरित्रनायक के मुजफ्फपुर रहते हुए पुलिस डी० आई० जी० कार्यालय के प्रधान श्री बाबू रामदेनी सिंह ने उनसे निवेदन किया कि श्री राम दयालु बाबू को अपने से मिलने की कृपया स्वीकृति दें। हमारे चरित्रनायक ने कहा कि मेरे जैसे जाहिल के पास इतने बड़े लोगों को ले आना ठीक नहीं। मैं तो अच्छी तरह से बात भी नहीं कर पाऊँगा। पर श्री रामदेनी बाबू के बार-बार आग्रह करने पर हमारे चरित्रनायक ने अपनी स्वीकृति दे दी। श्री राम दयालु बाबू के आने के पूर्व ही उन्होंने कुर्सी मँगवा कर रखवा दी और स्वयं मैला कुचैला वस्त्र धारण किये हुए बरामदे के सहन पर ही बैठे रहे। जैसे श्री राम दयालु बाबू आये स्वयं खड़े होकर हमारे चरित्रनायक ने उनका अभिवादन किया और सामने की कुर्सी पर उन्हें बैठाकर आप नीचे बरामदे में ही बैठे रहे। बात चीत के प्रसंग में श्री राम दयालु बाबू ने कहा कि उन्हें श्री सीताराम युगल मन्त्र तो श्री हनुमत निवास के ही श्री अनन्त बाबा गोमती दास से मिल चुका है। पर, अभी तक आन्तरिक आनन्द की उपलब्धि नहीं हो रही है। अतएव, वे एक ऐसे

सन्त की तलाश में हैं जिनसे सम्बन्ध पत्र लेकर अष्टयाम मानसिक सेवा पूजा का सुख प्राप्त कर सकें। इस पर हमारे चरित्रनायक ने परामर्श दिया कि अवध सिद्ध एवं सुजान सन्तों का सराय है। कुछ काल वहाँ रहकर आप सन्तों से सत्संग करें और जहाँ मन भर जाय वहीं आप सम्बन्ध पत्र ले लें। इतनी ही बातचीत के बाद हमारे चरित्रनायक ने श्री राम दयालु बाबू को प्रसाद माला लेकर विदा कर दिया और दूसरे कार्यक्रम में व्यस्त हो गये।

उधर श्री रामदयालु बाबू के मानस पर इस मिलन की विलक्षण प्रतिक्रिया हुई। उन्होंने श्री राम-देनी बाबू से अपनी हार्दिक प्रतिक्रिया को व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आपके गुरुदेव तो एक असाधारण महात्मा हैं। अपनी सत्ता को तो उन्होंने खाक में मिला दिया है। विनम्रता एवं सरलता के तो वे मूर्तिमान रूप हैं और दिखावा कुछ भी नहीं है। मुझे बड़ा बनाकर बड़ा जैसा व्यवहार तो किया, पर अपने में सटने नहीं दिया। साधारणतः, यदि उनके स्थान में दूसरा महात्मा होता तो मेरे जैसा उच्च पद प्राप्त व्यक्ति को अपने समाज में लेने के लिए लालायित हो जाता। पर, उन्होंने तो ऐसा कोई भाव प्रगट नहीं किया जिससे यह बूझ पड़े कि वे मुझे अपनी जमात में लेने को लालायित हों। विधान सभा बन्द होने के बाद तो मुझे श्री अवध जाना ही है और अब मैं उनसे वहीं मिलकर सत्संग करूँगा।

कई स्थानों से भ्रमण करता हुआ श्री विवहुती भवन समाज श्रावण मास के प्रथम पक्ष में श्री अवध लौट गया। झूला उत्सव की तैयारी प्रारम्भ हो गयी और श्रावण शुक्ल तृतीया के झूले का आरम्भ श्री मणि पर्वत से ही किया गया। श्री सिद्ध किशोरी जी का यशगान चारों ओर फैल जाने के कारण, रोज ही दर्शनार्थियों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। आनन्दमय वातावरण में झूला चलता रहा।

स्वतन्त्र श्री विवहुती भवन स्थान का निर्माण—श्री अवध के सन्तों,भक्तों एवं शिष्य मंडली की राय से एक स्वतन्त्र विवहुती भवन निर्माण के प्रश्न पर हमारे चरित्रनायक सहमत हुए। इस दिशा में सन् १९३५ ई० से ही प्रयास आरम्भ हुआ और दो तीन साल के भीतर ही वर्तमान श्री नवलवर भवन को समाज के निवास योग्य बना लिया गया। श्री विवाह मंडप के लिये जहाँ वर्तमान विवहुती भवन है उस जमीन को बड़ी जगह के महन्त से प्राप्त कर लिया गया। वहाँ पर मैदान की सफाई की जाने लगी और एक हाते का निर्माण भी कर लिया गया। प्रधानतः निर्माण कार्य का भार हमारे चरित्रनायक के एक कृपापात्र श्री मथुरा पांडेय के ही मत्थे पर था। इस कार्य में गया जहानाबाद के कृपापात्र श्री राम प्रताप मिश्र भी बराबर हाथ बँटा रहे थे और हमारे चरित्रनायक भी नित्य पूजा आरती के बाद श्री ठठेरा मन्दिर से आकर स्वयं भी एक मजदूर के रूप में काम करते थे।

श्री अवध में श्री रामदयालु बाबू का आगमन और हमारे चरित्रनायक के साथ अन्तिम रहस्य सत्संग—श्री रामदयालु बाबू अपने पूर्व निश्चय के अनुसार विधान साथ से अवकाश पाकर, आषाढ़ मास के द्वितीय पक्ष में ही श्री अवध आ गये थे। हमारे चरित्रनायक बाहर भ्रमण में थे। और उनसे मिलने की प्रतीक्षा में ही प्रधानतः ये श्री अवध में ठहरे हुए थे। श्रावण मास के प्रथम पक्ष में हमारे चरित्रनायक के श्री अवध लौट आने पर उनसे मिलकर सत्संग करने का सुयोग इन्हें प्राप्त हो गया। इस समय हमारे चरित्रनायक का अधिक समय श्री विवहुती भवन के निर्माण कार्य में ही बीत रहा था। ठठेरा मन्दिर में पूजा-आरती के बाद वे निम्य निर्माण कार्य में यहाँ आ जाते थे और स्वयं मजदूर के रूप में काम करते थे। ऐसी स्थिति में श्री रामदयालु सिंह जी को विवहुती भवन निर्माण स्थल पर ही सत्संग के लिये जाना पड़ता था। बिहार विधान सभा के स्पीकर महोदय का वहाँ स्वागत क्या हो सकता था ? किसी प्रकार एक बोरा उन्हें बैठने के लिये दिया जाता। उधर हमारे चरित्रनायक मिट्टी का काम करते हुये या ईंट ढोते हुए ही उनके प्रश्नों का उत्तर दिया करते थे।

श्री रामदयालु सिंह का हमारे चरित्रनायक से इस अवसर पर मिलन ठीक उसी ढंग का हुआ, जिस प्रकार राजा मान सिंह का मिलन श्री अनन्त स्वामी अग्रदास जी से हुआ था। राजा साहब भी स्वामीजी का यशगान सुनकर उनके दर्शन के लिये आये तो पता चला कि श्री स्वामीजी तुलसी उद्यान में हैं। घोड़े पर चढ़े हुए राजा मानसिंह अपने कर्मचारियों के साथ तुलसी उद्यान की ओर गये और उनके सामने ही श्री स्वामी जी माथे पर सड़े गले सूखे घास और पत्तों को एक टोकरी में ले इसी मार्ग से निकले और पास के बगीचे में एक ओर उसे फेंककर वहीं बाग में बैठे-बैठे समाधिस्थ हो गये। राजा मानसिंह को जो तुलसी उद्यान के द्वार पर ही पूछताछ कर रहे थे, बतलाया गया कि अभी स्वामी जी इसी मार्ग से माथे पर टोकरी लिये हुए बगीचे की ओर गये हैं। तब राजा साहब ने, अपने घोड़े और कर्मचारियों को वहीं छोड़कर, पाँव पयादे उस बगीचे की ओर प्रस्थान किया। वहाँ जाकर श्री स्वामी जी को समाधिस्थ पाया। एक-आध घन्टे तक इन्तजार करने के बाद ही, श्री स्वामी जी ने आँखे खोलीं और राजा मानसिंह को आन्तरिक सत्संग प्राप्त हुआ।

श्री रामदयालु बाबू तो स्वयं धर्मशास्त्रों के प्रकांड विद्वानों में थे और एक सुखी सम्पन्न परिवार के मालिक भी थे। बिहार विधान सभा के स्पीकर होने के नाते उनका निवास उच्च अट्टालिकाओं में था और बराबर मन्त्रियों एवं उच्चाधिकारियों से घिरे रहकर राजस-तामस मिश्रित वातावरण में उनका जीवन व्यतीत हो रहा था। यहाँ श्री अवध में भी रहते हुए उनका सम्पर्क उच्च अट्टालिकाओं में ही निवास करने वाले बड़े-बड़े सन्त महान्तों से हो चुका था। इस जमात में श्री रामदयालु बाबू से भी बढ़कर बेद शास्त्र पुराणों के ज्ञाता वर्तमान थे। और ऐसे सन्तों का ऐसे सन्तों का ऐश्वर्य भी, देखने में, किसी राजे महाराजे से कम नहीं था। उनके अधीनस्थ भी अनेकों कर्मचारी साधु रूप में सेवकाई करते थे और ऐसे बड़े सन्त भी कार पर चलते और उच्च श्रेणी में यात्रा करते थे। इसी श्रेणी के सन्त ही श्री रामदयालु बाबू की निजी विद्वता एवं प्रद प्रतिष्ठा के अनुरूप थे, पर उनकी मानसिक स्थिति डाँवाडोल-सी हो रही थी। उन्हें इस बात का आश्चर्य हो रहा था कि क्यों उनका मन एक मजदूर सन्त की ओर खिँच रहा था। कारण क्या है, वे खुद भी समझ नहीं पा रहे थे। अधिकांश स्थानों में महान्तों की अपनी गद्दी एवं कोठरी होती है, जहाँ सभी का प्रवेश सब समय नहीं होता है, उनके भजन पूजा का भी समय निर्धारित रहता है और लोगों से मिलने की अवधि और तरीके भी विशेष रूप से बने होते हैं। यहाँ तो इनका पाला एक ऐसे फकीर से पड़ा था, जिन्हें एकान्त में भजन पूजा करते कभी देखा ही नहीं गया और न इनकी अपनी कोई कोठरी वा गद्दी ही थी। ईंटे ढोना, दीवार उठाना, स्थान की नली गली की सफाई करना और पखाने तक की गन्दगी की सफाई को भी भजन ही मान लेना यह दिमाग में अँटने की बात नहीं थी। इन्हीं पेंचीदे प्रश्नों पर श्री रामदयालु बाबू का अन्तिम सत्संग हमारे चरित्रनायक से हुआ।

सत्संग के विषयों पर चर्चा एवं प्रकाश—श्री रामदयालु बाबू से हमारे चरित्रनायक का क्या सत्संग हुआ था, इसकी चर्चा भी हमारे चरित्रनायक समय-समय पर किया करते थे। उसी के आधार पर यथामति ही उन तथ्यों को सारांश रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रस्तुत करने में जो कुछ त्रुटि अनुभव हो, उसके लिये लेखक क्षमा प्रार्थी है।

श्री रामदयालु बाबू के हृदयस्थ प्रश्नों को समझते हुए, प्रसंग इस प्रकार आरम्भ किया गया, 'उपासना पूजा तो सगुण–साकार ब्रह्म की ही होती है।' सगुण-साकार ब्रह्म के ही लीलाचरणों को लेकर बेद शास्त्र पुराण बने हैं। बिना रूप धारण किये हुए निर्गुण ब्रह्म की तो कोई लीला हो ही नहीं सकती। अतएव, विचारणीय प्रथम प्रश्न यही है कि सगुण-साकार ब्रह्म की पूजा उपासना कैसे हो। यह सदा से

सर्वसम्मत निर्णय रहा है कि भगवान् की भक्ति मन, वचन एवं कर्म तीनों से होनी चाहिये।

(१ मन से भक्ति कैसे हो ?—भक्त, भगवान् एवं भक्ति सम्बन्धी बातों को जानने के लिये मन को आवश्यकतानुसार शास्त्र-पुराण वेद के अध्ययन सत्संग एवं सन्त भक्तों के जीवन चरित्र के पठन-पाठन में लगाया जाय और तब यह निर्णय सम्भव हो जायेगा कि अपने लिए भक्ति के मार्ग का स्वरूप क्या हो ? मन को जिन सन्त महात्माओं एवं भक्तों का मार्ग रुचिकर मालूम होगा, उसी ओर मन का खिँचाव हो जायगा। मनोनुकूल मार्ग पर ही चलने से भक्ति साधना सहज स्वाभाविक बन जायेगी। उपास्यदेव के दिव्यगुण, दयालुता, कृपालुता, क्षमाशीलता, गरीबनिवाजी, पतितोद्धार, सुहृदयता आदि को धारण करे, भक्तों के जीवन में ये गुण कैसे चरितार्थ किये गये इसके इतिहास को पढ़े समझे तभी मन भक्ति साधना के लिये स्वस्थ रह सकता है और भक्ति के अनुकूल आचरण में सहायक हो सकता है। भक्ति साधना में मन से तो इतना ही कार्य लिया जा सकता है। मन ही मूल है, जो मन धारण करेगा, वाणी से चर्चा उसी की होगी।

(२) वचन से कैसे भक्ति की जाय ?—मनन-अध्ययन के द्वारा जब यह निर्णय मन में हो गया कि हमारे उपास्यदेव भगवान् राम या कृष्ण हैं, तो किन भक्तों ने उनकी किसी प्रकार से भक्ति की है और ग्रन्थों में भगवान् ने स्वयं भक्ति मार्ग को किस प्रकार बतलाया है इसी की चर्चा वचन से बराबर करते रहना आवश्यक हो जायेगा। भगवान् एवं भक्तों के ही दिव्यगुणों की चर्चा एवं उनके आचरणों की अनुकरणीय बातों को ही प्रकट करते रहना वाणी का प्रधान विषय बन जाना चाहिये। उपास्यदेव के गुणों का ग्राम उनका नाम है। अतएव, उनके मधुर नाम को बचन से सदा रटते रहना भक्ति साधना में परम सहायक होगा। इस सम्बन्ध में गोस्वामी सन्त तुलसीदास जी की श्री रामचरित मानस, उत्तरकांड में भगवान् शंकर की निम्नलिखित श्रीमुखवाणी सिरोधार्य करना और वाणी द्वारा सतत् उसी के अनुसार आचरण करना ही वाणी के द्वारा यथोचित भक्ति सम्भव होगी—

एहि कलिकाल न साधन दूजा। जोग जज्ञ जप तप व्रत पूजा॥
रामहिँ सुमिरिअ गाइअ रामहिँ। संतत सुनिअ राम गुण ग्रामहिँ॥

(३) कर्म द्वारा भक्ति—इस प्रकार मन, वचन से भक्ति भाव होने के बाद सबसे पेंचीदा प्रश्न है 'शरीर से भक्ति कैसे की जाय ? सभी कर्म तो शरीर से ही प्रतिपादित होते हैं। इस सम्बन्ध में विचारणीय यह है कि जब अपने मन वचन को अपने उपास्यदेव में लगाया तो शरीर किसको दिया जाय ? मन वचन के स्वामी जब भगवान् बन गये तब शरीर का मालिक कौन हो ? यह तो स्पष्ट है कि सारा विश्व भगवान् का है, वे ही अनेकानेक नैमित्तिक कारणों के परम कारण हैं, सबों के मूल वही हैं। तब हमारा शरीर भी भगवान् का ही हुआ और इस शरीर से सम्बन्धित उपरोक्त विचार से, जो भी निजी घर, परिवार व्यवसाय, नौकरी-चाकरी आदि है, वह सब भी तो भगवान् के ही हुए। इस प्रकार घर, परिवार, संसार की सेवा भी भगवान् की ही सेवा हो जायगी। यदि इस भाव को हृदयस्थ नहीं किया जाय और घर, परिवार, संसार नौकरी-चाकरी, व्यवसाय आदि को अपना मानकर शरीर से सेवा की जाय, तब तो वह विषय सेवन ही कहा जायेगा। 'यह हमारा है, तुम्हारा है अथवा मैं हूँ' इस भाषा का प्रयोग जिस कारण से प्रेरित होता है उसी का नाम तो माया है—'मैं अरु मोर तोर तैं माया। जेहि वस कीन्हें जीव निकाया॥' जैसे हृदय मान जाय कि सब कुछ भगवान् का है तब तो यह माया का साम्राज्य श्री भगवान् का साम्राज्य हो जायगा और वस्तुतः वह है भी उन्हीं का। यथार्थतः, 'रूपं रूपं प्रतिरूपं वभूव' भगवान् की इस वाणी के अनुसार विश्व में प्रकट सभी रूप वे ही हैं। अतएव, संसार में अपने स्वामित्व को हटा कर उनके स्वा-

मिल्व को स्वीकार कर लेना यही माया के पंजे से निकल जाना है। संसार को अपना मानकर शरीर द्वारा कर्म करना तो अपने को कर्ता बनाकर फल भोगी बनना और जन्म मरण के चक्कर में बराबर फँसना है। प्रारब्धजनित कर्मों के करने में ही शरीर लगा रहता है। अतएव, दुनियाँ को निजी मानकर निजी भोगाभोग के बाद समय कहाँ बचता है या अलग अवसर कहाँ मिलता है जब कि अपने शरीर को भगवान के कैंकर्य में लगाया जायेगा। जब बिना तन दिये निजी संसार के लोग खुश नहीं होते हैं, तब बिना तन दिये संसार का मालिक क्योंकर खुश हो सकता है। इसीलिये, महान् सन्तों ने 'युक्ति से ही मुक्ति' बतलाई है। उत्तम युक्ति यही है कि हम सच्चाई को स्वीकार करें, मन और हृदय यही धारण करे कि सारा ब्रह्माण्ड उपास्यदेव का है, मैं और मेरा निजी संसार भी उपास्यदेव का ही है। अतएव, शरीर से जो कुछ कर्म किया जाय वह भगवान् के लिये ही किया जाता है, ऐसा भाव कायम रहे। श्री कबीर आदि महान् सन्तों ने इसीलिये ऐसा कहा है।—

जहँ जहँ जाऊँ सो परिक्रमा, जो कुछ पाऊँ सो प्रसाद।
जहाँ भी सोऊँ सो दंडवत्, और जो कुछ बोलूँ सो वन्दना।
जो कुछ करूँ किंकर्य ॥

उपर्युक्त युक्ति को अपनाकर चलने के अतिरिक्त कर्म द्वारा भक्ति करने का और दूसरा कोई विकल्प नहीं है। केवल मन को ऐसा समझाना है और हृदय में ऐसा धारण करना है, तब ही शरीर से जितने कर्म होंगे वे भक्ति के ही अंग बनेंगे। यही भाव अपनाकर चलने में कम खतरा है और मार्ग भी सीधा है।

मन, कर्म, वचन से भक्ति करने की उपरोक्त व्याख्या करने के बाद, हमारे चरित्रनायक ने श्री रामदयालु बाबू से कहा कि मेरी दैनिक चर्य्या में भी आपको कुछ शंका होना स्वाभाविक है। मेरा तो अपना हृदयस्थ भाव है कि अवध के मालिक श्री सीताराम जी हैं, इंच-इंच अयोध्या उनकी है। श्री अयोध्या की गलियों की रज में सन्त भगवन्त दोनों की ही रज हैं। अपने उपास्यदेव की नगरी की सेवा-सफाई तो उन्हीं की सेवा हुई। श्री अवध में जो भी घर-संसार, कोष, खजाना छोड़कर आते हैं, वे सभी श्री रामजी के भक्त नहीं तो और क्या हैं? मैंने श्री अवधवास तो यही जानकर किया है कि यहाँ रहने पर इस शरीर से सन्त भगवन्त दोनों की ही सेवा-पूजा सुलभ होगी। यहाँ जो भी मकान बने हैं या बन रहे हैं उनमें आकर श्री रामजी के भक्त विश्राम करेंगे, इसी नाते मैं भी एक मजदूर बनकर उनके भक्तों के सुख आराम के लिये भवन निर्माण कर रहा हूँ। आने वाले भक्तों और सन्तों की नाक में गन्दगी की गन्ध न जाने पावे, इसीलिये मैं नली गली आदि की सफाई भी खुद करता कराता हूँ। इस प्रकार मनसा, वाचा, कर्मणा भक्ति का दूसरा और कौन-सा उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत किया का सकता है?

श्री रामदयालु बाबू के हृदय में श्री अवध के ऐश्वर्यशाली महात्माओं के सम्बन्ध में भी ऐसी शंका थी कि सन्त बनकर भी वे राजा-महाराजाओं सा क्यों सुख भोगते हैं और क्यों ऐश्वर्य में डूबे रहते हैं? इसके उत्तर में हमारे चरित्रनायक ने उनसे कहा कि योगिराज श्री जनक जी का उदाहरण अपने सामने लाने से उत्तर स्पष्ट हो जायेगा। कौन-सा ऐश्वर्य श्री जनकराज के पास नहीं था? उसकी तुलना में हमारे अवध के सन्तों के पास जो ऐश्वर्य है, वह नगण्य है। श्री जनकराज को अपने ऐश्वर्य में कोई आसक्ति नहीं थी, इसीलिये प्रत्यक्ष में ऐश्वर्य भोगी दिखलाई पड़ते हुए भी महान योगी माने गये। बड़े-बड़े महात्मा श्रीशुकदेव आदि ने भी उनसे योग सीखा—

"योग भोग महँ राखेउ गोई।" आप विचार कर देखें तो श्री अवध के ऐश्वर्यशाली महात्माओं

की सम्पत्ति भी श्री अवध आने वाले आप सरीखे भक्तों प्रेमियों की सेवा में अथवा यहाँ निवास करने वाले सन्तों की सेवा में ही प्रधानतः खर्च होती है। इनके स्थानों में भी अपने उपास्यदेव के जन्मोत्सव, छट्ठी, विवाह, कलेवा आदि उत्सवों में सम्पत्ति लगायी जाती है। हो सकता है कि किसी-किसी को ऐश्वर्य से आसक्ति भी हो पर, ऐसा निर्णय कौन कर सकता है? प्रत्यक्ष में तो धर्म प्रचार एवं भगवान् भक्तों की सेवा ही हुआ करती है। इस प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त गृहस्थाश्रम में रहने वाले सेठ साहूकार, राजा-महाराजाओं की ओर देखें। उनके धन का कौन-सा अंश सन्त, भगवन्त एवं कंगलों की सेवा में लगता है, जैसा कि श्री अवध के ऐश्वर्यशाली सन्त-महात्मा करते हैं।

सन्तों का यह स्वरूप अनादि काल से चला आ रहा है। कोई अपने को अमीरी में छिपाता है और कोई फकीरी में। छिपाते अपने को दोनों प्रकार के ही सन्त हैं। भक्ति करने वाले अपनी भावना प्रकृति के अनुसार चुनाव कर जिससे चाहें प्रेम करें, निष्ठायुक्त अनुराग दें, उनका उद्धार निश्चित है। विद्या, बुद्धि के विवेक के सहारे सच्चे सन्त की पहचान होना कठिन है। जिस प्रकार भगवान् को वही जान सकता है जिसको भगवान् स्वयं जना दें, उसी प्रकार सन्तों को भी वही पहचान सकता है जिस पर सन्त स्वयं कृपा कर अपनी पहचान करा दें। भगवान् की कृपा से ही विशुद्ध सन्त मिलते हैं यथा—

सन्त विशुद्ध मिलइ परितेही। राम कृपा कर चितवहिँ जेही॥

अपने काम-से-काम है, जहाँ मन भर जाय वहाँ काम निकाल लिया जाय। इधर शंका उधर शंका कर, व्यर्थ अपना समय बिताने से क्या लाभ?

उपरोक्त आन्तरिक सत्सङ्ग के फल स्वरूप श्री रामदयालु बाबू ने हमारे चरित्रनायक के प्रति कहा "मेरा मन तो आप ही की ओर खिंच गया है। अतएव, आप ही सम्बन्ध भावना देकर मुझे अपना शिष्य बना लें।" इस प्रकार दो मास भटकने के बाद हमारे चरित्रनायक ने श्री रामदयालु बाबू को भावना सम्बन्ध देकर अपना लिया। जानकार लोगों का कहना है कि श्री रामदयालु बाबू के श्री अवध में रहते हुए ही श्री सिद्ध किशोरीजी युगल सरकार के श्री सीताराम रूप में शृंगारयुक्त प्रथम दर्शन से ही उनकी आँखें चकाचौंध में पड़ गयीं, नेत्रों से अनायास अश्रु प्रवाह होने लगा, जैसा कि आज के पूर्व उनके जीवन में कभी नहीं हुआ था। यह तो स्वयं श्री सिद्ध किशोरी की ही कृपा का फल था। लीला स्वरूपों में उनकी आस्था नहीं के बराबर थी। श्री सिद्ध किशोरी जी के दर्शन से ही लीला स्वरूपों के महत्व में और उपासना मार्ग में उनकी उपयोगिता में श्रद्धा विश्वास उत्पन्न हो गया। श्री विवहुती भवन समाज हमारे चरित्रनायक के साथ शरद्काल में श्री चित्रकूट धाम जायेगा, ऐसी जानकारी होने पर श्री रामदयालु बाबू ने भी वहाँ जाने का निर्णय कर लिया और भादों मास में ही पटने के लिये श्री किशोरीजी से आशीर्वाद प्राप्त कर वे प्रस्थान कर गये।

श्रीचित्रकूट धाम में दूसरा विवाह कलेवा उत्सव—(सन् १९३७ ई०)—इस वर्ष श्रावण झूले के अवसर पर ही श्री चित्रकूट धाम से कई सन्त महात्मा हमारे चरित्रनायक से आकर मिले थे और सबों ने यह अनुरोध किया था कि श्री चित्रकूट धाम में एक और विवाह कलेवा उत्सव का सुख प्रदान किया जाय। श्री सिद्ध किशोरी जी की सम्मति लेकर सन्तों का यह अनुरोध स्वीकृत कर लिया गया था। इसी निश्चय के अनुसार, इस वर्ष कार्तिक मास में ही हमारे चरित्रनायक श्री सिद्ध किशोरी जी युगल सरकार, शृंगारी भंडारी तथा श्री अवध से कई प्रेमी संत महात्मा के साथ, श्री चित्रकूट धाम जानकी कुण्ड आ पहुँचे। श्री चित्रकूट आने वाले में फैजाबाद के रिटायर्ड डिपुटी कलक्टर श्री दुर्गादत्त जी कर्वी स्थान के अधिकारी श्री रामगोपाल दास जी (श्री भैया लक्ष्मीनिधि), कानपुर से श्री स्वामी सत्यशरण

जी महाराज (श्री चक्रवर्ती दशरथ जी महाराज), बिहार से श्री रामदयालु सिंह, स्पीकर बिहार विधान सभा, श्री वृजनन्दन शाही, चेयर मैन लोकल बोर्ड, मुजफ्फरपुर पटना डी० आई० जी० पुलिस कार्यालय के प्रधान श्री रामदेनी सिंह, श्री जगतनारायण सिन्हा, "बबुआ जी" के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। यों तो मिथिला अञ्चल के दरभङ्गा आदि जिलों से अनेकों नेमी प्रेमी भी आ पधारे थे। इस बार कहा जाता है कि श्री विवाह कलेवा उत्सव के पूर्व श्री नाम नवाह का भी आयोजन श्री चित्रकूट धाम में हुआ था। हमारे चरित्रनायक के द्वारा आशीर्वाद प्राप्त कर श्री वृजनन्दनशाही शायद एम० एल० ए० के चुनाव में सफलीभूत हुए थे, इसी के उपलक्ष में श्री चित्रकूट धाम में नाम नवाह का आयोजन किया गया था।

अभूतपूर्व स्वागत—गत वर्ष तो श्री सिद्ध किशोरीजी का परिचय श्री चित्रकूटवासी महात्मा, भक्त एवं प्रेमियों को मिल ही चुका था, इसीलिये, इस वर्ष श्री चित्रकूट पधारने के अवसर पर ही अद्भुत स्वागत का प्रबन्ध किया गया था। सुदूर क्षेत्रों से भी चुने हुए जमींदार, रईश एवं राजे-महाराजे, पण्डित विद्वान, कीर्तन मंडलियों के जत्थे आगे से ही एकत्रित हो गये थे। जैसे ही श्री मिथिलानी भवन समाज रेलवे स्टेशन पर आया हजारों की संख्या में लोग गाजे-बाजे के साथ जय-जयकार करते हुए श्री सीताराम जी युगल सरकार का, उनके परिकर के साथ, स्वागत किया और उन्हें श्री जानकी कुंड निवास स्थल पर जुलूस के साथ लाया गया।

आगत प्रेमी एवं भक्त समूचे दिन श्री चित्रकूट धाम के विभिन्न दर्शनीय स्थानों का दर्शन करते, नित्य श्री मन्दाकिनी गंगा में स्नान करते, सन्त महात्माओं के आश्रम में जाकर आशीर्वाद प्राप्त करते और रात्रि में श्री युगल झाँकी, विवाह-कलेवा, चौथारी उत्सव के सुख में विभोर रहते थे। इस प्रकार दिवस रात्रि जाते पता भी नहीं चला और लोगों के पन्द्रह दिन किस प्रकार बीत गये यह सोचने का उन्हें अवसर भी नहीं मिला। लगातार आनन्द सिन्धु में निमग्न रहकर अब साधु भंडारा होने के बाद सभी प्रेमी प्रेमाश्रु बहाते हुए अपने-अपने स्थान के लिये प्रस्थान कर गये। हमारे चरित्रनायक भी अपने समाज के साथ श्री अवध वापस आ गये। श्री भैया लक्ष्मीनिधि भी साथ ही आये।

इस बार श्री अवध में अगहण शुक्ल पंचमी के अवसर पर होने वाले प्रधान विवाह उत्सव की तैयारी एक मास आगे से ही आरम्भ हो गयी। जब से श्री किशोरी जी का उदय श्री अवध में हुआ, तब से प्रति वर्ष प्रचार होते रहने के कारण उत्तरोत्तर भारत के कोने-कोने से दर्शक एवं प्रेमियों की संख्या बढ़ती ही गयी। विवाह तिथि के पूर्व से ही एक मेला का-सा दृश्य खड़ा हो गया था। कौन जानता था कि इस वर्ष का विवाह श्री सिद्ध किशोरी जी की लीला अवधि का अन्तिम विवाह उत्सव होने जा रहा था।

श्री अगहण मास के प्रथम पक्ष में ही सगुन-तिलक उत्सव सम्पन्न हुए। श्री अवध से बारात प्रस्थान करने की तैयारी अपूर्व ढङ्ग से की गई। श्री अवध के सन्त, महात्मा एवं प्रेमियों ने मिल-जुलकर हाथी, घोड़े की सजावट, मोटर, फिटन आदि की व्यवस्था भी की। इस प्रकार चार बजे अपरान्ह में अगहण शुक्ल पंचमी को चक्रवर्ती महाराज (श्री स्वामी सत्याशरण जी) के साथ श्री दुलहा सरकार अलग-अलग सवारियों में अनेक बाजे-गाजे के साथ बिदा हुए। सन्त-महात्मा एवं नेमी-प्रेमी भी पीछे से विभिन्न सवारियों पर चल पड़े। शहनाई की सुरीली तान एवं बैण्ड बाजों के मधुर कला भरे सुरीले शब्द सुन-सुनकर, साथ ही कीर्तन मंडलियों के द्वारा मनोहारी विवाह एवं परिछन गान श्रवण कर पैदल-हैदल सारा जमात थिरक रहा था और कितने तो ताल-स्वर से नृत्य करते हुए मार्ग दर्शकों को मुग्ध कर देते थे।

श्री शृंगार हाट से लेकर श्री जन्मभूमि तक का मार्ग, दर्शक समाज से, खचाखच भरा हुआ था, दोनों ओर से छतों पर महिलाओं का यूथ, सन्त महात्माओं की मंडली जय-जयकार की तुमुल ध्वनि के साथ पुष्पों एवं मालाओं की वर्षा श्री दुलहा सरकार पर कर रहे थे। गुलाब एवं केवड़ा जल के फुहारों से बारातियों के हृदय में आनन्द भरी शीतलता का अनुभव हो रहा था। प्रत्येक गृह एवं मन्दिर द्वार पर आगे से आरती सजाकर श्री दुलहा सरकार के शुभागमन की प्रतीक्षा हो रही थी। हर जगह मन्दिर द्वारों पर पूजा-आरती के साथ-साथ मधुह भोग भी अर्पण होते गये और परिछन का भी विधि व्यवहार किया गया। इस प्रकार नगर भ्रमण करते हुए श्री जनक द्वार (श्री ठठेरा मन्दिर) पर बारात लगभग नौ बजे रात्रि में आ पहुँची। धूम धाम से परिछन की विधि की गई। हमारे चरित्रनायक भी उमङ्ग में भरे हुए परिछन के समय नृत्य करने लगे। उस दिन विभिन्न शृंगारों से विभूषित श्री अवध, गृह मन्दिर के साथ, मानो दुलहिन-सी शोभा पा रहा था। लोग भूल गये कि वे श्री अवध में थे। उस समय तो सर्वत्र श्री मिथिला के ही विवाह उत्सव का दृश्य प्रकट था। ऐसे उल्लासमय वातावरण में परिछन के अवसर पर दर्शकों को तो टकटकी-सी बँध गयी। सभी चकोरवत् श्री दुलहा सरकार के मुख चन्द्र से ढलते हुए मानो छवि सुधा का पान करने लगे। दस बजे रात्रि से दो बजे रात्रि तक श्री विवाह पूजन का विधि व्यवहार कर हमारे चरित्रनायक द्वारा नृत्य युक्त आरती के साथ आज का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इसी प्रकार उत्साह भरे प्रेम पूरित दशा में श्री कलेवा एवं चौथारी उत्सव भी सम्पन्न हुए। उसके बाद श्री किशोरी भंडारा का सम्पादन उदारता पूर्वक किया गया, जिसमें लगभग दस हजार सन्त महात्मा, नेमी प्रेमी एवं कंगलों ने प्रसाद पाया। बिदाई बटने के समय स्वयं श्री सिद्ध किशोरी जी उपस्थित थीं। उनके संकेतानुसार हमारे चरित्रनायक ने किसी को अँचला, किसी को धोती, किसी को साड़ी, जलपात्र, कम्बल आसनी, कुश आसनी, लोटा, थारी, गिलास, कटोरा आदि सामान नकद रुपये दक्षिणा के साथ मुक्त हस्त से वितरण किये। वितरण के बाद भी सामान इतना बच गया कि लगभग एक सप्ताह तक माल-पूआ आदि का वितरण होता ही रहा। इस विवाह के अवसर पर भी श्री रामदयालु सिंह, स्पीकर बिहार विधान सभा और अनेकों गण्यमान्य प्रेमी भक्त बिहार एवं उत्तर प्रदेश से सम्मिलित हुए।

प्रधान विवाह उत्सव के बाद इस बार श्री अवध में ही अखिल भारतीय श्री रूपकला हरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन का आयोजन दिसम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में हुआ। भक्तवर श्री रामाजी महाराज के साकेत गमन के बाद सन् १९२८ ई० से ही श्री सीताराम विवाह एवं कलेवा उत्सव का आयोजन सम्मेलन में कराने का भार हमारे चरित्रनायक के ही मत्थे आ पड़ा। इस वर्ष भी उन्होंने सम्मेलन में श्री विवाह, कलेवा उत्सव आदि का सम्पादन बड़े ही रसमय ढंग से किया।

हमारे चरित्रनायक की धर्मपत्नी माता जानकीदेवी की अस्वस्थ्यता एवं साकेत गमन—

इधर एक साल से श्रीमती माता जानकी देवी का स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। उन्होंने अपने एकमात्र बच्चे के लालन-पालन का भार एक प्रेमी महिला श्रीमती सीता सहचरी को दे रखा था। उन्हें एकमात्र चिन्ता बस इसी बात की थी कि मैं अब कब अपने पतिदेव के सामने ही साकेत-गमन करूँगी। श्री रूपकला हरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन में श्री विवाह कलेवा उत्सव सम्पन्न करने के बाद हमारे चरित्रनायक श्री सिद्ध किशोरी जी युगल सरकार के साथ बिहार प्रान्त में भ्रमण के लिये प्रस्थान कर गये। भ्रमण काल में वे पटना श्री रामदयालु बाबू को श्री युगल झाँकी का सुख देते हुए, दरभङ्गा, दलसिंगसराय, सरेयाँ आश्रम आदि स्थानों पर गये और उन स्थलों पर श्री रामार्चा, विवाह आदि कार्य क्रम सम्पन्न करने के बाद श्री रामदयालु बाबू के अनुरोध पर श्री विवहुती भवन समाज हाजीपुर श्री रघुनाथ शुक्ल के घर पर

आ गया। अपने समाज को हाजीपुर रखकर हमारे चरित्रनायक अकेले ही सरेयाँ आदि स्थानों पर पुनः गये क्योंकि आवश्यक कार्य उन स्थलों पर करना था। इधर श्री सीताराम जी युगल सरकार की सेवा में स्वयं रामदयालु बाबू पटने से आकर लग गये।

इन दिनों श्री अवध में माता जी की तबीयत अधिक खराब रहने लगी। उन्होंने श्री सीता बल्लभ शरणजी को, जो उस समय श्री विवहुती भवन में रह कर ही श्री अवध वास करते थे, बुलाकर कहा कि मुझे श्री महाराज जी (हमारे चतित्रनायक) के पास, वे जहाँ भी हों, वहीं पहुँचा दो। मैं उनके सामने ही शरीर छोड़ना चाहती हूँ। उनके आदेशानुसार ही उन्हें हाजीपुर श्री रामदयालु बाबू के निवास स्थान पर पहुँचाया गया, जहाँ उचित सेवा सुश्रूषा की सारी व्यवस्था श्री रामदयालु बाबू ने करा दी। श्री माता जी के हाजीपुर पहुँचने के एक सप्ताह के भीतर ही हमारे चरित्रनायक भी भ्रमण से लौट गये। इस प्रकार श्री माताजी की अन्तिम इच्छा पूरी हो गयी।

जीवन लीला समाप्त करने के पूर्व उन्होंने अपने भोलेपन की एक लीला की। उन्होंने कहा कि मैं एक सधवा स्त्री हूँ, मुझे बड़े घर जाना है, पर मेरे शरीर पर न कोई सुन्दर वस्त्र है न आभूषण है। ऐसी अवस्था में मुझे लज्जा एवं संकोच होता है। उनके इस भाव के सामने सभी को नत मस्तक होना पड़ा। तत्काल सुन्दर पीत रङ्ग की साड़ी तथा कुछ आभूषण भी मँगा लिये गये और उन्होंने इन सभी वस्त्राभूषणों को धारण कर अपना उचित शृंगार किया। श्री सीता राम जी युगल सरकार भी शृंगार के साथ उनके सामने आ बैठे। पतिदेव भी नेत्रों के सामने उपस्थित रहे। श्री युगल सरकार एवं अपने पतिदेव का चरणामृत उन्होंने पान कर लिया और बोल उठीं कि अब मैं जाऊँगी। सरस नाम ध्वनि एवं कीर्तन के पद श्रवण करती हुई, श्रीमती जी ने सन् १९३८ ई० फरवरी मास के ही वसन्त काल में अपनी जीवन लीला का विसर्जन किया। श्री सिद्ध किशोरीजी ने उपस्थित लोगों को बतलाया कि श्री माताजी सीधे साकेत गयीं।

कुल परम्परा के अनुसार सुन्दर रथी बनाकर, तिलक, स्वरूप, वस्त्रादि से आभूषित करने के बाद मृतक शरीर नाम कीर्तन होते हुए श्री नारायणी के तट पर गया, जहाँ अग्निदाह का काम हमारे चरित्रनायक ने स्वयं किया। अगर धूप एवं चन्दन की लकड़ियों की सुगन्ध से सारा वातावरण भर गया और दाह-क्रिया अल्पकाल में ही समाप्त हो गयी। हाजीपुर में ही दसवें दिन पिण्डदान तथा तेरहवें दिन श्राद्ध दिवस के अवसर पर बड़े विशाल पैमाने पर भण्डारा हुआ, जिसमें अनेकानेक ब्राह्मण, साधु एवं कँगलों को भरपूर खिलाया गया और नकद दक्षिणा भी बाँटी गयी। इस समारोह में मुजफ्फरपुर, दरभङ्गा एवं पटना जिलों के प्रधान शिष्य एवं प्रेमी ने भाग लिया। इसके बाद श्री विव्रहुती भवन समाज श्री जनकपुर धाम की परिक्रमा करने के बाद चैत्र मास प्रथम सप्ताह में श्री अवध वापस आ गया।

श्री सिद्ध किशोरी जी के लीलामय जीवन के अन्तिम क्षण—श्री राम नौमी अवसर पर श्री राम जन्म उत्सव के कुछ दिन पूर्व एक दिन श्री राम दयाल बाबू, सीतामढ़ी के प्रेमी श्री अयोध्या बाबू मोख्तार, श्री दुर्गादत्त, रिटायर्ड डिपुटी कलक्टर एवं श्री भैया लक्ष्मीनिधि आदि प्रेमियों ने एकत्रित होकर श्री सिद्ध किशोरी जी से वार्तालाप करते हुए यह कहा कि शायद इस वर्ष आपका शृंगार विसर्जन होने वाला है। आप तो बराबर सिंहासनासीन ही रहे। इसलिये, श्री रामदयालु बाबू ने कहा कि मेरी अभिलाषा है कि शृंगार विसर्जन के बाद भी आपके पठन-पाठन की कुछ ऐसी व्यवस्था कर दी जाय कि आप कम-से-कम कुर्सी पर बराबर आसीन रह सकें। इसके लिये थोड़ा परिश्रम कर अँग्रेजी सीखनी पड़ेगी, जिसके लिये हर सुबिधा के साथ-साथ उपयुक्त शिक्षक की व्यवस्था मैं कर दूँगा। केवल आपको

श्री सिद्ध-किशोरीजी

स्वीकृति चाहिये। इस पर विहँसती हुई श्री सिद्ध किशोरी जी ने कहा कि मुझे आप लोगों ने समझा ही नहीं। किसी को निमित्त बनाकर जन्म लेने के बाद जिस कार्य के लिये मैं नर रूप में आई उस लीला का अब समापवर्तन हो रहा है। वह दिन दूर नहीं, जब मैं आप लोगों के सामने ही एक सिंहासन से दूसरे सिंहासन पर चढ़कर अपने स्थान को जाऊँगी। उसी दिन मेरा यहाँ का शृंगार विसर्जन होगा। इस उत्तर से सबों के हृदय में एक धड़कन-सी पैदा हो गयी और आगे कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हुई।

श्री रामनौमी उत्सव के बाद से अपने शृंगार विसर्जन तक श्री सिद्ध किशोरीजी श्रीअवध से बाहर नहीं गयीं। अकेले हमारे चरित्रनायक ही आवश्यकतानुसार बाहर जाते-आते रहे। श्री जानकी नौमी के दो दिन पूर्व से ही श्री सिद्ध किशोरीजी ज्वर से पीड़ित हो गयीं थीं। इसलिये निराशामय वातावरण में ही श्री जानकी नौमी की तैयारी हुई। श्री अवध के सभी सन्त महात्माओं की हार्दिक अभिलाषा थी की इस अवसर पर श्री सिद्ध किशोरी जी का शृंगार युक्त दर्शन हो। प्रेमियों की अन्तरस्थ भावना को जानते हुए श्री सिद्ध किशोरी जी ने हमारे चरित्रनायक को बुलाकर अपना शृंगार कर देने को कहा। उनके स्वास्थ्य की अवस्था से आशंकित रहने पर भी हमारे चरित्रनायक उनके आदेश को टाल नहीं सके। इस प्रकार नेमी प्रेमियों को श्री युगल जोड़ी का शृंगारमय दर्शन हुआ, घण्टों वधैया के पद गाये गये, पर बुखार का कहीं पता नहीं था। आरती कर जैसे ही उत्सव विसर्जन हुआ, अपने कमरे में जाते ही श्री सिद्ध किशोरी जी पुनः ज्वर से बेसुध हो गयीं। कुछ काल के बाद ही पूर्ण स्वस्थ्य जैसी अवस्था उनकी हो गयी। भक्तवर श्री रामाजी महाराज की साकेत गमन तिथि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को श्री युगल झाँकी का सुख श्री अवध के सन्त महात्माओं को दिया गया और आषाढ़ कृष्ण पञ्चमी के अवसर पर तो श्री सीताराम विवाह कलेवा उत्सव का सुख सारे अवध के एकत्रित सन्तों ने मानों मन भर लूटा। उस अवसर की झाँकी गजब मन मोहनी थी, विवाह के प्रसङ्गों में परस्पर वार्तालाप ने तो सबों को रसमय बना दिया। किसी को स्वप्न में भी ऐसा भान नहीं हुआ कि यही अन्तिम झाँकी देकर श्री करुणामयी किशोरीजी अपने वर्तमान लीला जीवन का विसर्जन करेंगी।

उपर्युक्त विवाह कलेवा उत्सव के बाद हमारे चरित्रनायक आवश्यक कार्यवश चम्पारण जिले के भावल स्थान चले गये। उनके जाते ही श्री सिद्ध किशोरीजी ऐसी अस्वस्थ्य हो गयीं कि किसी भी औषधि का कोई प्रभाव उनकी बीमारी पर नहीं हुआ। बीमारी की सूचना सारे अवध में फैल गयी और श्री अवध के प्रेमियों द्वारा सुदूर क्षेत्रों में भी फैलने लगी। उत्तम-से-उत्तम दवा का प्रबंध,वैद्यक,होमियोपैथी और अन्त में एलोपैथिक प्रणाली से किया जाने लगा। तापमान कभी घटता कभी बढ़ जाता। उनकी बीमारी की सूचना उनकी जन्मभूमि माणिकपुर भी पहुँच गयी। जब से बालक मणिराम श्री सीताजी के रूप में शृंगार विभूषित हुए तब से आप अपने शरीर के माता-पिता के पास दो चार दिन भी रहकर उन्हें पुत्र सुख देने नहीं गये। इनके पिताजी तो इसी शोकमय वातावरण में शरीर का त्याग कर चुके थे। विधवा माँ को जैसे ही सूचना मिली वह बेचारी अधीर होती हुई जैसी-तैसी अवस्था में ही चलकर श्री अवध धाम आ पहुँची और अपने एकलौते पुत्र की रोग शय्या के समीप रहकर उनकी सेवा में लग गयीं। अच्छा होते न देखकर श्री अवध के बड़े-बड़े प्रेमी, यथा रिटायर्ड डिपुटी कलक्टर श्री दुर्गादत्त, ददुआ राज के श्री रुद्रदत्त सिंह जी आदि ने सन्त-महात्मओं की राय से श्री सिद्ध किशोरीजी को फैजाबाद बड़े अस्पताल में पहुँचाया और उनकी चिकित्सा की सारी व्यवस्था सिविल सर्जन की देख-रेख में की गयी। इस समय तक बिहार तथा उत्तर प्रदेश के प्रेमी एवं दर्शनार्थियों का ताँता-सा लग गया। सभी सुन्दर-से-सुन्दर फल लाते, दवा के लिये द्रव्य दान करते, कोई ग्रह शान्ति का जाप कराने लगे, कोई पूजा-पाठ करने लगे और कोई

अधीर होकर स्वयं भगवान् से प्रार्थना करने लगे कि श्री किशोरी जी पुनः स्वस्थ्य हो जायँ। श्री अवध के सन्तों का तो क्या कहना था। श्री कनक भवन से लेकर सभी स्थान के मन्दिरों में मन्दिर बिहारी से नित्य यह प्रार्थना होने लगी श्री सिद्ध किशोरी जी का लीला सुख और भी अधिक काल तक नेमी-प्रेमियों को मिले। जितने भी प्रेमी दूर-दूर से आते उन सबों को श्री सिद्ध किशोरीजी यही कहकर लौटा देतीं कि आप घर परिवार में जायँ। मैं जल्दी ही ठीक हो जाऊँगी। अश्रु बहाते बेचारे प्रेमी अपने स्थान को लौट पड़ते। श्री कनकभवन से नित्य चरणामृत लाकर पिलाया जा रहा था। पर, आषाढ़ कृष्ण अमावस्या तक स्वास्थ्य में कोई परिवर्तन नहीं दीख पड़ा। इसी दिन श्री सिद्ध किशोरी जी ने श्री मणि पर्वत के महात्मा एवं श्री किशोरीजी के प्रेमी श्री रामचन्द्र बाबा को बुलाकर उनके कानों में कहा "मेरे शृङ्गार विसर्जन आरती के लिये तार देकर श्री महाराज जी (हमारे चरित्रनायक) को बुलवा दीजिये।" वैसा ही किया गया और श्री रथयात्रा के दिन हमारे चरित्रनायक भी भावल से लौटकर श्री किशोरीजी की सेवा में लग गये। कहा जाता है कि वैशाख मास में ही हमारे चरित्रनायक ने श्री सिद्ध किशोरी जी से यह कहा था कि आपकी अवस्था शृंगार विसर्जन के लायक हो गयी है। उस समय श्री किशोरीजी ने उत्तर दिया था—"शृंगार विसर्जन का समय अब निकट ही है और उपयुक्त मुहूर्त आते ही शृंगार विसर्जन आरती के लिये मैं आप से कहूँगी।" भावल से आते ही हमारे चरित्रनायक के हृदय में श्री किशोरी जी के पूर्व कथन की स्मृति जाग्रत हो गयी और वे होनहार को जान गये।

आषाढ़ शुक्ल सप्तमी को ही सूर्योदय के पूर्व श्री किशोरीजी ने हमारे चरित्रनायक को संकेत किया कि अब मुझे श्री अवध ले चलें। जो होना है सो वहीं होगा। अन्तिम आज्ञा का पालन करते हुए सारा जमात श्री अवध वापस आ गया और श्री ठठेरा मन्दिर में ही सेवा-सुश्रूषा होने लगी। श्री किशोरीजी द्वारा बार-बार विदा करने पर भी आषाढ़ शुक्ल सप्तमी तक श्री बाबू रामदयालु सिंह, स्पीकर बिहार विधान सभा, मौनी श्री बाबा हरिसेवक दास जी, दहुआराज के पण्डित श्री रुद्रदत्त सिंह जी पण्डित दुर्गादत्त जी, रिटायर्ड डिपुटी कलक्टर, श्री मस्तराम जी संन्यासी तथा श्री लक्ष्मणशरण जी श्री किशोरीजी के पास से नहीं हटे और अन्त काल तक सेवा में लगे रहे।

आषाढ़ शुक्ल नौमी की सन्ध्या से ही श्री सिद्ध किशोरी जी का तापमान घट गया और चेहरे पर एक अद्भुत छटा की प्रभा दीख पड़ी। निवास स्थल पर बराबर धूप, अगरबत्ती जलाये जाते, प्रेमीजन आकर आरती करते और दण्डवत कर झाँकी दर्शन हृदय में रखे हुए रोग शय्या से हट पड़ते। इधर दो दिनों से लगातार मधुर नाम ध्वनि चल ही रही थी, अनाथ कँगला को श्री किशोरीजी से अन्न छुवा कर दान भी दिया जाने लगा। सभी नेमी-प्रेमी शय्या के चारों ओर घेरकर टकटकी लगाये मुख छवि का अन्तिम दर्शन कर रहे थे। सभी ताकते ही रह गये, पर श्री सिद्ध किशोरीजी ने लगभग ग्यारह बजे रात्रि में अपनी मधुर वाणी को विश्राम दे सदा के लिये मौन एवं शान्त हो गयीं जैसे दीपक में तेल समाप्त होने पर वह आप ही बुझ जाता है उसी प्रकार से आत्माराम के साकेत धाम प्रस्थान करने पर उनके शरीर की लीला भी आप ही समाप्त हो गयी।

इस अचानक विछोह ने सब के हृदय को चूर-चूर कर दिया, चारों ओर निराशा छा गयी, प्राणहीन शरीर सामने पड़ा था। उसे देख-देख तो हार्दिक वेदना और भी बढ़ जाती थी। श्री अवध के कोने-कोने से रोते बिलखते प्रेमियों के झुण्ड अन्तिम दर्शन के लिये आने लगे, मानो चारों ओर से दुःख का समुद्र उमड़-सा गया और प्रेमीजन उसी में डूबते उतराते रहे। हमारे चरित्रनायक की उन्माद-ग्रस्त पागल जैसी अवस्था का वर्णन कौन कर सकता है। जिस साक्षात् साकेत सुख का उपभोग अन्होंने

लगातार सात साल तक किया उसका आज रूपान्तर हो गया, जिस आनन्द समुद्र में कई वर्षों तक उनके मनरूपी मछली ने प्रेमामृत पान किया अब उसे बिछोह की आग में जीवित रहना भी शङ्कामय हो गया।

उपरोक्त वातावरण में सभी नेमी-प्रेमी, सन्त महात्माओं ने मिलजुल कर विधि विधान के अनुसार उनके शरीर की अन्तिम क्रिया के लिये तैयारियाँ कीं। सुन्दर रथी बनाकर पीत वस्त्रयुक्त, चन्दन खौर के साथ सुसज्जित शरीर को रथी पर रखकर अन्तिम शोभा यात्रा निकली, जिसमें श्री अवध के महान-से-महान संत, महान्त, राजे, रईस, गृहस्थ, विरक्त, हाथों में पुष्प माला लिये हुए और पुष्पों की वर्षा करते हुए इस शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। मधुर नाम कीर्तन से सारा मार्ग नाममय हो रहा था। प्रेमीजन नयनाश्रु बहाते, नाचते, गाते श्री सिद्ध किशोरी जी की जय का नारा लगाते, श्री सरयू तट रामघाट आ पहुँचे। जगह-जगह पर आरतियाँ की गयीं और अन्तिम श्रृङ्गार विसर्जन की आरती तो प्रेमियों के आग्रह पर हमारे चरित्रनायक को ही पाषाणवत् हृदय कर करनी पड़ी। इसके पूर्व श्री रामघाट पर कई मन चन्दन अगर, धूप एवं घी ले जाये गये थे। आगत सभी प्रेमियों ने पुष्पाञ्जलि के द्वारा अपना अन्तिम सम्मान प्रदर्शन किया और श्री किशोरी जी के शरीर को पुष्प मालाओं के ढेर से आच्छादित कर दिया। सुसज्जित चिता पर वस्त्राच्छादित शरीर को रखने के पूर्व माला एवं फूल के ढेर को नाव द्वारा श्री सरयू जी की धारा में प्रवाहित किया गया। चन्दन, अगर, धूप, एवं घी सिंचित चिता में अग्नि दाह किया गया और देखते-देखते थोड़े समय में ही सारा शरीर भस्म हो गया। सभी लोग यथा स्थान वापस चले गये और हमारे चरित्रनायक को श्रीराम दयालु बाबू आदि प्रेमी गण हाथ पकड़कर रोते-सिसकते स्थान पर वापस ले आये।

तेरहवें दिन लोक परम्परा के अनुसार एक बहुत ही बृहद् भंडारा का आयोजन हुआ, जिसमें सन्त, महान्त, ब्राह्मण, अभ्यागत, सेवक एवं कँगलों को सादर सप्रेम विविध भाँति के प्रसाद पवाये गये, एवं नक़द दक्षिणा देकर उन्हें सन्तुष्ट किया गया। सभी श्री सिद्ध किशोरीजी की जय-जयकार करते हुए अपने-अपने स्थान को वापस लौटे। श्री सिद्ध किशोरी जी की माता जो अपने एकलौते पुत्र की सेवा में श्री अवध आयी वह भी वियोग से दग्ध होकर श्री अवध में ही रह गयी। शिष्या होते हुए भी इनके प्रति हमारे चरित्रनायक की भावना श्री सिद्ध किशोरी जी के नाते मातृवत बनी रही। वे बराबर इन्हें "माता" कहकर ही पुकारते रहे। आज भी माताजी श्री अवधवास करती हुई जीवन यापन कर रही हैं।

कहा जाता है कि शरीर दाह की रात्रि को हमारे चरित्रनायक स्तब्ध रात्रि में श्री सरयू तट भाग आये थे और अपने शरीर का अन्त करना चाहते थे। शायद वे श्री सरयू की धारा में कूद भी पड़े थे। पर वहीं पर उन्हें श्री किशोरीजी का दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ और दिव्य अवध की झाँकी भी मिली। उस दिन से उनकी दिव्य दृष्टि बराबर आवरण हीन रही और श्री अवध के दिव्य दर्शन जीवन पर्यन्त करते रहे। जानकार लोगों की सूचना के आधार पर इसकी चर्चा हमारे चरित्रनायक के समक्ष भी की गई थी, पर उन्होंने कोई प्रतिवाद नहीं किया, बल्कि मौन रहे। "मौनं स्वीकृति लक्षणम्" के अनुसार लोगों का विश्वास उक्त घटना के प्रति और भी दृढ़ हो गया।

पञ्चम खण्ड

श्री ठठेरा मन्दिर के पुजारी पद का त्याग तथा नवीन विवहुती भवन में कार्यारम्भ— नवीन विवहुती भवन में फूस से छा कर एक विवाह मंडप की तैयारी सन् १९३८ के आषाढ़ मास के पूर्व

ही कर ली गयी थी। अहाते की दीवाल का निर्माण तो इसके पहले ही हो चुका था। अब तक हमारे चरित्रनायक की शिष्य मण्डली की संख्या सन् १९२३ ई० से आज तक की अवधि में पर्याप्त रूप से बढ़ चुकी थी और नेमी प्रेमी की संख्या भी कम नहीं थी। सर्व सम्मत से यह निर्णय हुआ कि अब हमारे चरित्रनायक का जीवन स्वतन्त्र रूप से आरम्भ हो, श्री ठठेरा मन्दिर के पुजारी पद का त्याग कर वे श्री विवहुती भवन समाज के साथ नव निर्मित विवहुती भवन के ही प्राङ्गण में निवास करें और अब से श्री विवाह, कलेवा आदि उत्सव इसी विवाह मण्डप में सम्पन्न किये जायँ। सबों के सुझाव को स्वीकार कर हमारे चरित्रनायक ने श्री ठठेरा मन्दिर के पुजारी पद का त्याग श्री किशोरी जी के साकेत गमन के बाद ही कर दिया और अपने साज-समाज के साथ नये स्थान में आ गये। श्रावण झूला का उत्सव यहीं मनाया गया। अश्विन मास में यह निर्णय लिया गया कि श्रीराम, भरत, लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न चार भाई तथा श्री सीता, माण्डवी, उर्मिला एवं श्रुतिकीर्ति चारों बहन के प्रतीक अब आठ लीला स्वरूपों का विधिवत् पञ्च संस्कार कर प्रतिष्ठित किया जाय। तदनुसार, पाँच से सात वर्ष की अवस्था के आठ संस्कारी विप्र बालकों को खोज लाया गया और उन्हें प्रतिष्ठित किया गया। उन आठ लीला स्वरूपों में श्री भरतलाल शरण जी, जो अभी कानपुर में नौकरी करते हैं, श्री भरत जी के रूप में प्रतिष्ठित हुए। आगे के पृष्ठों में उनकी आँखों देखी घटनाओं का उल्लेख किया जायगा।

लीला स्वरूपों के लालन-पालन, पठन-पाठन एवं उनकी सुरक्षा की व्यवस्था—हमारे चरित्रनायक ने इन आठ लीला स्वरूपों के लिये एक अलग कमरा सुरक्षित कर दिया और उसमें आठ पलंग, तोसक, तकिया, चादर आदि के साथ सुसज्जित कर दिये गये। उनके पठन-पाठन के लिये एक सुयोग्य प्रेमी पात्र को नियुक्त किया गया, जो उन्हें नित्य पठन-पाठन कराते रहे। स्थान में रहने वाले एक दो पात्र सदा इनकी सेवा में रखे गये। लीला स्वरूपों के दर्शन के लिये यदि कोई बाहरी प्रेमी या सन्त महात्मा आते तो बिना हमारे चरित्रनायक की आज्ञा के सीधे इनके पास नहीं जा सकते थे। लीला स्वरूप भी हमारे चरित्रनायक के परामर्श से ही निर्धारित समय पर बाहर निकलकर खेलकूद कर पाते थे। पञ्च संस्कारयुक्त, श्री युगल मन्त्र देकर ही इन्हें प्रतिष्ठित किया जाता था और लीला स्वरूपों के रूप में इनका शृंगार आरम्भ होता था। इस प्रकार का नियन्त्रण और देख-रेख जब तक हमारे चरित्रनायक पूर्ण स्वस्थ रहे बराबर कायम रहा। पर सन् १९५३ ई० के बाद इसमें कुछ ढिलाई आने लगी और आगे चलकर तो हमारे चरित्रनायक ने अपने स्थान में लीला स्वरूपों का रखना ही बन्द कर दिया। किसी प्रकार यह व्यवस्था सन् १९५९ ई० तक चलती रही। इसके बाद तो अन्य महात्माओं के लीला स्वरूपों को लाकर ही अपने स्थान में श्री विवाह कलेवा आदि उत्सव किये जाने लगे। कभी-कभी तो हमारे चरित्रनायक आठ श्री रामायण जी को ही प्रतिष्ठित कर श्री विवाह कलेवा आदि उत्सव कर लिया करते थे।

श्री विवहुती भवन के लीला स्वरूपों की विशेषतायें---उपरोक्त परिस्थिति में पठन-पाठन एवं लालन-पालन के फलस्वरूप यहाँ के लीला-स्वरूपों में भावावेश सदा बना रहता था। जब भी उनसे परिचय पूछा जाता, तो वे अपने घर का नाम न बतलाकर अपना नाम राम, लक्ष्मण आदि ही कहकर बतलाते थे और अपने पिता का नाम भावानुकूल श्री दशरथ, श्री जनक ही कहते। यहाँ इनके साथ हमारे चरित्रनायक का साक्षात् भाव था। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि दैनिक कार्यक्रम में भी पेंचीदे प्रश्नों के सम्बन्ध में हमारे चरित्रनायक इन्हीं से परामर्श लेकर आगे कदम उठाते थे। इस प्रकार का विशेष अनुभव कई अवसरों पर लेखक को भी हुआ था। जब कभी किसी मामले में हमारे चरित्रनायक के सामने प्रश्न किया गया, तब उन्होंने लेखक के सामने ही उन प्रश्नों का उत्तर लीला स्वरूपों से ही [illegible]

और उन्हीं उत्तरों के अनुसार कार्य करने का आदेश लेखक को दिया गया। ऐसा अवसर और भी कई शिष्यों के जीवन में आया और उन लोगों ने भी इसी प्रकार से अपनी समस्याओं का समाधान कर पाया।

नवीन विवहुती भवन में प्रथम विवाह उत्सव का आयोजन----नवीन विवहुती भवन में दो भाग हुए, जिनमें एक का नाम श्री नवलवर भवन श्री अयोध्या का प्रतीक्त और दूसरे का नाम श्री विवहुती भवन, श्री जनकपुर मिथिला का प्रतीन हुआ। इस वर्ष श्री अवध के सन्त, महात्मा एवं नेमी प्रेमी से आशीर्वाद प्राप्त कर श्री अगहण शुक्ल पञ्चमी के अवसर पर श्री विवाह, कलेवा एवं चौथारी उत्सव का कार्यक्रम नवीन उत्साह एवं नये साज समाज के साथ इसी स्थान में मनाया गया। श्री अवध के सन्तों एवं प्रेमियों का यहाँ भी आना जाना श्री ठठेरा मन्दिर के ऐसा ही हो गया। बारात श्री नवलवर भवन से निकलकर नगर भ्रमण करते हुए दुलहा-परिछन एवं द्वार पूजा श्री विवहुती भवन के द्वार पर ही हुआ। श्री किशोरी भण्डारा भी श्री चौथारी उत्सव के दिन अन्य वर्षों की नाई ही सम्पन्न हुआ।

गया सम्मेलन में आठ लीला स्वरूपों के साथ प्रथम विवाह एवं कलेवा उत्सव---श्री अवध में प्रधान विवाह उत्सव सम्पन्न करने के बाद दिसम्बर मास में हमारे चरित्रनायक श्री विवहुती भवन समाज के साथ सम्मेलन में भाग लेने के लिये गया पधारे। आठ लीला स्वरूपों के साथ श्री विवाह-कलेवा उत्सव देखने का अवसर प्रथम बार प्रान्त के बाहर से आगत प्रेमी तथा स्थानीय भक्त जन को प्राप्त हुआ। बारात के नगर भ्रमण के समय चारों दुलहा सरकार को देखने और आरती परिछन करने के लिये गया के प्रधान मार्ग तोरण द्वारों से सुसज्जित किये गये थे, आम्र पल्लव एवं दीप के साथ मंगल कलश हर द्वार पर रखे गये थे और स्थल-स्थल पर आरती-परिछन होता गया। कीर्तन मंडलियों का लगभग एक मील तक जमाव हो गया था, जिनके मधुर गान से विमुग्ध होकर अपार नर-नारी मार्ग की दोनों ओर दुलहा के मुख छवि को चकोरवत् निहार रहे थे। चार बजे अपरान्न से चली हुई बारात को ग्यारह बजे रात्रि तक सम्मेलन पंडाल में लौटने के कारण उस दिन विश्राम देकर श्री विवाह एवं कलेवा उत्सव दूसरे दिनों में सम्पन्न हुए।

गया से प्रस्थान कर हमारे चरित्रनायक जहानाबाद एवं पटना स्थल पर आवश्यक कार्यक्रम सम्पन्न करने के बाद छपरा जिले के भजनपुरा ग्राम आ पधारे। वहाँ पर लगभग पन्द्रह दिन निवास कर श्री नाम नवाह, शुभ विवाह, कलेवा का कार्य-क्रम सम्पन्न किया गया। श्री चौथारी उत्सव सम्पन्न करने के बाद हमारे चरित्रनायक ने समाज के लोगों से सामान के साथ रेलवे स्टेशन चलने का आदेश दिया। सारे ग्राम के लोग हमारे चरित्रनायक को जाने देने के लिये अनिच्छुक थे, पर श्री अवध में आवश्यक कार्य-क्रम रहने के कारण वे अधिक दिन तक वहाँ ठहरने में असमर्थ थे। अतएव, भजनपुरा ग्राम से पैदल ही रेलवे स्टेशन के लिये वे प्रस्थान कर गये। ग्राम के लोग भी साथ-साथ पैदल चलते जा रहे थे। स्टेशन पर ट्रेन आने का निर्धारित समय दो बजे दिन में था, पर भजनापुर से दो मील चलने पर ही दो बज गये। अभी दो मील और जाना बाकी ही था। सबों ने हमारे चरित्रनायक से अनुरोध किया कि अब पैदल चलकर ट्रेन मिलना असम्भव है, अतएव आप लौट चलें, क्योंकि ट्रेन कभी-कभी ही केवल दस पाँच मिनट लेट रहती है। घंटा दो घंटा लेट आते ट्रेन को कभी नहीं पाया गया है। ऐसी बात-चीत हो ही रही थी कि ट्रेन की सीटी भी सुनाई पड़ी। लोगों ने कहा शायद ट्रेन छूट गयी। इस पर हमारे चरित्रनायक ने कहा—"आगे बढ़ने पर लौटना उचित नहीं। जो ट्रेन का मालिक है, वही मेरा

मालिक है। मैं मालिक के ही कार्य से जा रहा हूँ। मेरे पहुँचाने की व्यवस्था करना भी उन्हीं के हाथ में है।" अतएव, उन्होंने अपने सेवकों से जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने का आदेश दिया और आप धीरे-धीरे पीछे से ग्रामवासियों के साथ स्टेशन की ओर चलते ही गये। आठों लीला स्वरूपों के साथ समाज के लोग तो स्टेशन पहुँच गये। ट्रेन भी आकर खड़ी थी। गार्ड ने आगे बढ़ने का भी संकेत ट्रेन चालक को दिया, पर सीटी देकर ज्यों ही चालक ने ट्रेन को आगे बढ़ाना चाहा, इञ्जिन में कुछ खराबी आ गयी। उसी के बनाने में सब लग गये। उधर हमारे चरित्रनायक भी धीरे-धीरे ग्रामवासियों के साथ स्टेशन आ पहुँचे। उनके आते ही श्री अयोध्या के लिये टिकट क्रय किया गया। और सामान के साथ सभी ट्रेन में चढ़ गये। अन्त में हमारे चरित्रनायक भी प्रेमियों को बिदा कर ट्रेन में आ गये। इस समय साढ़े तीन बज रहे थे। दो बजे जाने वाली ट्रेन साढ़े तीन बजे रवाना हुई। इस घटना से सभी आश्चर्यचकित हो गये और हमारे चरित्रनायक के महत्व को मन-ही-मन समझा।

हमारे चरित्रनायक के श्री अवध लौटने पर उनका अधिक समय श्री विवहुती भवन के निर्माण कार्य में व्यतीत हुआ। अब इसी विवहुती भवन में इस वर्ष चैत्र मास में श्री रामजन्म बधैया एवं छठी उत्सव, बैशाख मास में श्री जानकी जन्मोत्सव, श्रावण मास में झूलन उत्सव बड़े धूम-धाम से मनाये गये। इसके बाद अगहण शुक्ल पञ्चमी का प्रधान विवाह, कलेवा, चौथारी उत्सव बड़े समारोह के साथ सम्पादित किया गया।

श्री चित्रकूट धाम में सम्मेलन के अवसर पर श्री विवाह एवं कलेवा उत्सव (सन् १९३९ ई० दिसम्बर)——हमारे चरित्रनायक पूरी जमात के साथ अखिल भारतीय श्री रूपकला हरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन में भाग लेने के लिये दिसम्बर मास के चौथे सप्ताह में श्री चित्रकूट धाम आ पहुँचे। यहाँ पर श्री सीताराम विवाह-कलेवा उत्सव सम्पन्न होने के बाद स्थानीय सन्त महात्माओं के आग्रह पर हमारे चरित्रनायक को कई दिनों तक श्री चित्रकूटमें ही रहना पड़ा। श्री भैया लक्ष्मीनिधि भी उन उत्सव में उपस्थित रहे। यहाँ पर झूला-झाँकी का कार्यक्रम प्रतिदिन रात्रि में चलता रहा और महात्माओं ने इस अवधि में मानो परमानन्द का लाभ उठाया। यहीं पर इलाहाबाद के कुछ प्रेमियों ने आग्रह किया कि श्री विवाह कलेवा उत्सव का सुख श्री प्रयाग वासियों को भी श्री त्रिवेणी तट पर दिया जाय। यह अनुरोध स्वीकार कर लिया गया। पर श्री चित्रकूट रहते हुए ही हमारे चरित्रनायक का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया। अस्वस्थ्यावस्था में ही हमारे चरित्रनायक प्रस्थान कर श्री त्रिवेणी तट पर आ पहुँचे। बुखार का तापमान बढ़ा हुआ था और यहाँ पहुँचते-पहुँचते तो वे बेहोस-सा हो गये। उनके ही संकेत के अनुसार श्री रामविलास शरण जी शृंगारी ने आठों स्वरूपों का शृंगार कर समयानुकूल पांडाल में पहुँचा दिया। पर हमारे चरित्रनायक को बेसुध पाकर दर्शक वृन्द भी चिन्तित हो गये और उन्हें देखने के लिये आ पड़े। इसी समय श्री किशोरी जी की विशेष कृपा से हमारे चरित्रनायक ने आँखें खोलीं और संकेत किया कि हाथ पकड़कर मुझे श्री विवाह मण्डप में पहुँचाओ। वहाँ पहुँचते ही उनके हाथ में झाल दे दिया गया और तत्काल उनमें विद्युत जैसी शक्ति का संचार हो गया। श्री विवाह कलेवा उत्सव का सारा कार्यक्रम आनन्दमय वातावरण में समाप्त हुआ। कार्यक्रम समाप्त होते ही हमारे चरित्रनायक पूर्ववत् बेहोश हो गये और इसी अवस्था में उन्हें लौटाकर श्री अवध लाया गया। श्री त्रिवेणी तट की यह घटना सन् १९४० ई० जनवरी मास की है।

हमारे चरित्रनायक के एक मात्र पुत्र का शरीरान्त (सन् १९४१ ई०)——पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है कि हमारे चरित्रनायक के एक मात्र पुत्र का जन्म सन् १९३५ ई० में हुआ था।

माताजी भी सन् १९३८ ई० में चल बसीं । बच्चे का लालन-पालन दरभंगा जिले की भक्त महिला श्रीमती सीता सहचरी द्वारा माताजी के जीवन काल से ही किया जा रहा था । ऐसा लगता है कि बच्चे की आयु सन् १९४१ ई० में ही समाप्त हो गयी और बिना कोई कारण के ही अचानक शरीरान्त श्री अवध में ही हो गया । पुत्र की अन्त्येष्टि किया के बाद हमारे चरित्रनायक ने एक दो अवसर ऐसा कहा था कि संसार में किसी भी कारण से किसी प्रकार की आसक्ति बुरी होती है । वह तो आगे चलकर पुनर्जन्म का कारण तक बन जाती है । उन्हें ऐसा आभास मिला कि उनके चाचा श्री रामसुन्दर पांडेय जी ही जिनके व्यंग शब्दों के कारण हमारे चरित्रनायक ने गृह त्याग किया था, आसक्त होने के कारण इनके पुत्र के रूप में आये । अपने जीवन के अन्तिम काल में चाचाजी हमारे चरित्रनायक से बहुत ही प्रभावित हो गये थे, इन्होंने वैष्णवी दीक्षा लेकर श्री अवधवास करते हुए ही अपने शरीर का त्याग किया था । अन्तिम काल में उनकी हार्दिक इच्छा बनी रही कि कुछ और काल तक वे हमारे चरित्रनायक के साथ रह पाते । इसी मानसिक अवस्था में उनका शरीर त्याग हुआ । यह एक महान् सन्त से आसक्ति का ही प्रतिफल था कि जन्म होने पर भी उन्हें श्री अवधवास ही मिला और शरीरान्त भी पुनः श्री अवध में ही हुआ । चार वर्ष की अवस्था में ही इन्हें श्री अनन्त मधुकर महाराज से श्री तारक मन्त्र मिल चुका था । अतएव, इस बार तो वे साकेत गमन कर ही गये ।

हमारे चरित्रनायक के सम्बन्ध एवं वेष गुरू श्री अनन्त सिया शरण (श्री मधुकर महाराज) जी का अन्तिम काल सन् १९४३ ई०)—श्री अवध आने के बाद से ही हमारे चरित्रनायक का आन्तरिक सम्बन्ध श्री मधुकर महाराज से बराबर बना रहा । आगे चलकर ये ही इनके सम्बन्ध एवं वेष गुरु भी बने । इधर दो वर्षों से श्री गुरुदेव की तबीयत खराब रहने लगी और चलना फिरना एक प्रकार से बन्द हो गया । ऐसी अवस्था में हमारे चरित्रनायक अपने गुरुदेव की नित्य सेवा में पर्याप्त समय देने लग गये । दोनों समय उनके उपयुक्त भोजन बनाकर उन्हें प्रसाद पवाना और उनकी शारीरिक सेवा करना भी उनके दैनिक किंकर्य के ऐसा हो गया । यों तो श्री मधुकर महाराज के अनेकानेक शिष्यायें एवं शिष्य थे, बीमारी का समाचार सुनकर सभी सेवा पूजा के लिये उपस्थित हुए, परन्तु श्री महाराज जी ने सबों को समझा बुझाकर विदा कर दिया । पर, अन्त काल तक हमारे चरित्रनायक को सेवा का सुयोग बना रहा ।

उत्तर प्रदेश कालपी शहर की एक माई, डॉ० चन्द्रावती तिवारी ने बतलाया कि मधुकर महाराज के शरीर त्याग के एक दिन पूर्व तक वे अपने गुरुदेव श्री मधुकर महाराज के समीप ही थीं । इसके पूर्व उनका परिचय हमारे चरित्रनायक से नहीं था । उनके सामने ही हमारे चरित्रनायक श्री महाराज जी की सेवा में आये और आवश्यक सेवा करने के बाद मैला कुचैला वस्त्र धारण किये हुए एक गरीब साधु के वेष में एक कोने में बैठकर अपने नेत्रों से अश्रु बहा रहे थे । अपने गुरुदेव के प्रति उनका ऐसा अनुराग देखकर श्री कालपी की माई ने श्री मधुकर महाराज से ही इनका परिचय पूछा । श्री महाराज जी ने धीमी आवाज में कहा—
'माई ! मेरी दृष्टि में अभी श्री अवध में ये एक अद्वितीय संत हैं । इनके समान अकिंचन, विनम्र एवं सच्चा संत
सेवी प्रकट में कोई और दिखलायी नहीं पड़ते हैं । सिया स्वामिनी जू के परम लाड़ले हैं ।' इसके बाद उक्त श्री
कालपी माई को समझा बुझाकर उनके गुरुदेव ने बिदा कर दिया और दूसरे ही दिन श्री मधुकर महाराज
ने साकेत गमन किया । हमारे चरित्रनायक ने श्री मधुकर महाराज के साकेत गमन के बाद साधु भंडारा,
कंगला भोजन कराया और अनाथों को दान भी दिये । यहीं परिचय पाकर श्री कालपी माई अपने गुरुदेव
के देहावसान के बाद से हमारे चरित्रनायक के प्रति गुरुवत् भावना रखते हुए बराबर श्री विवहुती भवन

स्थान को ही अपने गुरुधाम के जैसा मानती आ रही हैं और जब भी वे श्री अवध धाम आती हैं बराबर, श्री विवहुती भवन में ही निवास करती हैं।

षष्ठम खण्ड

शिष्यों एवं प्रेमियों की आँखों देखी उल्लेखनीय घटनायें एवं चमत्कार दर्शन—यह तो पूर्व में संकेत किया जा चुका है कि हमारे चरित्रनायक श्री सीताराम जी के दुलहिन-दुलहा रूप के पुजारी बने, उनके इसी रूप का ध्यान, उनकी विवाह लीलाओं का गान, तत्सम्बन्धी मंगलमय उत्सव श्री विवाह-कलेवा, चौथारी आदि को बराबर करना कराना उनकी उपासना का प्रधान अंग बन गया। उन्होंने श्री रामार्चा पूजा तथा श्री नाम नवाह को भी अपनी उपासना का आधार बनाया। जहाँ भी जाते इन्हीं उत्सवों को करते कराते रहते थे। इन अनेकानेक उत्सवों एवं लीलाओं में से चुनाव कर केवल ऐसी लीलाओं का विवरण दिया जा रहा है जो विशेषता पूर्ण पायीं गयीं और उनके द्वारा हमारे चरित्रनायक के आन्तरिक महत्त्व का दिग्दर्शन हो पाया। आगे आने वाली पंक्तियों में कुछ ऐसी ही लीलाओं का उल्लेख किया जा रहा है।

(१) श्री भरत लाल शरण जी हमारे चरित्रनायक के कृपा पात्रों में एक हैं, जो अभी कानपुर में नौकरी करते हैं। वे श्री भरत जी के लीला स्वरूप के रूप में प्रतिष्ठित हुए थे और कई वर्षों तक हमारे चरित्रनायक के साथ भ्रमण में जाया करते थे और श्री अवध में रहकर सेवा करते थे। उनके द्वारा प्राप्त विवरण के अनुसार उनकी आँखों देखी घटनाओं का अभिलेख निम्नांकित हैं—

(क) स्वयं भगवान् ही सेठ के रूप में आये। एक बार श्री अवध में अगहण शुक्ल पंचमी को होने वाले प्रधान विवाह उत्सव के लगभग एक सप्ताह पूर्व ही से अर्थाभाव के कारण हमारे चरित्रनायक कुछ चिन्तित दीख पड़ते थे। श्री तिलक उत्सव के दिन प्रतःकाल नाम ध्वनि के बाद एक अपरिचित सेठ आये और उन्होंने श्री भरत लाल शरण जी पूछा कि श्री पुजारी जी महाराज कहाँ है। उन्हें हमारे चरित्रनायक से मिलाया गया, तब श्री सेठजी का परिचय पूछा गया। अपना परिचय देते हुये श्री सेठजी ने बतलाया कि मेरा नाम 'राम नरेश' है और मैं 'रामपुर' स्टेट में रहता हूँ। उन्होंने अपना परिचय देने के बाद हमारे चरित्रनायक से अनुरोध किया कि आपके द्वारा श्री राम विवाह कलेवा एवं भण्डारा उत्सव सम्पन्न कराने की मेरी उत्कट अभिलाषा है। आप के यहाँ श्री विवाह मंडप बना हुआ है। इसलिये यही स्थल श्री विवाह उत्सव के लिये उपयुक्त है। आप कृपा कर एक सूची तैयार कर दें, उसी के अनुसार सामान क्रय कर दिया जायेगा। सूची तैयार होने पर चीजों का दाम जोड़कर रुपये की उतनी राशि को श्री सेठजी ने हमारे चरित्रनायक को अर्पण कर दिया। कुछ सत्संग करने बाद श्री सेठजी ने श्री सरयू स्नान करने की आज्ञा माँगी। वे श्री सरयू स्नान कर वापस नहीं आये। उस साल श्री विवाह, कलेवा एवं भण्डारा उत्सव बड़े वृहत् पैमाने पर सम्पन्न किया गया, जिसमें अनेकानेक सन्तों के अतिरिक्त श्री अनन्त पंडित राम वल्लभाशरण जी भी पधारे थे। उक्त घटना की जानकारी किन्हीं के द्वारा उनके कानों तक पहुँची तो वे करुणा से भर गये और उन्होंने बिलखते हुए लोगों से कहा कि श्री विवहुती भवन में तो करुणामयी श्री किशोरी जी साक्षात् ही हैं। उनकी महिमा का कहना ही क्या है। शायद यह घटना श्री ठठेरा मन्दिर में ही घटित हुई।

(ख) थोड़े भोग के सामान में ही बहुत लोग पाये—एक साल हमारे चरित्रनायक जहानाबाद होते हुए आठों लीला स्वरूप, श्री शृंगारी जी, श्री भण्डारी जी, आदि सन्त महात्माओं

के साथ शाहपुर ग्राम पैदल जा रहे थे। आने के समय की सूचना स्थानीय शिष्यों को पूर्व में नहीं दी गयी थी। भोर का समय था। कुछ दूर जाने के बाद ग्राम का बाग एक मिला और वहीं पर एक जल कूप भी था। स्नान के बाद बालभोग की तैयारी की जाने लगी, पर पास में मात्र एक सेर चावल, एक पाव दाल तथा नमक मसाला आदि थे। उपर्युक्त सामग्री से बारह मूर्ति के बालभोग के लिये खिचड़ी बनायी जाने लगी और नाम ध्वनि भी चालू की गयी। उसी समय सन्तों की एक टोली अचानक दो घोड़ों के साथ आकर्षित होकर बाग की ओर मुड़ गयी। आगत सन्तों से हमारे चरित्रनायक ने सम्मान पूर्वक वार्तालाप किया और उनसे भी बालभोग कर लेने का आग्रह किया। सभी सन्त रुक गये और स्नान-पूजा के बाद पंगत में आ जुटे। अपने जमात के लोगों के चेहरे फीके पड़ गये और श्री भंडारी जी को धड़कन होने लगी कि इतने थोड़े भोग सामान में सभी लोग कैसे पायेंगे। लोगों की ऐसी अवस्था देखकर हमारे चरित्रनायक ने भोग लगाने और भंडार पवाने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली। आगत सन्तों के साथ अपनी जमात के लोगों को भी बैठा दिया गया। सभी लोगों ने भरपूर खिचड़ी प्रसाद पा लिया और खिचड़ी प्रसाद अब शेष भी रह गया। उसमें से हमारे चरित्रनायक ने भी बालभोग कर लिया। इसके बाद शाहपुर ग्राम पहुँचकर सभी निर्धारित कार्यक्रम सम्पन्न किये गये और वहाँ से श्री विवहुती भवन समाज फाल्गुन मास के प्रथम पक्ष में चम्पारण जिले के भावल स्थान के लिये चल पड़ा।

(ग) 'यथा संकल्प संसिद्धि एवं अज्ञा प्रति हतागति' (सिद्धियों) का दिग्दर्शन—भावल में आकर श्री नाम नवाह, विवाह, कलेवा आदि उत्सवों में पूर्व निर्धारित समय से कुछ अधिक समय लग गया। इस वर्ष श्री जनकपुर धाम की चौरासी कोशी परिक्रमा का संकल्प हमारे चरित्रनायक ने ले रखा था। अतएव, अधिक दिन भावल में रहने से परिक्रमा यात्रा में बाधा आ पड़ी। तो भी हमारे चरित्रनायक ने सारे समाज को भावल में छोड़, एकमात्र श्री भरतलाल शरण जी के साथ पंचपाकर, सीतामढ़ी होते हुए फाल्गुन शुक्ल सप्तमी की श्री जनकपुर धाम आ पहुँचे। परिक्रमा फाल्गुन शुक्ल द्वितीया को ही प्रारम्भ हो गयी थी। इस प्रकार आज तक परिक्रमा करने वाले लोग पाँचवाँ विश्राम स्थान पहुँच चुके थे। हमारे चरित्रनायक ने फाल्गुन शुक्ल सप्तमी के भोर से ही प्रस्थान कर बालक भरत लाल शरण जी के साथ लगभग चौदह मील की दूरी तै कर रात्रि में विश्राम किया। साथ में केवल सतुआ-चूड़ा था। उसी को भोग लगा कर प्रसाद पाया गया। रात्रि में सोने के समय, उन्होंने भरतलाल शरण जी को बहुत थका हुआ देखकर कहा कि तुम मेरे चरणों को पकड़कर सो जाओ, थकावट दूर हो जायेगी। उन्होंने वैसा ही किया और सो गये। प्रातःकाल जब श्री भरतलाल शरण जी की नींद टूटी तब उन्होंने श्री महाराज जी (हमारे चरित्रनायक) के साथ अपने को उसी स्थल पर पाया जहाँ परिक्रमा में आगे से चले हुए लोग पहुँच चुके थे। इस प्रकार लगभग साठ मील की दूरी बिना प्रयास के ही पूरी हो गयी। विस्मय भरे भावों से उन्होंने इस रहस्य को जानने की चेष्टा की, पर हमारे चरित्रनायक ने यह कहते हुए टाल दिया कि यह सब श्री किशोरी की महिमा है। उन्हें यह भी चेतावती दे दी गयी कि यदि इस घटना की चर्चा कहीं अन्यत्र तुम्हारे द्वारा की गयी तो तुम्हारा जीवन संकटमय हो जायेगा। लेखक के बहुत आग्रह पर श्री भरत लाल शरण जी ने रोते हुए घटना को लिखाया और कहा कि इसकी सत्यता में रंचमात्र भी आशंका किसी को नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार, शेष परिक्रमा अन्य लोगों के साथ ही सानन्द पूरी की गई। संभवतः यह घटना सन् १९४१ ई० की बतलायी जाती है। श्री जनकपुर से लौटकर भावल होते हुए समाज के साथ हमारे चरित्रनायक श्री अवध वापस आ गये।

(घ) एक ही समय पर दो स्थलों में हमारे चरित्रनायक की उपस्थिति—श्री राम नौमी

श्री युगल सरकार के श्री चरणों में, अनन्त श्री रामशंकरशरण जी